चौबीसी विभाग

।। तर्ज – एक रणके भंवर सु ।।

पेला रिखभनाथ जिणजी ने वान्दू,
दूजा अजित नाथ वादसा ।
एक इगान्या संभवनाथ जिणजी ने वान्दू,
चौथा अभिनन्दन वांदसा ।
एक पांचमा सुमतिनाथ जिणजी ने वादू,
छट्ठा पदमप्रभु वादसा ।
एक पूछत-पूछत नगर डडोल्यो साने गुरुणीसा री स्थानक किसो,
एक ऊची सी मेढी ने लाल दरवाजा,
जट्ठे मारा गुरणिसा विराजिया,
एक मारा गुरुणिसा झूठ नही बोले,
बोले वो शास्तर री वाणिया,
एक मारा गुरुणिसा आगण नही बैठे,
बैठै ओ ऊँचा पाठ पे ।
एक मार गुरणिसा मलमल नही पेरे,
पेरे वो खादी सुवावनी,
एक मारा गुरणिसा गोचरी लावे,
दोष वैयालिस टालने,
एक मारा गुरणिसा उतावला नही चाले,
चाले वो इर्या समिति देखने ।

-卐-

॥ तर्ज - जवन्तरी ॥

सातमा सुपार्श्व नाथ, जिनजी ने
वान्दुं मारा मारासा, आठमा चन्द्रप्रभु वान्दुसाजी ॥१॥
नवमा सुविधि नाथ, जिनजी ने,
वादु मारा मारासा, दसमा शीतलनाथ वादसाजी ॥२॥
इग्यारह्मा श्रेयास नाथ, जिनजी ने,
वान्दु मारा मारासा, वारमा बासपूज्य वादसांजी ॥३॥
मारे अगण, समकित केरो,
रूको मारा मारासा, स्थानक माये ज्ञानरो जी
फूलन लागो समकित केरो,
रूको मारा मारासा, पसरन लागो ज्ञानरो जी ॥४॥
दया रे धरमरो, चोपड रलावो मारा मारासा,
श्रावक-श्राविका खेलसीजी ॥५॥
रमिया-रमिया, मास दोय,
मासो मारा मारासा, कुण हारिया कुण जीतियाजी ॥६॥
हारयो-हारयो, श्रावकजी री, सातो मारा मारासा
गुणवता गुरुसा जीतियाजो, गुणावन्ता गुरण सा जीतियाजी॥७॥
सूतर मायला, चोका सूतर,
वाचो मारा मारासा, भगवती सूतर बाजियाजी ॥८॥
चोप्या मायली, चोकी चोप्यां,
वाचो मारा मारासा, श्रेणिक चरित्र वाचियाजी ॥९॥

।। तर्ज - एक रणके भंवर सु ।।

पेला रिखभनाथ जिणजी ने वान्दू,
दूजा अजित नाथ वांदसा ।
एक इगान्या संभवनाथ जिणजी ने वान्दू,
चौथा अभिनन्दन वादसा ।
एक पाचमा सुमतिनाथ जिणजी ने वादू,
छट्ठा पदमप्रभु वादसा ।
एक पूछत-पूछत नगर डडोल्यो साने गुरुणीसा रो स्थानक किसो,
एक ऊचो सो मेढी ने लाल दरवाजा,
जट्ठे मारा गुरणिसा विराजिया,
एक मारा गुरुणिसा झूठ नही बोले,
बोले वो शास्तर री वाणिया,
एक मारा गुरुणिसा आगण नही बैठे,
बैठे ओ ऊँचा पाठ पे ।
एक मारा गुरणिसा मलमल नही पेरे,
पेरे वो खादी सुवावनी,
एक मारा गुरणिसा गोचरी लावे,
दोष बैयालिस टालने,
एक मारा गुरणीसा उतावला नही चाले,
चाले वो इर्या समिति देखने ।

卐

।। तर्ज - जवन्तरी ।।

सातमा सुपार्श्व नाथ, जिनजी ने,
वान्दु मारा मारासा, आठमा चन्द्रप्रभ् वान्दुसाजी ।।१।।

नवमा सुविधि नाथ, जिनजी ने,
वादु मारा मारासा, दसमा शीतलनाथ वादसाजी ।।२।।

इग्यारहमा श्रेयास नाथ, जिनजी ने,
वान्दु मारा मारासा, वारमा वासपूज्य वादसाजी ।।३।।

मारे आगण, समाकित केरो,
रूको मारा मारासा, स्थानक माये ज्ञानरो जी ।।४।।

दया रे धरमरी, चोपड रलावो मारा मारासा,
श्रावक-श्राविका खेलसोजी ।।५।।

रमिया-रमिया, मास दोय,
मासो मारा मारासा, कुण हारिया कुण जीतियाजी ।।६।।

हारयो-हारयो, श्रावकजी रो, सातो मारा मारासा,
गुणवता गुरुसा जीतियाजी, गुणावन्ता गुरणीसा जीतियाजी ।।७।।

सूतर मायला, चोका मूतर,
वाचो मारा मारासा, भगवती सूतर वाजियाजी ।।८।।

चोप्या मायली, चोकी चोप्या,
वाचो मारा मारासा, श्रेणिक चरित्र वाचियांजी ।।९।।

॥ तर्ज - झाला ॥

तेरमा विमलनाथ वांदसा जिवो राज मारासा,

चौदमा अनन्तीनाथ देव ।

पन्द्रहमा धर्मिनाथ वान्दसा जिवो राज मारासा,

सोलहमा शान्तिनाथ देव ।

सतरवा कुन्थुनाथ वान्दसा जिवो राज मारासा,

अठारहवा अरहनाथ देवक सूतर वाचलो जिवो राज मारासा,

सुनसा चित लगाय ॥

डूगर ऊपर डूगरी जिवो राज मारासा,

मोनो घडे सुनार ॥

गडीजे नेमजीरी मूदडो जिवो राज मारासा

राजुल रो नवसार हारक

सूतर वाचलो जिवो राज मारासा, सुनसा चित लगाय ॥१॥

धोलो घोडो हीसतो जिवो राज मारासा,

लाला जडी लगाम ॥

चढो-चढो सब कोई केवे, जिओ राज मारासा

चढ गया नेमकुमारक

सूतर वांचलो जिवो राज मारासा,

सुनसा चित्त लगाय ॥२॥

चौसठ सूरज ऊगियो जिवो राज मारासा

चांदा लाख करोड़ ॥

तोई अधारो नही मिटे जिवो राज मारासा

गुरु विन घोर अधार

सूतर वांचलो जिवो राज मारासा,

सुनसां चित लगाय ॥३॥

सुमती बैठको हाथ में जिवो राज मारासा,

चाली स्थानक माय ॥

सामा मिलिया गुरणीसा जिओ राज मारासा,

रोम-रोम हरसायक

सूतर वाचलो जिवो राज मारासा,

सुनसां चित्त लगाय ॥४॥

नेमजी तोरण आविया जिवो राज मारासा

पशुवारी सुनी पुकार ।

तोरण से पाछा फिरिया जीवो राज मारासा

चढ गया गढ गिरनारक

सूतर वाचलो जिवोराज मारासा,

सुनसा चित्त लगाय ॥५॥

卐

(तर्ज : थारी चूंदड़ चौगट क्यों रे हुई)

जिनजी पेला रिखभनाथ वादसाजी
जिनजी दूजा अजितनाथ वादसाजी
जिनजी तीजा सभवनाथ वादसाजी
जिनजी चौथा अभिनन्दन वादसाजी
जिनजी पांचमा सुमतिनाथ वादसाजी
जिनजी छट्ठा पदमप्रभु वांदसाजी

गौतम स्वामी पूछे वीरजी ने,
थानी मुगत्यारी सेला किम कर हुई,
जीवन ज्योति ने तप मे तपावतडा,
जीवन ज्योति ने जप मे जपावतडा,
मारी मुगत्यारी सेला इम कर हुई ॥१॥

गौतम स्वामी पूछे वीरजी ने,
आपरा अष्ट करम नष्ट किमकर हुआ ।
साढे बारा वरस तक तपस्या करी,
गोदु आसन ऊपर केवल वरी ।
मारा अष्ठ करम नष्ट इम कर हुआ ॥२॥

सुधर्मा स्वामी पूछे गौतम स्वामीजी ने,
थाने लब्धियाँ मोटी किम कर हुई ।
गुरु वीरजी रा गुण गावतडा ।
विनय करी ने शीश झुकावतडा ।
माने लब्धियाँ मोटी इम कर हुई ॥३॥

जंम्बु स्वामी पूछे सुधर्मा स्वामीजी ने ।
थाने वीरजी रो पाठ किम कर मिलियो ।

नव गणधर मोक्ष सिधावतडा, गौतम स्वामी केवल पावतडा,
माने वीरजी रो पाट इम कर मिलियो ॥४॥

भद्रा माता पूछे जम्बु स्वामीजी ने,
थाने वैराग्य रग किम कर चढयो ।

पूर्व भवरी पुण्य जगावतडा, नबकार नो प्रभाव देखावतडा ।
माने वैराग्य रग इम कर चढयो ॥५॥

भवी जीव पूछे गुरणीसा ने,
मारी मुगत्यारी सेला किम कर होसी ।
सच्चा देव गुरु धर्म धारवतडा,
खोटा देव गुरु धर्म छोडावतडा ।
थारी मुगत्यांरी सेला इम कर होसी ॥६॥

(तर्ज : कटा सुं आई सूंठ, कटा सुं आयो जीरो)

पहला रिखभनाथ वान्दुं जिनराज,
दूजा अजितनाथ दीन दयाल ।
तीजा सभवनाथ वान्दू जिनराज,
चौथा अभिनन्दन दीन दयाल ।
पांचमा सुमतिनाथ वान्दुँ जिनराज,
छट्ठा पदम प्रभु दीन दयाल ॥

कटासु आया मोतीडा, कटासु आई लाल ।
कटासु आया जी मारा गुरणीसा महाराज ॥ १ ॥
समुद्र से आया मोतीडो, पृथ्वी से आई लाल ।
बेगलोर से आया जी मारा गुरणीसा माराज ॥ २ ॥
केमे आवे मोतीडा ने, केमे आवे लाल ।
केमे आया जो मारासा गुरणीसा माराज ॥ ३ ॥
डब्बा में आवे मोतीडा, पारसल से आवे लाल ।
पैदल आवे जो मारा गुरणीसा माराज ॥ ४ ॥
कठे उतरे मोतीडा ने, कटे उतरे लाल ।
कटे उतरे जी मारा गुरणीसा माराज ॥ ५ ॥
बाजारा उतरे मोतीडा, दुकाना उतरे लाल ।
स्थानक मे उतरे जी मारा गुरणीसा माराज ॥ ६ ॥
कूण लेवे मोतीडा ने, कुण लेवे लाल ।
कुण वन्दे जी मारा गुरणीसा माराज ॥ ७ ॥
राजा लेवे मोतीडा ने, प्रधान लेवे लाल ।
श्रावक वन्दे जी मारा गुरणीसा माराज ॥ ८ ॥

(तर्ज : साचा मोतियांरो मण्डवो छावजो)

पेला रिखभनाथ वादसा, दूजा अजितनाथ देव ।
इगनिया सभवनाथ वादसा, चौथा अभिनन्दन देव ।
पाचमा सुमतिनाथ वादसा, छट्ठा पदमप्रभु देव ।
बैठी थी राय रसोवडे, जोवु मारा गुरणी री वाट ।
इतरे गुरणी सा पधारिया, ज्ञान घोडे असवार ।
कोई रे बेरावे खाजा लापसी, कोई एक मोदक रा थाल ।
धन मारा गुरुसा री माय ने, बेई बेरायो लाडन पूत ।
धन मारा गुरुणीसा री मायने, वेई बेरायी सुगणी दीव ।
दोष बैयालीस टालने, लेवे सूझतो आहार ।
पूज–पूजने पगल्या धरे, चाले खाण्डारी धार ।
वेई गुरुसा मारे दिल वसे, छे काया रा प्रतिपाल ।

।। तर्ज - राती माला पेरो जडाव री रे लाल ।।

ये तो पेला रिखभनाथ वांदुसा रे लाल ।
ये तो दूजा अजितनाथ दीन दयाल ।
थे तो माला फेरो नवकार री रे लाल ।।१।।

ये तो तीजा सभवनाथ वांदसा रे लाल,
ये तो चौथा अभिनन्दन दीन दयाल,
थे तो माला फैरो नवकार री रे लाल ।।२।।

ये तो पाचमा सुमतिनाथ वांदसां रे लाल,
ये तो छट्टा पदम प्रभु दीन दयाल,
थे तो माला फेरो नवकार री रे लाल ।।३।।

पाट जडाऊं पाटियो रे लाल,
ये तो ज्ञान री फुलडी दिराय ओ लाल,
थे तो माला फेरो नवकार री रे लाल ।।४।।

ये तो ऊपर रालू वांसठियो रे लाल,
ये तो जिनपर गुरुसा विराज्या ओ लाल,
थे तो माला फेरो नवकार री रे लाल ।।५।।

मुखडे विराजे मुपत्ति रे लाल,
ये तो डोरो धोला सफेद ओ लाल,
थे तो माला फेरो नवकार री रे लाल ।।६।।

ये तो हरिया सो पुट्ठो हाथ में रे लाल,
ये तो बाचे भगवती रा भाव ओ लाल,
थे तो माला फे रो नवकार री रे लाल ॥७॥

ये तो भाया तो वाणी झेलसी रे लाल,
ये तो बाया रे आनन्द उछाव ओ लाल,
थे तो माला फेरो नवकार री रे लाल ॥८॥

सेर सोना रो घघरो रे लाल,
ये तो रणके माझल रात ओ लाल,
थे तो माला फेरो नवकार री रे लाल ॥९॥

ये तो बिना रणके श्रावक जागियो रे लाल,
ये तो चौमासा रो कियो रे विचार ओ लाल,
थे तो माला फेरो नवकार री रे लाल ॥१०॥

ये तो चार अगुल रो ओलियारे लाल
ये तो विनन्तिया लिखी रे हजार ओ लाल,
थे तो माला फेरो नवकार री रे लाल ॥११॥

ये तो येवड-चेवड विनन्तियां रे लाल,
ये तो अध-बिच वन्दना हजार ओ लाल,
थे तो माला फेरो नवकार री रे लाल ॥१२॥

।। तर्ज - सुनुंगी मैं तो, शास्त्र की वाणी सुनुंगी ।।

सातमा सुपार्श्व नाथ जिनजी ने वान्दुं,
आठमा चन्द्राप्रभु देवो वांदुजी मैं तो,
शास्त्र की वाणी सुनुगी, सुनुगी मै तो ।।१।।

नवमा सुविधिनाथ जिनजी ने वांदू,
दसमा शीतलनाथ देवो वान्दुजी मैं तो,
शास्त्र की वाणी सुनुगी, सुनुगी मैं तो ।।२।।

इग्यारहवा श्रेयासनाथ जिनजी ने वान्दु,
वारमा वासपूज्य देवो वान्दुजो मै तो,
शास्त्र की वाणी सुनुगी, सुनुगी मैं तो ।।३।।

जव मारा गुरणीसा चन्द्रा बनकर आयेगे,
तारो मे जाय छिपुगी, छिपुगी मै तो ।।
शास्त्र को वाणी सुनुगी, सुनुगी मै तो ।।४।।

जव मारा गुरणीसा, सूरज वनकर आयेगे,
किरणों मे जाय छिपुगी, छिपुगी मै तो।
शास्त्र की वाणी सुनुगी, सुनुगी मै तो ।।५।।

जव मारा गुरणीसा आंगण मे आयेगे,
चरणों में जाय झुकुगी, झुकुंगी मै तो,
शास्त्र की वाणी सुनुंगी, सुनुंगी मै तो ।।६।।

जब मारा गुरणीसा पाट विराजेंगे,
समकित शुद्ध करूगी करूगी मैं तो ।
शास्त्री की वाणी सुनुगी, सुनुगी मै तो

जब मारा गुरणीसा व्याख्यान फरमायेंगे,
अष्ठ कर्मो से लड़ूगी, लड़ूगी मै तो ।
शास्त्र की बाणी सुनुगी, सुनुगी मै तो

卐

।। तर्ज - महावीर स्वामीजी

तेरहवा विमलनाथ जिनजी ने वान्दुं,
चौदमा अनन्तनाथ देव। महावीर स्वमीजी ।।१।।

पन्द्राहमा धर्मीनाथ जिनजी ने वान्दु,
सोलहवा शान्तिनाथ देव। महावीर स्वामीजी ।।२।।

सतरमा कुन्थुनाथ जिनजी ने वान्दु,
अठाहवां अरहनाथ देव। महावीर स्वामीजी ।।३।।

अदीतवार को आयम्बिल करती,
सोमवार की मून, महावीर स्वामीजी ।।४।।

शुक्ल पक्ष की चौदस करती,
अमावाश्य अगली बीज, महावीर स्वमीजी ।।५।।

इग्यारस एकादसी करती,
बारस मगलवार, महावीर स्वामीजी ।।६।।

इतना तो व्रत नियम करती,
जद मिलिया गुरणीसा आप, महावीर स्वामीजी ।।७।।

।। तर्ज - सैया ए माने निरखन दो सूरत ।।

उनीसमा मल्लीनाथ वान्दू ये, बीसमां मुनिसुव्रत देवो ये,
सैया ये माने निरखन दो सूरत प्टारी ।।१।।

इकीसमा नेमीनाथ वान्दू ये, बाईसमा रिष्टनेर्मा देवो ये,
सैया ये माने निरखन दो सूरत प्यारी ।।२।।

तेईसमा पारसनाथ वान्दू ये, चौबीसमा महावीर स्वमी देवो ये,
सैया ये माने निरखन दो सूरत प्यारी ।।३।।

आगी होय जावो ए, आडी मत आवो ए,
सत गुरुसा उपकारी ए, महासतिया उपकारी ए,
वाल ब्रह्मचारी ए, सूरत मोवनगारी ए,
बोली प्यारी लागे ए, चाली सुवावे ए,
मैय्याए माने निरखन दो सूरत प्यारी ।।४।।

॥ तर्ज - ऐसा खेलजो रे फाग सदा सुख पावो ॥

पेला रिखभनाथ जिनजी ने वान्दु,
दूजा अजितनाथ देवो मारासा।
मती रचो रे, मती गचो रे,
ससार स्वपना री माया, मती रचो रे ॥१॥

तीजा सभवनाथ जिनजी ने वान्दूं,
चौथा अभिनन्दन देवो मारासा।
मती रचो रे, मती रचो रे,
ससार सपनारी माया, मती रचो रे ॥२॥

पाचमा सुमतिनाथ जिनजी ने वान्दू,
छट्टा पदमप्रभु देवो मारासा।
मती रचो रे, मती रचो रे
ससार सपनारी माया, मती रचो रे ॥३॥

हाडका रो पिजरो ने, चामडा सु जडियो,
कुभ कलश जैसी काची काया।
मती रचो रे, मती रचो रे
ससार सपरिवार माया, मती रचो रे ॥४॥

काची काया ने, काची माया,
साचो जानो ने क्यूं विलमाया,
मती रचो रे, मती रचो रे
संमार सपनारी माया, मती रचो रे ॥५॥

।। तर्ज - सती जाम्बुवती, सती जाम्बुवती।।

सातमा सुपार्श्वनाथ वान्दु जिनराज,
आठमा चन्दाप्रभु मोत्यारी माल ।।१।।

नवमा सुविधिनाथ वान्दु जिनराज,
दसमा शीतलनाथ मोत्यारी माल ।।२।।

इग्यारहवा श्रेयासनाथ वान्दु जिनराज,
बारमा वासपूज्य मोत्यारी माल ।।३।।

देव घणा लाखा दुनिया रे मांय,
वे तो गुरुसा मारे, नही आवे दाय ।।४।।

आप तिरे भवि जीवा ने तार,
था सु गुरुसा मैं तो उतरूली पार ।।५।।

।। तर्ज - केशरिया रे जय बोलो ।।

जिनजी तेरहवां विमलनाथ वान्दसा,

जिनजी चौदहवां अनन्तनाथ देव ।

जिनजी पन्द्रहमा धर्मीनाथ वान्दसा,

जिनजी सोलवा शान्तिनाथ देव।

जिनजी सतरवा कुन्थुनाथ वान्दसां,

जिनजी अठारहवा अरहनाथ देव ।

मारे घर मे अधारो दीपक बिना।

मारे आगण में अधारो चाद बिना ।

मारे स्थानक में अधारो गुरणीसा विना ।।१।।

मारे घट मे अधारो ज्ञान विना।

मती जावो रे चेला परदेश, गुरुसारे हुकम बिना।

मती जावो ए चेलया परदेश, गुरणीसा रे हुकम बिना ।।२।।

卐

।। तर्ज - उठो मारा बावड करो नी अठाई ।।

उन्नीसमा मल्लीनाथ, बीसमा मुनिसुव्रत,
इक्कसमा नेमीनाथ वान्दु ओ मारासा,
गुरुसा रे गादी ऊपर नौपद बाजे ।।१।।

बाईसमा रिष्ठनेमी, तेइसमा पारसनाथ,
चौवीसमा महावीर स्वामी बान्दु ओ मारासा
गुरुसा रे गादी ऊपर नौपद बाजे ।।२।।

नौपद बाजे इन्दर गढ गाजे,
तो झिणी-झिणी झलर बाजे ओ मारासा
गुरणीसा रे गादी ऊपर नौ पद बाजे ।।३।।

इन्द्र भी आवे, इन्द्रणिया भी आवे ।
देवी भी आवे ने देवता भी आवे ।
तो हिल-मिल मगल गावे ओ मारासा,
गुरणीसा रे गादी ऊपर नौपद बाजे ।।४।।

卐

॥ तर्ज - दिल जिनन्द गिरनारियाँ _ ॥

सजम तो मेरे, मन सजम तो मेरे,

दिल जिनद गिरनारिया ॥टेर॥

फ्हुला रिखबनाथ वादसा,

ओ सखिया दूजा अजितनाथ देवो _

नेमजी तो तोरण आविया,

ओ साखियां पशुवारी सुनो रे पुकारो _

नेमजी तो तोरण आविया,

ओ सखियां पशुवारी सुनी रे पुकार _

नेमजी तो रथ पाछा फेरिया,

ओ सखिया आयो है दया रो विचार _

तीजा सम्भवनाथ वादसा,

ओ सखिया चौथा अभिनन्दन देवो _

आडा तो फिरने साला पूछियो,

अहो बेनोसा तोरण से रथ किम् फेरो _

पाछो तो फिरने नेमजी बोलिया,

अहो साला तुम घर कांई रो आचार _

पाचमा सुमतिनाथ वादसा,

ओ सखिया छट्ठा पदमप्रभु देवो _

दोय सीरा ने तीजी लापसी,

अहो वेनोया चोथो है पशुवारो भातो _

राजुल सखिया ने पूछियो,

अहो सखियां तोरण पर बेदो किम ठायो

सातमा सुपार्श्वनाथ वान्दसा,

ओ सखियां आठमा चन्दाप्रभु देवो—

कडिया कटारि ने वाकडो,

ओ सखिया काट्यो है पशुवांरी डोर—

खल खावोने पानी पिओ,

ओ पशुओ वन माहि करे रे किल्लोल—

नवमा सुविधि नाथ वादसा,

ओ सखिया दसमा शीतलनाथ देवो—

गगन उडन्ता पक्षी इमकेवे,

अरे जादु जीवोनी करोड वर्ष—

कण काकण सब खोलिया,

ओ सखिया मोर मुकठ दीना मेल—

इग्यारमा श्रेयांस वादसा,

ओ सखिया बारमा वासपूज्य देवो—

नेमजी तो सजम आदर्या,

ओ सखिया सहस्त्र पुरुषारों परिवार—

लो माता भूषण तेरा,

अहो माता पिउ लारे गायो रे श्रुगार—

तेरहमा विमलनाथ वादसा,

ओ सखिया चौदवा अनंतनाथ देवो—

माता तौ राजुल ने समझाविया,

अहो राजुल ढूढूला सुघड भरतार—

पन्द्रहवां धर्मीनाथ वांदसा,

ओ सखियां सोलमा शान्ति नाथ देवो—

नेमजी तो काला ने कावरा,

अहो सखिया ढूढूला सुघड भरतार—

वर तो माताजी नेमजी होयगया,

अहो माता दूजा रा किया पच्चरवान—

राजुल तो सजम आदरया,

ओ सखिया सहस्र सतियारो परिवार—

सतरमा कुन्थुनाथ वादसा,

ओ सखिया अठारहमा अरहनाथ देवो—

नेमजीने वदन राजुल नीसरया,

अहो राजुल सहस्र सतियारो परिवार—

विरखा तो आई अति धूम सु,

ओ सखिया, भीग्या है सगला ही चीर—

उन्नीसमा मल्लीनाथ वांदसा,

बीसमा मुनिसुव्रत देवो—

घेर गुफा माय जाय ने,

ओ सखिया दीना है चीर सुखाय—

रथनेमी ध्यान धरता थकां,

ओ सखिया दीठो है राजुल रो रूप—

इक्कीसमा नमिनाथ वान्दसा,

ओ सखिया बाईसमा रिष्ठनेमी देवो—

रूप देखिने ऋषि छल गया,

ओ सखिया मन माये करे रे विचार—

ध्यान पाली ने ऋषि बोलिया,

ओ सखिया तुम-हम एक विचार—

तेईसमा पारसनाथ वांदसा,

ओ सखियाँ चौवीसमा महावीर स्वामी देवो—

रथनेमी ने समझाविया,

ओ सखिया लायो है धर्म केरो ठाम—

नेमजी ने राजुल सजम पालने,

ओ सखिया पहुँच्या है मोक्ष मझार—

दान-सियल-तप-भावना,

ओ सखिया शिवपुर मारग चार—

पालो आराधो शुद्ध भावसु,

ओ सखिया ज्यू उतरोला भवपार—

॥ तर्ज - वीरा मारा गज थकी ऊतरो ॥

पेला रिखभनाथ वान्दसा, दूजा अजितनाथ देव,

ओ किसनजी, थाना वीरा मुगत्यां में झिल रया।

जिल रयाजी, विलम रया, रानी राजल रा भरतार

ओ किसनजी, थाना वीरा मुगत्या में जिल रया॥

नोट-इसी प्रकार २४ तीर्थंकरों का नाम लेना।

॥ चौमासी री चौवीसी ॥

॥ तर्ज - बाई मारे आंगण मंगलाचार ॥

पेला रिखबनाथ जिनजी ने वादू, दूजा अजितनाथ देव।
बाई मारे आगन मगलाचार ॥टेर॥

तीजा सभवनाथ जिनजी ने वादू, चौथा अभिनन्दन देव।
बाई मारे आगन मंगलाचार ॥१॥

पाचमा सुमतिनाथ जिनजी ने वादु, छट्ठा पदम प्रभु देव।
बाई मारे आगन मगलाचार ॥२॥

सूरिया गाय रो गोबरिया मगाय देऊ, आगन गार गलाय।
बाई मारे आगन मगलाचार ॥३॥

सज मोतिडा रो चौक पुराय देऊ, कुभ कलश लेने आय।
बाई मारे आंगन मंगलाचार ॥४॥

वनिता नगरी रो जोसिडो बुलाय देऊ, कवरसारो नाम दिराय।
बाई मारे अ'गन मगलाचार ॥५॥

कवरसा रो नाम श्री ऋषभ जिनेश्वर धर्म दिपावान देव।
बाई मारे आगन मगलाचार ॥६॥

हस्तिनापुर रो जोसिडो बुलाय देऊ, कॅवरसा रो नाम दिराय।
बाई मारे आगन मगलाचार ॥७॥

कँवरसा रो नाम श्री शान्तिजिनेश्वर, साता वरतावन देव।
वाई मारे आगण मगलाचार ॥८॥
शोरीयापुर रो जोसिडो ब्रुलाय देऊ, कँवरसा रो नाम दिराय।
वाई मारे आगण मगलाचार ॥९॥
कँवरसा रो नाम श्री नेमजिनेश्वर पशुये छुडावन देव।
वाई मारे आंगण मगलाचार ॥१०॥
वणारसी नगरी रो जोसिडो बुलाय देऊ,
कवरसा रो नाम दिराय।
वाई मारे आगन मंगलाचार ॥११॥
कवरसा रो नाम श्री पार्श्वजिनेश्वर, कमठ हटावन देव।
बाई मारे आगन मंगलाचार ॥१२॥
कुण्डलपुर नगरी रो जोसिडो बुलाय देऊ,
कवरसा रो नाम दिराय,
वाई मारे आंगन मगलाचार ॥१३॥
कवरसा रो नाम श्री महावीर स्वामी मेरू क पावन देव।
वाई मारे आगन मंगलाचार ॥१४॥
गोवर ग्राम रो जोसिडो बुलाय देऊ, कवरसा रो नाम दिराय।
वाई मारे आगन मगलाचार ॥१५॥
कँवरसा रो नाम श्री गौतम स्वामी, परसन पूछया देव।
वाई मारे आगन मगलाचार ॥१६॥
भोपाल शाहररो जोसिडो बुलाय देऊ,
गुरुसा रो नाम दिराय।
वाई मारे आगण मगलाचार ॥१७॥

॥ तर्ज - वधावो मारे आवियो ॥

तेरहवा विमलनाथ वादसा,

चौदहमा अनतनाथ देवो वधावो मारे आवियो —

पन्द्रहमा धर्मीनाथ वान्दसा,

सोलमा शान्तिनाथ देवो, वधावो मारे आवियो —

सतरहमा कुन्थुनाथ वादसा,

अठारहमा अरहनाथ देवो वधावो मारे आवियो —

केवलज्ञान किनाजी ने ऊपन्यो,

वो ज्ञान कीनाजी रे कठे, वधावो मारे आवियो —

केवलज्ञान ऋृषभदेवजी ने ऊपन्यो,

केवलज्ञान नेमीनाथजी ने ऊपन्यो,

केवलज्ञान पारसनाथजी ने ऊपन्यो,

केवलज्ञान महावीर स्वामीजी ने ऊपन्यो,

केवलज्ञान सब तीर्थकरा ने ऊपन्यो,

वो ज्ञान गौतम स्वामीजी रे कठे, वधावो मारे आवियो —

वो ज्ञान जम्वु स्वामीजी रे कठे,

वो ज्ञान अमोलक ऋषिजी मारासा रे कठे,

वो ज्ञान आनन्दऋषिजी मारासा रे कठे,

वो ज्ञान कल्याणऋषिजी मारासा रे कठे,

वो ज्ञान गुरणीसा रे कठे, वधावो मारे आवियो —

भाग्य भलाजी मारा गुरुसा रा,

भाग्य भलाजी मारा गुरणीसा रा,

अठे हुआ चौमासा रा ठाठ,

अठे हुआ दया-पोसा रा ठाठ ।

वधावो मारे आवियो—

।। तर्ज - मोतीयांरा लॉम्बक झूमको ।।

उन्नीसमा मल्लीनाथ वादसा, बीसका मुनिसुव्रत वादसा,
इक्कीसमा वन्दु ओ नेमीनाथ देवो,
बधावो जी मारे आवियो ।।१।।

बाईसमा रिष्ठनेमी वादसा, तेईसमा पार्श्वनाथ वादसा,
चोवीसमा वन्दु ओ महावीर स्वामी देवो
बधावो जी मारे आवियो ।।२।।

ज्ञानरा लाम्बक झूम्बका, तपस्यारी ओ प्रभु वान्दरवाळ,
वधावो जी मारे आवियो ।।३।।

वाधो नाभिराजाजी रे ओवरे,
बाधो विश्वसेन राजाजी रे ओवरे,
बाधो समुद्र विजयजी रे ओवेरे,
बाधो अश्वसेन राजाजी रे ओवेरे,
बाधो सिद्धारथ राजाजी ओवेरे,
वारी राण्या ओ प्रभु जाया है पूत,
वधावो जी मारे आवियो ।।४।।

जाया रा हरक वधावना सजम रा ओ प्रभु लाड न कोड ।
बधावो जी मारे आवियो ।।५।।

卐

॥ तर्ज - ऊंची-ऊंछी मेडियां शोभंती ॥

ऊची-ऊची मेडिया शोभती वधाओ जी,
काई दिवला रो उद्योत के राज वधाओ जी ॥१॥
हिगलु तो डोलयो ढल रह्यो वधावो जी,
काई कोमल विछाई है, सेज के राज वधावो जी ॥२॥
जठे माता त्रिशलादेवी पोढिया वधाओ जी,
काई सपना लिया दस चार के राज वधाओजी ॥३॥
पहला गयवर देखिया वधाओ जी,
काई दीठा हे राज दरबार के राज वधाओ जी ॥४॥
दूजे रिषभ सुलक्षणो वधाओ जी,
काई दीठा है गाय-गवाल के राज वधाओ जी ॥५॥
तीजे सिह सुलक्षणो वधाओ जी,
काई वन माये करे रे किलोल के राज वधाआ जी ॥६॥
चौथे लक्ष्मी देवता वधाओ जी,
काई सदा रे सवागण नार के राज वधाओ जी ॥७॥
पाचमी माला मलकती वधाओ जी,
पांच वरण रा फूल के राज वधाओ जी ॥८॥
छट्टे चन्द्र अमी जरे वधाओ जी,
कांई सहस्त्र तारा के माये के राज वधाओ जी ॥९॥

॥ तर्ज - मोतीयांरा लॉम्बक झूमको ॥

उन्नीसमा मल्लीनाथ वादसा, बीसका मुनिसुव्रत वादसा,
इक्कीसमा वन्दु ओ नेमीनाथ देवा,
वधावो जी मारे आवियो ॥१॥

बाईसमा रिष्ठनेमी वादसा, तेईसमा पार्श्वनाथ वांदसा,
चोवीसमा वन्दु ओ महावीर स्वामी देवो
वधावो जी मारे आवियो ॥२॥

ज्ञानरा लाम्बक झूम्बका, तपस्यारी ओ प्रभु वान्दरवाल,
वधावो जी मारे आवियो ॥३॥

वाधो नाभिराजाजी रे ओवरे,
बाधो विश्वसेन राजाजी रे ओवरे,
बाधो समुद्र विजयजी रे ओवेरे,
वाधो अश्वसेन राजाजी रे ओवेरे,
बाधो सिद्धारथ राजाजी ओवेरे,
वारी राण्या ओ प्रभु जाया है पूत,
वधावो जी मारे आवियो ॥४॥

जाया रा हरक वधावना सजम रा ओ प्रभु लाड न कोड।
वधावो जी मारे आवियो ॥५॥

卐

॥ तर्ज - ऊंची-ऊंछी मेडियां शोभंती ॥

ऊची-ऊची मेडिया शोभती वधाओ जी,
काई दिवला रो उद्योत के राज बधाओ जी ॥१॥
हिगलु तो डोलयो डल रह्यो बधावो जी,
काई कोमल विछाई है, सेज के राज वधावो जी ॥२॥
जठे माता त्रिशलादेवी पोढिया वधाओ जी,
काई सपना लिया दस चार के राज वधाओजी ॥६॥
पहला गयवर देखिया बधाओ जी,
काई दीठा है राज दरबार के राज बधाओ जी ॥४॥
दूजे रिषभ सुलक्षणो बधाओ जी,
काई दीठा है गाय-गवाल के राज वधाओ जी ॥५॥
तीजे सिह सुलक्षणो वधाओ जो,
काई वन माये करे रे किलोल के राज वधाओ जी ॥६॥
चौथे लक्ष्मी देवता बधाओ जो,
काई सदा रे सवागण नार के राज वधाओ जी ॥७॥
पाचमी माला मलकती वधाओ जी,
पाच वरण रा फूल के राज वधाओ जी ॥८॥
छट्टे चन्द्र अमी जरे वधाओ जी,
काई सहस्र तारा के माये के राज वधाओ जी ॥९॥

सातमो सूरज ऊगियो वधाओ जी,
काई सहस्र किरणा रा राय के राज वधाओ जी ॥१०॥
आठमी ध्वजा फरकती वधाओ जी,
कांई सदा रे धरम की लेर के राज वधाओ जी ॥११॥
नवमो कसश रत्नां जडियो वधाओ जी,
काई उदक भरयो तिण माये के राज वधाओ जी ॥१२॥
पदम सरोवर दसमा वधाओ जी,
कांई कमल भरयो तिण माय के राज वधाओ जी ॥१३॥
क्षीर समुदर इग्यारहमा वधाओ जी,
काई क्षीर को जैसो नीर के राज वधाओ जी ॥१४॥
देव विमान बारमा वधाओ जी,
काई रुणझुण घटा वाजे के राज वधाओ जी ॥१५॥
रत्ना री राशि तेरमां वधाओ जी,
कांई रत्नां सु भरया रे भण्डार के राज वधाओ जी ॥१६॥
अगनी दीठा स्वामी चौदमा वधाओ जी,
काई झाल जपती लेर के राज वधाओ जी ॥१७॥
चौदे तो सपना रानी देखिया वधाओ जी,
काई गया राजजी रे पास के राज वधाओ जी ॥१८॥
भद्रासन आसन दीनो वधाओ जी,
काई दियो घणों सन्मान के राज वधाओ जी ॥१९॥
तीर्थंकर, चक्रवर्ती जनमसी वधाओ जी,
काई तीन भवन रा नाथ के राज वधाओ जी ॥२०॥

चैत्र सुदी तेरस ने जनमिया बधाओ जी,
काई छप्पन कुमारिया मगल गाय के राज वधाओ जी ॥२१॥

चौसठ इन्द्र मिल आविया वधाओ जी,
काई मेरू शिखर न्यवराय के राज वधाओ जी ॥२२॥

महावीर नाम स्थापन कीनो वधाओ जी,
काई मेल्या माताजी रे पास के राज वधाओजी ॥२३॥

तीस वरस घर मे रह्या बधाओ जी,
काई पछे लोनो सजम भार के राज बधाओ जी ॥२४॥

साढे बारह वरष तप कीनो बधाओ जी
काई शासन रा सिरदार के राज बधाओ जी, ॥२५॥

कार्तिक वद अमावाश्य बधाओ जी,
काई वीर पहुँच्या निर्वाण के राज बधाओ जी, ॥२६॥

गावतडा सुख ऊपजे बधाओ जी,
कांई सुणियांरो परम कल्याण के राज बधाओ जी ॥२७॥

थे तो गावोनी मगलाचार के राज वधाओ जी,
काई होसी जय-जयकार के राज बधाओ जी ॥२८॥

॥ पक्खी री चौवीसी ॥

॥ तर्ज - मारे पक्खी ये बधावनाजी ॥

पेला रिखबनाथ वान्दसाजी,
जिनछी दूजा अजितनाथ देव,
मारे पक्खिये बधावणाजी ॥

तीजा सभवनाथ वान्दसाजी,
जिनजी चौथा अभिनन्दन स्वामी देव,
मारे पक्खिये बधावणाजी ॥

पाचमा सुमतिनाथ वान्दसाजी,
जिनजी छठ्ठा पदम प्रभु देव,
मारे पक्खिये बधावणाजी ॥

जिवजी ऊचले स्थानक मारासा पेढियाजी,
वारा चेला जाय जगाय,
मारे पक्खिमे बधावणाजी ॥१॥

जिनजी सूतर थोडा ने,
चोपियां घणीजी मारे गुरुसा ने सूतर रो कोड,
मारे पक्खिये बधावणाजी ॥२॥

जिनजी सूतर थोडाने चोपिया घणीजी
मारा गुरणीसा ने चोपियां रो कोड,
मारे पक्खिये बधावणाजी ॥३॥

जिनजी शेर थोडा ने खेडा घणाजी,
मारे गुरुसा ने शेरां रो कोड,
मारे पक्खिये बधावणाजी ॥४॥

जिनजी शेर थोडा ने खेडा घणाजी,
मारे गुरणीसाने खेडा रो कोड,
मारे पक्खिये बधावणाजी ॥५॥

जिणजी भायां थोडा ने बाया घणीजी,
मारे गुरुसा ने भाया रो कोड,
मारे पक्खिये बधावणाजी ॥६॥

जिणजी भाया थोडा ने बाया घणीजी,
मारे गुरणीसा ने बायां रो कोड,
मारे पक्खिए बधावणाजी ॥७॥

।। तर्ज - बागां में मालन निसरी ।।

सातमा सुपार्श्व जिनजी ने वाद,

काई आठमा चदाप्रभु वादसाजी जिनराज ।।

नवमा सुविधिनाथ जिनजी ने वाद,

काई दसमा शीतलनाथ वादसाजी जिनराज ।।

इग्यारहमा श्रेयास जिनजी ने वाद,

काई वारमा वासपूज्य वादसाजी जिनराज ।।

आज शहर मे सुणी अनोखी वात,

सुणी नवेली वात, पक्खी रा टीकण मे सुण्याजी जिनराज ।।१।

टीपन वाचे आनन्द ऋषिजी महाराज,

कोई कल्याण ऋषिजी महाराज,

सूतर पर सूरज ऊगियोजी जिनराज,

चोपिया पर चाद पवासीयाजी जिनराज ।।समाप्तम।।

॥ तर्ज - सांभलो ओ सतियां ॥

जिनजी तेरहमा विमलनाथ वांदसाजी,
जिनजी चौदहमा अनन्तनाथ देव, केवलज्ञानी,
मुगतीगामी पक्खी रो बधावो श्री जिनराज रो ॥१॥

जिनजी पन्द्रहमा धरमीनाथ वांदसाजी,
जिनजी सोलहमा शान्तिनाथ देव, केवलज्ञानी,
मुगती गामी पक्खी रो बधावो श्री जिनराज रो ॥२॥

जिनजी सतरहमा कुन्थुनाथ वान्दसाजी,
जिनजी अठारहमा अरहनाथ देव, केवलज्ञानी,
मुगती गामी, पक्खी रो वधावो श्री जिनराज रो ॥३॥

जिनजी परत पुराणा सूतर नित नवा,
जिनजी सूतर वाचेला आनन्दऋषिजी माराज, केवलज्ञानी,
मुगती गामी, पक्खी रो बधावो श्री जिनराज रो ॥४॥

जिनजी मैं ही खमाऊ, आप खम लीजो,
जिनजी समगित शुद्ध होय जाय, केवलज्ञानी,
मुगतीगामी, पक्खी रो वधावो श्री जिनराज रो ॥५॥

जिनजी पन्दरा दिनरा बोल्या चालिया,
जिनजी शुद्ध मन लेऊ रे खमाय, केवलज्ञानी,
मुगती गामी पक्खी रो वधावो श्री जिनराज रो ॥६॥

卐

॥ तर्ज-सीता माता की गोदी में हनुमंत डाली मूंदडीजी॥

शुद्ध मन कीजे हो पक्खि रा खमत खामणाजी
जहाँ घर वरते हो आनन्द रग वधावणाजी ॥टेर॥

लख चौरासी जीवा योनी,
खमत-खामणा करलो प्राणी,
दिन पन्दरे मे अविधि आणी ॥१॥

पेला ऋषभ अजित तीजा सभावजी,
चौथा अभिनन्दन किरतारा,
सुमति पदम सुपारस प्यारा,
आठमा चन्दाप्रभु हितकारी,
भाव सहित वदु नर-नारी ॥२॥

सुविधि शीतल श्रेयास वासपूज्यजी ओ,
विमल अनन्त विशुद्ध विख्याता,
धर्मनाथ धरम के दाता,
शान्ति प्रभु सब विघन हटाते'
चरण कमल वदया दुःख जाता ॥३॥

कुन्थुनाथ अर मल्लिनाथ जो ओ,
मुनिसुव्रत नमिनाथ नगिना,
अभयदान नेमीश्वर दीना,
तोरण से फिर संयम लीना,
ऐसा उत्तम कारज कीना ॥४॥

पारस तेईसमा श्री वीर जिनन्द नित नमुंजी,
कर जोडो ने प्रणमु पाया,
विहरमान तीर्थकर मुनि राया,
अविचल स्थाक मोक्ष सिधाया,
जन्म मरण का रोग मिटाया ।।५।।

श्री सतोषमुनि गुण आगलाजी,
मिथ्या तीव्र मिटावन वाला,
मोतीलाल के करलो सारा,
खमत खामणा बारम्बारा,
मनुष्य जनम का होय सुधारा ।।६।।

।। तर्ज - जिन धर्म का झांडा आलम में ।।

श्री चौवीसों जिनराज तुम्हे,
विधि पूर्वक वन्दन करते हम ।
श्री सघ तथा सव जीवो से,
पाक्षिक क्षमापण करते है ।।टेर।।

हे ऋषभ अजित हमने जो भी,
पर वैर रक्खा, पर दुक्ख दिया ।
हे सभव अभिनन्दन उन सव,
पापो की विफलता चाहते हम ।।१।।

हे सुमति-पदम-सुपार्श्व सभी,
वे जीव क्षमा करदे हमको ।
हे चन्द्र.सुविधि यह याच रहे,
अति पश्चाताप प्रकट हम ।।२।।

शीतल श्रेयास हमे जिनने,
शत्रुत्व दिया और दुःख दिया ।
हे वासपूज्य विमल हम भी,
दे क्षमा उन्हे ला भाव प्रशम ।।३।।

हे नाथ अनन्त व धर्म प्रभो,
जो क्षमा न दे ले वैर रक्खे ।
हे शान्ति, कुन्थु-अर-जिन उनका,
कुछ भी विचार नही लाये हम ॥४॥

हे मल्ली मुनि सूव्रत स्वामी,
सब से ही मैत्री हमारी है।
नमि - नेमि - पार्श्व - महावीर हमें,
नहि वैर किसी से सब प्रियतम ॥५॥

चौवीस अनन्त प्रभो हम मे,
क्षमता - मृदुता ऐसी जागे
हे विहरमान गणधर गुरुवर,
पारस तुम सम हो जाए हम ॥६॥

।। तर्ज - जिया बेकरार है ।।

प्रतिक्रमण कर शाम को, चौवीसी को ध्यायाकर।
चचल मनको स्थिर कर, पाप मैल को धोयाकर

ऋषभ - अजित - सभव - सुखकारी,
अभिनन्दन जग प्यारा है।
सुमति - पदम - सुपार्श्व प्रभु ने
सब जीवों को तारा है।
पुष्पदत या चन्दाप्रभू को,
हृदय कमल मे ध्याया कर
सुविधि शीतल - श्रेयास जी
वासपूज्य का ध्यान धरो।
विमल अनन्त धर्म जिनेश्वर,
ॐ शान्ति का ध्यान धरो।।
एक चित्त हो प्रेम से जिनवर के गुण गाया कर
कुन्थु-अर-मल्लि जिन प्यारा।
मुनि सुव्रत सन धारो तुम।
नमि-नेम-ये-पार्श्व प्रभु ने,
सब जीवो को तारो तुम
महावीर का झडा प्यारा,
जगमे फर्राया कर

गणधर इग्यारे जैन सितारे

विश्व प्यारे सारे है।

विहरमान है बीस विश्व में,

तीर्थंकर गुण धारे है।

अनन्त चौवीसी गुरुदेवों की

भक्ति खूब बजाया कर ॥४॥

अरिहत अरु सिद्ध आचार्य,

उपाध्याय सब सतन का।

महामत्र नवकार श्रेष्ठ है,

जाप जपी सब तुम इनका ॥

दान-सियल-तप-त्याग में,

भाव खूब बढाया कर ॥५॥

पूज्य अमोलक गुरु प्रसादे,

हरिऋषी ने पुकारा है।

अमरावती चौमासा किया,

सन पचास का पूरा है।

देवसी-पक्खी-चौमासी को,

चौवीसी को गायाकर ॥६॥

॥ तपस्या की चौवीसी ॥

॥ तर्ज - ये आयो सगा रो सूवटो ॥

ये पेला रिखभनाथ वादसा, ये दूजा अजितनाथ देव,
तपसनजी झिल रह्या ॥१॥

ये तीजा सभवनाथ वादसा, ये चौथा अभिनन्दन देव,
तपसनजी झिल रह्या ॥२॥

ये पाचमा सुमतिनाथ वादसा, ये छट्ठा पदमप्रभु देव,
तपसनजी झिल रह्या ॥६॥

ये वास करीने, बेला ठाविया,
ये तेला रा चढता परिणाम ॥४॥

ये पाच करीने अठाई ठाविया,
ये इग्याराराा चढता परिणाम ॥५॥

ये पन्द्रह करीने, इक्कीस ठाविया,
ये मासखमण रा चढता परिणाम ॥६॥

।। तर्ज-किसा मारासा बाला ने, किसा मारासा प्यारा ।।

पेला रिखभनाथ, दूजा अजितनाथ,
तीजा अजितनाथ वान्दु गुरणीसा, प्यारा गुरणीसा,
आवो स्थानक माय तपस्या ठाओ ।।१।।

चौथा अभिनन्दन, पाचमा सुमनिनाथ,
छट्ठा पदम प्रभु वान्दु गुरणीसा, प्यारा गुरणीसा,
आवो स्थानक माय तपस्या ठाओ ।।२।।

सातमा सुपार्श्वनाथ, आठमा चन्दाप्रभु,
नवमा सुविधिनाथ वान्दु गुरणीसा, प्यारा गुरणीसा,
आवो स्थानक माये तपस्या ठाओ ।।३।।

किसा मारासा बाला ने, किसा मारासा प्यारा,
किसा मारासा कालजा री कोर गुरणीसा, प्यारा गुरणीसा,
आओ स्थानक माये तपस्या ठाओ ।।४।।

आनन्द ऋषिजी मारासा बाला ने,
कल्याण ऋषिजी मारासा प्यारा,

कुन्दन ऋषिजी मारासा
कालजा री कोर गुरणीसा, प्यारा गुरणिसा,
आओ स्थानक माये तपस्या ठाओ ॥५॥

किसी बाई वाली ने, किसी वाई प्यारी,
किसी बाई कालजा री कोर गुरणीसा, प्यारा गुरणीसा,
आओ स्थानक माये तपस्या ठाओ ॥६॥

फूली बाई वाला ने, सुशीला वाई प्यारा,
चान्दा बाई कालजा री कोर गुरणीसा, प्यारा गुरणीसा,
आओस्थानक माये तपस्या ठाओ ॥७॥

।। तर्ज - मुक्ति जाने की डिगरी दीजिए ।।

पेला रिखभनाथ वान्दसा जी काई,
दूजा अजितनाथ देव, तीजा सभवनाथ वान्दसाजी काई
चौथा अभिनन्नदन देव ओ मुगति का इच्छका,
तप तो कीजो निर्मल भाव सु ।।टेर।।

पखशपना मे नरक तिर्थच मे,
क्षुधा तृषा अति सहिया ।
तेतीस सागरोपम तक ताहि,
अन्न-जल-कण नही मिलिया,
ओ मुगति का इच्छका,
तप तो कीजो निर्मल भाव सु ।।१।।

अनन्त मेरुसम शक्कर खायी,
सागर जिम दूध पियाई ।
तृप्त नही होवे जीवडोसरे,
वो किम लाभ गामाओ ।।२।।

दृव्य ताप से किसन कोयलो,
जलकर उज्वल होवे ।
भावे ताप तप्यासु प्राणी,
स्वर्ग मोक्ष मे जावे ओ ।।३।।

तेरहमा विमलनाथ वादसाजी काई,
चौदहमा अनन्तनाथ देव।
पन्द्रहमा धरमोनाथ वान्दसाजी काई,
सोलमा शान्तिनाथ देव ॥९॥
साढे बारह वर्ष तक तपिया,
महावोर भगवान।
ममता रोक्या मुगति मिले छे,
वो किम लाभ गमाओ ॥१०॥
सतरमा कुन्थुनाथ वान्पसाजी काई,
अठारहमा अरहनाथ देव।
उन्नीसमा मल्लिनाथ वान्दसाजी काई,
बीसमा मुनिसुव्रत देव ओ ॥११॥
खिमिया सहित नियाणा रहित,
चढते भाव जो तप करसी।
अजर-अमर-अक्षय पद-पासी,
थोडे ही काल मे वरसी ओ ॥१२॥
इक्कीसमा नेमिनाथ बान्दसाजी काई,
वाईसमा रिष्ठनेमो देव।
तेईसमा पारस नाथ वादसाजी काई
चौवीसमा महावीर देव ओ ॥१३॥
तपस्वी का गुणग्राम करते,
तीर्थंकर गोत्र उपजावे।
अमोलक ऋषिजी साता उपजाया,
मन वचित फल पावे ओ ॥१४॥

पांचमा सुमतिनाथ वांदसजी कांई,
छट्ठा पदमप्रभु देव,
सातमा सुपार्श्व नाथ वादसां जी काई,
आठमा चन्दाप्रभु देव ओ मुगति का
इच्छका तप तो की जो निर्मल भाव सु ॥४॥

देवादिक तप से वश होवे,
लब्धि अठाईस पावे।
रोग-शोक इण भव मे नही आवे
स्वर्ग मोक्ष में जावे ओ ॥५॥

परदेशी राजा सम पापी
तपकर पाप खपाया।
चोर जार हिसक अन्यायी
तपकर मोक्ष सिधाया ओ ॥६॥

नवमा सुविधिनाथ वादसांजी कांई,
दसमा शीतलनाथ देव।
इग्यारहमा श्रेयासनाथ वान्दसाजी काई,
वारहमा वासपूज्य देव ओ ॥७॥

धन्ना अणगार नव महीने मे,
सर्वार्थ सिद्ध पाया।
अर्जुनमाली छः महीने मे,
तपकर मोक्ष सिधाया ओ ॥८॥

तेरहमा विमलनाथ वादसाजी काई,
चौदहमा अनन्तनाथ देव ।
पन्द्रहमा धरमोनाथ वान्दसाजी कांई,
सोलमा शान्तिनाथ देव ॥९॥

साढे वारह वर्ष तक तपिया,
महावोर भगवान ।
ममता रोक्या मुगति मिले छे,
वो किम लाभ गमाओ ॥१०॥

सतरमा कुन्थुनाथ वान्पसाजी काई,
अठारहमा अरहनाथ देव ।
उन्नीसमा मल्लिनाथ वान्दसाजी काई,
बीसमा मुनिसुव्रत देव ओ ॥११॥

खिमिया सहित नियाणा रहित,
चढते भाव जो तप करसी ।
अजर-अमर-अक्षय पद-पासी,
थोडे ही काल मे वरसी ओ ॥१२॥

इक्कीसमा नेमिनाथ वान्दसाजी कांई,
वाईसमा रिष्ठनेमी देव ।
तेईसमा पारस नाथ वांदसाजी काई
चौवीसमा महावीर देव ओ ॥१३॥

तपस्वी का गुणग्राम करते,
तीर्थंकर गोत्र उपजावे ।
अमोलक ऋषिजी साता उपजाया,
मन वचित फल पावे ओ ॥१४॥

॥ मराठी चौवीसी ॥

अरिहन्त देव तुझला, नमन पद कमला ॥टर॥
ऋषभ-अजित-सभव-अभिनन्दन,

सुमति जिनेश्वर ला। नमन पद कमला ॥१॥

पदमप्रभु-सुपार्श्वनाथ तुझ चन्दाप्रभुजी ला ॥२॥

सुविधिनाथ शीतल-श्रेयास-वासपूज्य प्रभुला ॥३॥

विमल-अनन्त-धर्म जिनेश्वर शन्तिनाथ प्रभुला ॥४॥

कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नेमी-नेम:प्रभु ला ॥५॥

सहस्र फणी श्री पार्श्वनाथ तुझ महावीर प्रभु ला ॥६॥

ये चौवीसी जिनेश्वर नमिता, पुण्य लाभ झाला ॥७॥

।। तर्ज - जरा सामने तो आवो चलिये ।।

जरा गावो प्रभु गुण गान है ।
यह चौवीसी भगवान है ।
वनो ऐसो सभी परमात्मा ।
प्यारे आतमा की यही पुकार है ।।टेर।।

ऋषभ-अजित-सभव-अभिनन्दन,
सुमति-पदम-सुपार्श्वप्रभु ।
चन्दा-सुविधि-शीतल-स्वामी,
श्रेयास-वासपूज्य-विभु ।
काट दिये सब कर्मो के फन्द है,
गये मोक्ष सभी प्रभु आप है ।।१।।

विमल-अनन्त-धर्म व शान्ति,
कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत ।
नमि-नम-ये-पारस-महावीर,
थापे है प्रभु चारों तीर्थ ।
ये शासन के प्रभु सिनगार है
भक्त गले के चौवीसी हार है ।।२।।

अजर-अमर-अखिलेश-निरजन,
मुनि मन रजन-भव-दुख भजन,
सिद्ध-सुपद को धारे मेरे प्यारे जिनंद

उपाध्याय-आचार्य-हमारे,
सकल सतजन धर्म दुलारे,
पाचो पद विस्तारे मेरे प्यारे जिनन्द

गुरु निग्रन्थो ने सिखलाया,
वो नवकार मत्र बतलाया,
सूर्य-भानु-स्वीकारे मेरे प्यारे जिनन्द

॥ तर्ज - झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥

शान्ति चरणांरी जाऊ बलिहारी, झेलो वदना ओ नाथ हमारी
तुमरे चरणन की बलिहारी, झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी
॥टेर॥

ऋषभ्-अजित-सभव-अभिनन्दन,
सुमति पदम सुखकारी,
श्री सुपार्श्व-चन्दाप्रभु सुमरू,
जग नायक जम धारी
अरज लीजो अवधारी, अरज लीजो अवधारी
झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥१॥

सुबिधि-शीतल-श्रेयास-वासपूज्य,
विमल-अनन्त-धर्म धारी।
शान्ति जिनन्द सुखकन्द जगत में,
मेट दीनी सब मारी।
हरि मेरी विपत्ती रे विमारी हरि मेरी विपत्ती रे
बिमारी। झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥२॥

कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत,
नमि-नेम-सुविचारी,
तोरण से पाछा फिर आया,
छोड के राज दुलारी,
नाथ तुम करुणा के भण्डारी, नाथ तुम करुणा के भण्डारी,
झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥३॥

बे वारम वारस पारम,

पच परमेष्ठी उच्चारी,

नाग-नागीन-जलतो वचायो,

कीना है सुर अवतारी,

मडिमा जगमे अति थारी, महिला जग मे अति थारी,

झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥४॥

शासन नायक वीर जिनेश्वर,

हद क्षमा प्रभु थारी ।

केवल लेय प्रभु मोक्ष सिधाया

शुद्ध समकित धारी ।

रह्या लोका लोक निहारी, रह्या लोक लोक निहारी,

झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥५॥

अन्सन लेय प्रभु भोग त्याग कर,

पहुँच्या है मुक्ति मझारी,

अनन्त सुखा माय जाय विराज्या तो,

निरजन निराकारी,

रह्या लोका लोक निहारी, रह्या लोका लोक निहारी,

झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥६॥

मोह–माया–माय उलझ रह्यो मैं,

पायो हूँ दुख अपारी,

तुम विना मैं तो चऊं गति भटक्यो,
धर्म की बुद्धि विसारी,
सीख सतगुरु की न धारी, सीख सतगुरु की न धारी,
झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥७॥

अशुभ करम कुछ दूर गया सु,
वाणी लागी प्रभु प्यारी,
अधम उद्धारण विरुद्ध सुनी मैं,
शरण लियो प्रभु थारी,
सार करजो प्रभु मारी, सार करजो प्रभु मारी,
झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥८॥

मुझ सरीखो नही दीन जगत में,
तुझ सरीखो दातारो,
इम तिम करी भव पारो उतारो,
या मांगू रिझवारी
अरज लीजो अवधारी, अरज लीजो अवधारी,
झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥९॥

उगनीस सौ इक्तीस माघ कृष्ण पक्ष,
तीज स्थिति शनिवारो,
देश दक्षिण आवल कोटी पेट मे,
जोड करो हितकारी,
तिलोक रिख कहे सुविचारी, तिलोक रिख कहे सुविचारी,
झेलो वन्दना ओ नाथ हमारी ॥१०॥

卐

(तर्ज : तुमको लाखों प्रणाम)

चोवीसी जिनराज तुमको लाखो प्रणाम ॥ टेर ॥

रिषभ–अजित–सभव सुखकारी,
अभिनन्दन त्रय ताप निवारी,
सुमति–सुमति दातार तुमको लाखों प्रणाम ॥ १ ॥

पदम, सुपार्श्व शिवगामी,
चन्दा सुविधि अन्तरयामी,
शीतल ज्ञान अपार, तुमको लाखो प्रणाम ॥ २ ॥

श्रेयास–वासपूज्य–केवलधारी,
विमल अनन्त वृद्धि विस्तारी,
धर्मनाथ दातार तुमको लाखो प्रणाम ॥ ३ ॥

शान्ति–शान्ति जग मे वरताई,
कुन्थु–अर–मल्लि भज भाई,
मुनि सुव्रत दिल धार तुमको लाखो प्रणाम ॥ ४ ॥

नमि–नेम के गुण मुख गावो
पारस चरणा शीश नमावो,
वीर शत्रु दीना टार तुमको लाखो प्रणाम ॥ ५ ॥

पूज्य खूबचन्दजी दर्श दिराये,
छः ठाणे सग मिलकर आये,
हर्षे सब नर–नार तुमको लाखो प्रणाम ॥ ६ ॥

दिल्ली शहर चौराणवे माही,
हीरालाल मुनि जोड बनाई,
जपता जय–जयकार तुमको लाखों प्रणाम ॥ ७

(तर्ज : श्री आदेश्वर स्वामी हो प्रणमुं सिरनामी)

आज भलो दिन ऊग्योजी,
मैं गास्यू हर्ष वधावना,
थारी बोलू जय–जयकार,
लुलि–लुलि शीश नमास्यूजी,
मै लेस्यू थारा वारणा,
थाने वन्दु वारम्वार ॥ टेर ॥

आदि–आदि जिन वन्दु जी,
जिनमत की सर्पणी काल मे,
प्रभु आदि के करतार,
अजित–अजित ने जीत्याजी,
कर्मारा दल–दल काटिया,
कोई अष्ठ गुणा भण्डार ॥ १ ॥

वन्दुँ श्री सभव प्याराजी,
अभिनन्दन मारा साहिवा,
श्री सुमति–सुमति दातार ।
पतीत पावन कहलायाजी,
श्री पद्मप्रभु मन भाविया,
श्री सुपारस सुखकार ॥ २ ॥

चिन्ताचूरण चन्दाजी,

मैं चरण का वन्दा आपका,

नित–सुविधि–सुविधि विठलाय,

शीतल–शीतल आपेजी,

यश कीर्ति छावे लोक मे,

श्रेयास भजो चित्तलाय ॥ ३ ॥

विघ्न निवारण स्वामीजी,

वन्दु सिरनामी आपने,

श्री वासपूज्य भगवान,

विमल–विमल वुद्ध दीजोजी,

पग–पग पर पाऊ चेतना,

कोई करू आतम कल्याण ॥ ४ ॥

अनन्त–अनन्ता तारयाजी,

मैं भी एक शरणे आवियो,

मोय अनन्त शक्ति देवो नाथ,

धर्म जिनेश्वर दीजो जी,

भव–भव जिन धर्म की आसता,

कोई शुद्ध समकित के साथ ॥ ५ ॥

शान्ति–शान्ति वरतावो जी,

मारे मन वसज्यो साहिबा,

श्री कुन्थु रो मै दास,

अरह–अरि ने टालो जी,

मल्लि–मद–मोह निवारजो,

मुनि सुव्रत पूरो आश ॥ ६ ॥

नमि नमावे वैरी ने,

करुणा भण्डारी साहिबा,

श्री नेम दया की खान,

पारस–पारस कर देवेजी,

बुद्धि आपे चऊ ओर से,

श्री महावीर भगवान ॥ ७ ॥

अनन्त चौबीसी होगी जी,

आगे भी अनंती होवसी,

जाने वन्दन सौ–सौ वार,

नाम लिया निस्तारोजी,

भगवत तणा गुण गावता,

मारे वरते मंगलाचार ॥ ८ ॥

चिन्तामणि सम मिलियो जी,

जिन धर्म दयामय भाग्य सु,

मारो कलपवृक्ष गयो लाग,

कामधेनु मैं पायी जी,

हुआ आनन्द रग वधावना,

नित-नित जीत सोभाग ॥ ९ ॥

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई)

सुबह शाम तुम आओ गावो,

प्रभुजी के गुणगान,

जिनेश्वर चौवीशी भगवान ।। टेर ।।

पाप–ताप–सताप मिटाये, पाये पद निर्वाण ।

जिनेश्वर चौवीशी भगवान ।। धृव ।।

ऋषभ–अजित–सभव–सुखकारी,

अभिनन्दन–सुमति–दिलधारी ।

पद्म–सुपार्श्व–ममता–मारी,

चन्दाप्रभु है मोक्ष विहारी ।

जन्म–मरण–सब मेटे इनने,

बन गये सिद्ध महान ।। १ ।।

सुविधि–शीतल–जैसा चन्दा,

श्रेयास वास पूज्य जिनन्दा ।

विमल–अनन्त–धर्म मुनिन्दा,

शान्ति प्रभु है अचला नन्दा ।

भव–भ्रमण का दुःख मिटाया,

पाकर केवल ज्ञान ।। २ ।।

कुन्थु–अर–मल्लि–जिन प्यारा,

मुनि–सुव्रत मन मोहन गारा,

नमि–नेम–प्रभु पार्श्व सितारा,

महावीर शासन सिरदारा,

मोक्ष नगर मे जाय विराजे,

कर आतम कल्याण ॥ ३ ॥

गणधर ग्यारा, जग हितकारा,

विहरमान है बीस प्यारा,

अनन्त चौवीसी सुख मे सारा,

गुरुदेव शासन सिनगारा,

मालेगांव मे हरिऋषि कहे,

धरो प्रभु का ध्यान ॥ ४ ॥

(तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेश)

हम श्री संघ के आज, रखो प्रभु लाज ।
हे चौवीसी प्यारे, तुम हो नाथ हमारे ।। टेर ।।

ऋषभ–अजित–सभव प्यारे,
अभिनन्दन सुमति दिलधारो,
हे पद्म, सुपारस, चन्दाप्रभु है सारे ।। १ ।।

सुविधि–शोतल–श्रेयास मुनि,
वासपूज्य विमल गभीर गुणी,
हे अनन्त–धर्म–शान्ति–शान्ति अवतारो ।। २ ।।

कुन्थु–अर–मल्लि मुनि सुव्रत,
नमि–नेम–प्रभु धारे महाव्रत,
हे पार्श्व प्रभु महावोर जगत सितारे ।। ३ ।।

प्रभु ग्यारह गणधर मन भावे,
हम विहरमान गुण गावे,
है तारण–तोरण गुरुदेव जग सितारे ।। ४ ।।

अब दान–सियल–तप–धारेंगे,
शुद्ध भाव से कर्म विडारेंगे,
कहे गुरु अमोलक हरिऋषि के प्यारे ।। ५ ।।

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत)

आशा पूरे चिन्ता चूरे, नन्दन वन उद्यान,

जय–जय चौवीसी भगवान।

निर्मल मन कर भजन करत वह, पाये पद निर्वाण,

जय–जय चौवीसी भगवान ॥ टेर ॥

नेम प्रभु की जाऊं वलिहारी,

सभव भव–भव में सुखकारी,

सुविधि धर्म के धारी,

शान्तिनाथ है साताकारी,

अनन्त कत शिव रमणि महंत,

मुनि सुव्रत नमि महान ॥ १ ॥

अजित जीत लिये शत्रु सारे,

चन्दा चित्त पावन हो धारे,

रिद्धि वृद्धि हो ऋषभ उचारे,

सुपारस सुख धाम हमारे,

विमल–विमल मति विजय सुयश,

अति ऐसा दो वरदान ॥ २ ॥

मल्लिनाथ बाल ब्रह्मचारी,

देह धनुष पच्चीस के धारी,

भक्ति युक्त यह बिनय हमारी,

शिष्य भिक्षा हित झोली पसारी,

अरहनाथ वर्धमान ध्यान से,

होवे परम कल्याण ॥ ३ ॥

सुमति पदम कदम में आया,

जनम–मरण से वहु घबराया,

वासपूज्य शीतल दो छाया,

श्रेयांस हो मान सवाया,

कुन्थु पारस पा रस तेरा,

अभिनन्दन बहुमान ॥ ४ ॥

अशोक लोक का तिमिर मिटाओ,

अन्तराय को शीघ्र हटाओ,

सुख प्रद बोधि लाभ दिलाओ,

उत्तम जन संयोग कराओ,

मन्त्र–यन्त्र है नाम आपका,

शिव सुख का सोपान ॥ ५ ॥

(तर्ज : करने भारत का कल्याण)

जिनवर चौव मो अवतार, हमारा वन्दन हो स्विकार ॥ टेर ॥

ऋषभ–अजित–संभव स्वामी,
अभिनन्दन अन्तरयामी ।
सुमति पदम–सुखकार,
हमारा वन्दन हो स्विकार ॥ १ ॥

सुपारस पावनकारी,
चन्दाप्रभु आनन्दकारी ।
सुविधि करो भव पार ॥ हमारा .....॥ २ ॥

श्री शीतल शोभा कारी,
श्री श्रेयास शान्ति के धारी,
श्री वासपूज्य जयकार ॥ हमारा .... ॥ ३ ॥

विमल–अनन्त जिन देवा,
सूद मन से करलो सेवा,
होगा आत्मा का कल्याण ॥ हमारा....॥ ४ ॥

धर्म जिनेश्वर धर्म के धारी,
प्रभु शान्ति सदा सुखकारी,
कुथु–अर–अविकार ॥ हमारा ......॥ ५ ॥

मल्लि जिन मोहन गारा,

मुनि सुव्रत लागे प्यारा,

नमि जिन नेम कुमार ॥ हमारा . . . . ॥ ६ ॥

पारस प्रभु प्रभुता धारी,

वीर प्रभु वीरता धारी,

प्रभु शासन का श्रृंगार ॥ हमारा . . . . ॥ ७ ॥

मिश्री मुनी की यही अरजी,

सुन लीजो जिनवरजी,

दीजो जनम सुधार ॥ हमारा . . . . . . ॥ ८ ॥

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत)

जय जिनेश्वर, जय तीर्थंकर, जय चौवीसी भगवान,

साधु–श्रावक करे प्रणाम

आप तिरे औरों को तारे, भरत क्षेत्र भगवान,

साधु श्रावक करे प्रणाम ॥ टेर ॥

ऋषभ देव का कीर्तन करते,

अजितनाथ को वंदन करते,

सभवनाथ का नाम सुमरते,

अभिनन्दन को चित्त मे धरते,

जय सुमति–जय पदम प्रभु,

जय चौवीसी भगवान ॥ १ ॥

सुपार्श्वनाथ का कीर्तन करते,

चन्द्र प्रभु को वन्दन करते,

सुविधिनाथ का नाम सुमरते,

शीतल प्रभु को चित्त में धरते,

जय श्रेयांस–जय वासपूज्य,

जय चौवीसी भगवान....॥ साधु ॥ २ ॥

विमलनाथ का कीर्तन करते,

अनन्तनाथ को वन्दन करते,

धर्मनाथ का नाम सुमरते,

शान्तिनाथ को चित्त में धरते,

जय कुन्थुनाथ–जय अरहनाथ,

जय चौवीसी भगवान ॥ साधु श्रावक ॥ ३ ॥

मल्लिनाथ का कीर्तन करते,

मुनि सुव्रत को वन्दन करते,

नमिनाथ का नाम सुमरते,

नेमिनाथ को चित्त में धरते,

जय पारस, जय महावीर,

जय चौवीसी भगवान . . . . . ॥ ४ ॥

अनन्त सिद्ध का कीर्तन करते,

विहरमान को वन्दन करते,

गणधर प्रभु का नाम सुमरते,

गुरुदेव को चित्त मे धरते,

केवल शिष्य विनय करता,

जय चौवीसी भगवान ॥ ५ ॥

卐

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत)

जय जिनेश्वर, जय तीर्थंकर, जय चौबीसी भगवान,

साधु-श्रावक करे प्रणाम

आप तिरे औरों को तारे, भक्त और भगवान,

साधु श्रावक करे प्रणाम ॥ टेर ॥

ऋषभ देव का कीर्तन करते,

अजितनाथ को वन्दन करते,

सभवनाथ का नाम सुमरते,

अभिनन्दन को चित्त मे धरते,

जय सुमति–जय पदम प्रभु,

जय चौबीसी भगवान ॥ १ ॥

सुपार्श्वनाथ का कीर्तन करते,

चन्द्र प्रभु को वन्दन करते,

सुविधिनाथ का नाम सुमरते,

शीतल प्रभु को चित्त में धरते,

जय श्रेयास–जय वासपूज्य,

जय चौबीसी भगवान....॥ साधु ॥ २ ॥

विमलनाथ का कीर्तन करते,

अनन्तनाथ को वन्दन करते,

धर्मनाथ का नाम सुमरते,

शान्तिनाथ को चित्त में धरते,

जय कुन्थुनाथ–जय अरहनाथ,

जय चौवीसी भगवान ।। साधु श्रावक ।। ३ ।।

मल्लिनाथ का कीर्तन करते,

मुनि सुव्रत को वन्दन करते,

नमिनाथ का नाम सुमरते,

नेमिनाथ को चित्त मे धरते,

जय पारस, जय महावीर,

जय चौवीसी भगवान . . . . . ।। ४ ।।

अनन्त सिद्ध का कीर्तन करते,

विहरमान को वन्दन करते,

गणधर प्रभु का नाम सुमरते,

गुरुदेव को चित्त मे धरते,

केवल शिष्य विनय करता,

जय चौवीसी भगवान ।। ५ ।।

卐

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत)

जय जिनेश्वर, जय तीर्थंकर, जय चौवीसी भगवान,
साधु–श्रावक करे प्रणाम
आप तिरे औरों को तारे, भरत क्षेत्र भगवान,
साधु श्रावक करे प्रणाम ॥ टेर ॥

ऋषभ देव का कीर्तन करते,
अजितनाथ को वदन करते,
सभवनाथ का नाम सुमरते,
अभिनन्दन को चित्त मे धरते,
जय सुमति–जय पदम प्रभु,
जय चौवीसी भगवान ॥ १ ॥

सुपार्श्वनाथ का कीर्तन करते,
चन्द्र प्रभु को वन्दन करते,
सुविधिनाथ का नाम सुमरते,
शीतल प्रभु को चित्त में धरते,
जय श्रेयास–जय वासपूज्य,
जय चौवीसी भगवान....॥ साधु ॥ २ ॥

विमलनाथ का कीर्तन करते,

अनन्तनाथ को वन्दन करते,

धर्मनाथ का नाम सुमरते,

शान्तिनाथ को चित्त में धरते,

जय कुन्थुनाथ–जय अरहनाथ,

जय चौवीसी भगवान ।। साधु श्रावक ।। ३ ।।

मल्लिनाथ का कीर्तन करते,

मुनि सुव्रत को वन्दन करते,

नमिनाथ का नाम सुमरते,

नेमिनाथ को चित्त में धरते,

जय पारस, जय महावीर,

जय चौवीसी भगवान . . . . . ।। ४ ।।

अनन्त सिद्ध का कोर्तन करते,

विहरमान को वन्दन करते,

गणधर प्रभु का नाम सुमरते,

गुरुदेव को चित्त में धरते,

केवल शिष्य विनय करता,

जय चौवीसो भगवान ।। ५ ।।

卐

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत)

जय जिनेश्वर, जय तीर्थंकर, जय चौवीसी भगवान,

साधु–श्रावक करे प्रणाम

आप तिरे औरो को तारे, भरत क्षेत्र भगवान,

साधु श्रावक करे प्रणाम ॥ टेर ॥

ऋषभ देव का कीर्तन करते,

अजितनाथ को वदन करते,

सभवनाथ का नाम सुमरते,

अभिनन्दन को चित्त में धरते,

जय सुमति–जय पदम प्रभु,

जय चौवीसी भगवान ॥ १ ॥

सुपार्श्वनाथ का कीर्तन करते,

चन्द्र प्रभु को वन्दन करते,

सुविधिनाथ का नाम सुमरते,

शीतल प्रभु को चित्त में धरते,

जय श्रेयास–जय वासपूज्य,

जय चौवीसी भगवान....॥ साधु ॥ २ ॥

विमलनाथ का कीर्तन करते,

अनन्तनाथ को वन्दन करते,

धर्मनाथ का नाम सुमरते,

शान्तिनाथ को चित्त में धरते,

जय कुन्थुनाथ–जय अरहनाथ,

जय चौवीसी भगवान ।। साधु श्रावक ।। ३ ।।

मल्लिनाथ का कीर्तन करते,

मुनि सुव्रत को वन्दन करते,

नमिनाथ का नाम सुमरते,

नेमिनाथ को चित्त में धरते,

जय पारस, जय महावीर,

जय चौवीसी भगवान . . . . . ।। ४ ।।

अनन्त सिद्ध का कीर्तन करते,

विहरमान को वन्दन करते,

गणधर प्रभु का नाम सुमरते,

गुरुदेव को चित्त में धरते,

केवल शिष्य विनय करता,

जय चौवीसी भगवान ।। ५ ।।

卐

(तर्ज : ले संग खर्ची रे, पर भव की)

शुभ फल पावो रे चौवीसी, जिणन्द का,
नित गुण गाऊ रे ॥ टेर ॥

धर्म जिनेश्वर चन्दा प्रभुजी,
ऋषभ प्रथम अवतारी रे,
महावीर–कुन्थु जिन जपता,
जय–जयकारी रे ॥ १ ॥

शान्ति नाम से साता वरते,
अनन्त सुपार्श्व ध्यावे रे,
सुमतिनाथ प्रभु पार्श्व परसता,
पाप पलावे रे . . . . ॥ २ ॥

रिष्टनेमी श्री मुनि सुव्रतजी,
विमल–विमल गुणधारी रे,
पद्म प्रभु–अभिनन्दन स्वामी,
आवागमन निवारी रे ॥ ३ ॥

श्री–श्री सभव नमि मल्लि,
पाप मल हरिया रे,

यासपूज्य—शीतल--जिनेश्वर,

शिव सुख वरिया रे ॥ ४ ॥

सुविधिनाथ श्री अजित प्रभु,

पच्चीस भावना पाली रे,

अरहनाथ श्रेयांस,

अचल पद लियो सभाली रे ॥ ५ ॥

इण विधि जाप जपे जिनवर का,

पेसठ तणो प्रभावे रे,

अरित दुःख भय दूर टले,

कमला घर आवे रे ॥ ६ ॥

फरीद कोट मे पूज्य मन्नालालजी,

नौ ठाणा सु आया रे,

महामुनि नन्दलाल तणा शिष्य,

जिन गुण गाया रे ॥ ७ ॥

(तर्ज : अन्नदाता मैं तो किस विध आऊँ)

पेला रिषभनाथ जिनजी कू वादू,
दूजा अजितनाथ देवो मारासा
मैं तो वदन आई वदन आई
मैं तो शरणा में आई ।
ज्ञान देईने माने तारो अन्नदाता,
मै तो वन्दन आई......॥ १ ॥

प्रभुजी रूठ्या तो माने आप री शरण है,
आप रूठ्या तो नहीं टोर अन्नदाता,
मैं तो वन्दन आई....,..॥ २ ॥

तिरण–तारण री जहाज गुरुदेवा,
भव सागर सु पार करजो अन्नदाता,
मै तो वन्दन आई.....॥ ३ ॥

नोट–इसी तरह आगे-आगे सभी तीर्थंकरों का नाम लेना

(तर्ज : क्या रे आवशे घेरे मुनिराज)

पेला रिखभनाथ वांदू,
अजितनाथ वाद सु रे।
जिनजी इगन्या संभवनाथ वादूं,
अभिनन्दन वाद सु रे॥

स्थूलिभद्र रह्या चातुर्मास,
वेश्या केरी शालमा।

अगे लागी अनगनी आग,
कोसा करे विनती रे।
धन्य-धन्य महा मुनिराज,
डग्या नही ध्यान थी रे।

卐

नोट—इसी तरह आगे-आगे सभी तीर्थंकरों का नाम लेना।

(तर्ज : मारासा मारा ओ आज सोना रो सूरज)

पेला रिखभनाथ वान्द सां, दूजा अजितनाथ देव ।
चतुर नर ओ शील जतन कर राखजो ।। १ ।।

शील मे सेठा रानी द्रोपदी, वढ गया चीर अपार ।
चतुर नर ओ शील जतन कर राखजो ।। २ ।।

सेठ सुदर्शन अति घणा, वले कांई जम्बुकुमार ।
चतुर नर ओ शील जतन कर राखजो ।। ३ ।।

नोट—इसी प्रकार आगे—आगे सभी तीर्थकरों का नाम लेना ।

(तर्ज : समदां रे पेलोडे चंन्दणियां)

पेला रिखवनाथ, जिनजी ने वाद २
दूजा अजितनाथ वादसा जी . . . . ।। टेर ।।

समदा रे पेलोडे चन्दणिया रो रूको २
घडे नी रे खाती वाजोटियो जी . . . . ।। १ ।।

पेलोडो पायोतो समकित सू जडियो, २
दुजेओ वरत सुवावणा जी . . . . ।। २ ।।

इगन्योडो पायो तो तपस्या सूं जडियो २
चोथे ओ शील सुवावनो जी . . . . ।। ३ ।।

इणने वाजोटे म्हारा सत गुरुसा विराजे
गुरणोसा विराजा, करोनी भाया, वाया विणती जी. . . .
।। ४ ।।

वीन्ती भाया मानी रे नही जावे २
खेतर कइजे म्हारे सांवटा जी . . . . . ।। ५ ।।

आजु वाजु मारासा म्हारा चेला ने मेलो २
आप पधारो बेलूर शहर मे जी . . . . ।। ६ ।।

चेला म्हारा गुण रतनारी खानो २
चेला ने मेल्या म्हारे नही सरेजी . . . ।। ७ ।।

(तर्ज : ऊभी ऊभी छः काया विनवे,

माने किणरो आधारो)

पेला रिखभनाथ वांदसा, दूजा अजितनाथ देवो,
तीजा सभवनाथ वांदसा, चौथा अभिनन्दन देवो।
पाचमा सुमितिनाथ वादसा, छट्ठा पदमप्रभु देनो,
ऊभी-ऊभी छ: काया विनवे, म्हाने कौनो रो आधारो।
आप मुगत में विराजिया, मै तो हुया निराधारो ॥ १ ॥

थे क्यों डरपो ए छः काया, थारा जतन करालां,
साधा रे खोले घालसा, श्रावक साक भरेला।
सतियां रे खोले घालसां, श्राविका साक भरेला ॥ २ ॥

卐

नोट—इसी प्रकार २४ तीर्थंकरों का नाम लेना।

(तर्ज : कटासुं आयो ए मारो चंदनबाई रो वीरो)

पेला रिखभनाथ वांदू जिनरांज,

दूजा अजितनाथ दीन दयाल,

तीजा सभवनाथ वांदू जिनराज,

चौथा अभिनन्दन दीन दयाल,

पाचमा सुमतिनाथ वादू जिनराज,

छट्टा पदम प्रभु दीन दयाल ।

ऊग्यो-ऊग्यो चाद छिटक रह्यो रात,

अजुयन आयो माने केवल ज्ञान ॥ १ ॥

ज्ञान करो गजरो ने संतोप की छडी,

शुद्ध मन शील पालो आज री घडी ॥ २ ॥

नोट-इसी प्रकार २४ तीर्थकरों का नाम लेना ।

(तर्ज : ख्याल)

पेला रिखभनाथ वांदसा जी काई, दूजा अजितनाथ देव ।
तीजा सभवनाथ वांदसाजी काई, चौथा अभिनन्दन देव ।
पाचमा सुमतिनाथ वादसाजी काई, छट्ठा पदमप्रभु देव ।
ओ इण इन्दर गुफा मे, राजुल चमके छें आभा बीजली
।। टेर ।।

डुगर ऊपर डूगरी सरे, सोनो घडे सुनार ।
गडिजे नेमजी री मूदडी सरे, राजुल रो नवसर हार रे ॥
इण इन्दर गुफा में ।। १ ।।

धोलो घोडो हीसतो सरे, लाला जडी लगाम ।
चढो–चढो सब कोई केवे सरे, चढ गया नेमकुमार ओ ॥
इण इन्दर गुफा में ।। २ ।।

नोट–इसी प्रकार २४ तीर्थकरों का नाम लेना ।

(तर्ज : एसा खेलजो रे फाग सदा)

पेला रिखभनाथ जिनजी ने वान्दु,
दूजा अजितनाथ देवो ज्ञानी।
होली खेले मुनिराज अकेला वन में।।
तीजा सभवनाथ जिनजी ने वादु,
चौथा अभिनन्दन देवो ज्ञानी।
होली खेले मुनिराज अकेला वन में।।
पाचमा सुमतिनाथ जिनजी ने वादु,
छट्ठा पदम प्रभु देवो ज्ञानी।
होली खेले मुनिराज अकेला वन में।। टेर।।

काहे का रंग, काहे की पिचकारी।
काहे की धूल उडाई वन में .... होली
ज्ञान का रग, क्रिया की पिचकारी,
कर्मो की धूल उडाई वन में .... होली
क्षामा का रंग, ज्ञान की पिचकारी।
पापों की धूल उडाई वन मे .... होली
दया का रग, सतोष की पिचकारी।
कषायों की धूल उडाई वन मे .. होली
शुक्ल-ध्यान की श्रेणी चढिया।
केवल ज्ञान की ज्योति जगाई वन में... होली
शाश्वत ज्योति आत्मा मे जगाई।
शिवपुर की राह भी पायी वन में....होली

(तर्ज :

पेला रिखभनाथ, वांदू मारा नेमजी ।

आठमा चन्दा प्रभु देवजी ।

कठोडा रा वासी मारा नेमजी, कठोडे रे वास जी ॥ १ ॥

सोरीपूर रा वासी मारा नेमजी, गिरनारियाँ रे वास जी,

घडी एक ऊभा रेवो मारा नेमजी, वावोसा सु वात जी॥२॥

अबे केरी बातां मारी राजुल, अबे केरी गूजजी ॥ ३ ॥

मोक्ष जावण री वेला मारी राजुल,

घडियन कीजे ढीलजी ॥ ४ ॥

छोड कडुम्बो वापरो ए राजुल चालो मारे साथ जी ॥५॥

(तर्ज : तेजाजी री)

गावो–गावो चौवीसी रा गुण सगली बाया ए,
जिणसुं तिरेला थारी आतमा . . . . ।। टेर ।।

रिषभ–अजित–संभव, स्वामी तीजा हो ।
अभिनन्दनजी चौथा जाण जो . . . . ।। १ ।।

सुमति–पदम– सुपारस,जग प्यारा हो ।
चन्दा प्रभुजी तारी आतमा . . . . . ।। २ ।।

सुविधि–शीतल–श्रेयाम हितकारी हो ।
वासपूज्य स्वामी बारमो . . . . . ।। ३ ।।

विमल-अनन्त-धर्म-शान्ति-साताकारी हो,
शान्ति वरताई सारा देश मे . . . . . ।। ४ ।।

कुन्थु-अर-मल्लि-बालब्रह्मचारी हो ।
मुनि सुव्रत स्वामी बारमा . . . . . ।। ५ ।।

नमि-नेम-पारस, महावीर स्वामी हो ।
ज्याने होई जो मारी वन्दना . . . . . ।। ६ ।।

बीस विहर मुनि, गणधर ग्यारा हो ।
सोला सतिया ने मारी वन्दना. . . . , ॥ ७ ॥

गुरु ने गुरणी सा ने, नित उठ वान्दु ओ ।
अनन्त चौवीसी रा लेसु वारणा . . . . ॥ ८ ॥

दो हजार, फागण सुदी, चउदस हो ।
अशोक भवन मे पारस गुण गाविया . . . . ॥ ९ ॥

विहरमान विभाग
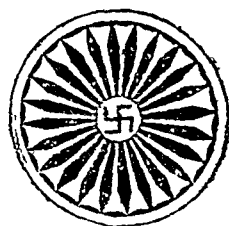
(तर्ज : लागी कब से लगन, म्हाने दे दो दर्शन)

नित उठ के चेतन, श्री जिन के चरण,

सिर झुकाना, श्री मन्दिरजी के गुण गाना ॥ टेर ॥

श्री–श्री मन्दिर सुन मेरी अरजी,

मैं हूं दास आपको गरजी,

आपके चरण कमल चित्त लगाना . . . . ॥ १ ॥

श्री श्रेयास पिता तुम्हारे,

सतकी माता के तुम प्यारे,

ओछव कोनो इन्द्र, हिये हर्षाना . . . . . . ॥ २ ॥

आयुष्य लक्ष चौरासी पाया,

ऊचीं धनुष्य पाच सौ काया,

रिषभ चिन्ह चरण, चमकाना . . . . . , . ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥

सजम ले प्रभु ध्यान लगाया,

कर करनी केवल पद पाया,

लेके मनुष्य जनम, किया जनम सफल,

समझाना . . . . ॥ ४ ॥

लब्धि-विद्या नही पांख हमारे,

तो नित करती दर्शन तुम्हारे,

आडा पर्वत पाड, नदिया नाला अथाग,

कैसे आना . . . . ॥ ५ ॥

मै हूँ बालक मूर्ख अज्ञानी,

विरद विचारो अन्तरयामी,

दो हजार सात की साल, सातम ने गुरुवार-

भजन बनाया . . . . ॥ ६ ॥

卐

(तर्ज : छुप-छुप खडे जरूर)

श्री मन्दिर स्वामी तेरा ही आधार है ।

तेरा ही आधार प्रभु तू ही जगतार है ॥ टेर ॥

महाविदेह क्षेत्र में आप ही विराजते ।

भवी प्राणियो को भव सिंधु से तिरावता ।

करुणा नी धार प्रभु तेरा ही आधार है ॥ १ ॥

कंचन सी काया प्रभु आपकी सोहती ।
देख–देख छवी मेरे नैनों को मोहती ।
तुम ही तिरण–तारणहार हो . . . . ॥ २ ॥

आडे पर्वत वन नदियां सघन है ।
वैताड्या गिरी पर्वत एक ही अखण्ड है ।
किम कर आऊ मेरा ध्यान दिन रात है....॥३॥

अमोलक जीवन रत्न पाया कठिन से ।
जन्म जरा का दुःख छूटा न मुझ से ।
मोहनीय कर्म की माया अपरम्पार. है. . . ॥ ४ ॥

लक्ष चौरासी योनी से आई हूँ ।
एक सहारा प्रभु तेरा ही पायी हूँ ।
करती हूँ प्रेम से छोटी सी पुकार है. . . ॥ ५ ॥

विक्रम सवत दो हजार सात मे ।
कोटा शहर रामपुरा बाजार मे ।
'चन्दन' की नैया कब होगी बेडा पार है . . . . . ॥ ६ ॥

(तर्ज : हे श्रद्धे ! हृदय मन्दिर में आ)

चन्दा महाविदेह में जाय

ओ चन्दा महाविदेह में जाय ।। टेर ।।

मेरे स्वामी श्रीमिन्दर को,

वन्दन कहना जगदीश्वर को,

सादर शीश नमा ओ चन्दा . . . . ।। १ ।।

आते–जाते, जाते–आते,

प्रभु से कर आना दो बाते,

मुझ पर करुणा ला ओ चन्दा . . . . ।। २ ।।

कहना मेरी राम कहानी,

दर्शन की मैं वहुत प्यासी,

सदेशा ले जा, ओ चन्दा . . . . ।। ३ ।।

पहाड पडे है कर्म की रेखा वन,

नदिया बह रही भाग्य की रेखा वन,

कैसे आऊ वता, ओ चन्दा . . . ।। ४ ।।

पख नही जो उडकर आऊ,

चरण कमल के दर्शन पाऊं,

इतनी तो जाय सुना, ओ चन्दा . . . . ।। ५ ।।

कहना मेरी नाव तिरादो,

हृदय मन्दिर मे ज्योति जगा दो,

वतलावो शिववास, ओ चन्दा .. ॥ ६ ॥

इतनी तो है शान्ति केवल,

जैन धरम का पायी हूँ वल,

परमानन्द पद पाय, ओ चन्दा .... ॥ ७ ॥

卐

(तर्ज : श्री आदेश्वर स्वामी हो प्रणमु)

श्री श्री मिन्दर स्वामी हो, सिमरू शिवगामी भाव सु कांई

भवजल तारक देव ।

क्षेत्र विदेह सुखदाई हो कांई पुण्डरीक नगरी राजतां,

काई सारे सुर–नर सेव ॥ १ ॥

दूर देशावर वसिया हो, प्रभु पर्वत वन आडा घणा,

काई विखमी वाट कमूर ।

विद्या मुर वल नाही हो, वलि लब्धि नहि नभ गामिन,

प्रभु आऊ किस विध हजूर .... ॥ २ ॥

साहिब मुझ मन भाया हो, उमाया दर्शन देखवां
काई जैसे चन्द्र चकोर ।
मुझ पर महर करीजे हो, प्रभु दीजे दरसन दासने,
कांई मांगु कुछ नही ओर . . . . ।।। ३ ।।

अर्ज हमारी मानो हो, आपनो कर जानो दास को,
कांई करुणावत कृपाल, जन्म–मरण दुःखवारो हो,
प्रभु तारो भव सागर थकी, तुम छो दीनदयाल.....।। ४ ।।

पूरब पाप कमाया हो, जब आया दक्षिण भरत मे,
काई जानो तुम जिनराज, काईक पुण्य कमाया हो,
प्रभु नाम तुम्हारा नाथजी, सुनो गरीव निवास.... ।। ५

पिता श्रेयास कहाया हो, कांई जाया माता सत्य की,
काई रुकमणि रो भरतार, ऋषभ लक्ष्मण सुखकारी हो,
बलिहारी थारी नाथजी, काई वन्दन वार हजार. . . ।। ६

चिन्तामणि सम जाणू हो, नही नाम तुम्मारा विसरू,
समरु श्वासोश्वास, अमीऋषि ने दीजे हो,
प्रभु चरण कमल की चाकरी, कांई सफल करो मुझ
आस . . . . ।। ७

卐

(तर्ज : भजले–भक्त युक्त मणधार)

सुमरो विहरमान जिन बीस,

ईस यह जन्म–मरण मिटाय ॥ टेर ॥

श्रीमिन्दर भज भक्ती भाव सु,

युगमन्दिर सुख दाय ।

बाहु–सुबाहु–सुजात प्रभु का,

ध्यान धरो चितलाय ॥ १ ॥

स्वयप्रभु रिषभानन्दन का,

भजत विघन टल जाय ।

अनत वीर्य और सूरप्रभु का,

गुण गावो हरबार ॥ २ ॥

विशालधर और वज्रधर की,

कीर्ति रही जग छाय ।

चन्द्रानन और चन्द्रबाहु की,

महिमा वरणी न जाय ॥ ३ ॥

भूजंग ईश्वर स्वामी का सब,

घर–घर मंगल गाय ।

नेमप्रभु भज वीरसेन हो,

स्वर्ग मोक्ष में जाय ॥ ४ ॥

महाभद्र और देव जस का,

जाप--जपो सुखदाय ।

अजितवीर्य ये बीस तीर्थंकर,

महाविदेह के माय ॥ ५ ॥

भूत प्रेत और रोग न आवे,

जो हरदम प्रभु गुण गाय ।

पाप–ताप–सताप मिटे सब,

इनमे संशय नाय ॥ ६ ॥

दान–सियल–तप–भावना है,

भावो कर्म खप जाय ।

गुरु प्रसादे हरिऋषि यूं,

विहरमान गुण गाय ॥ ७ ॥

(तर्ज : तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोडों प्रणाम)

श्री श्रीमिन्दर स्वामी मेरे, प्यारे जिनन्द ।
तन-मन सब ही वारू मेरे, प्यारे जिनन्द ॥ टेर ॥

महाविदेह क्षेत्र में आप विराजो,
अहिसा के धर्म बताते,
भवि जीवो के काज ॥ मेरे प्यारे . . . . . ॥ १ ॥

अतिशय-चौतीस के तुम धारक,
पैंतीस वाणी के उच्चारक,
सहस्र अष्ठ गुणो के धार ॥ मेरे प्यारे . . ॥ २ ॥

दर्शन की मै वहुत पिपासी,
तुम दर्शन विन नही सुहाती,
धरूँ तुम्मारे ध्यान ॥ मेरे प्यारे . . . . . . ॥ ३ ॥

अमृत सम है आपकी वाणी,
भवी जीवों को लागत प्यारी,
चलता नही कुछ जोर ॥ मेरे प्यारे . . . . ॥ ४ ॥

भरत-क्षेत्र में मै हूँ रहती,
पख होवे तो उडकर आती,

लब्धि नही मेरे पास ।। मेरे प्यारे . . . . ।। ५ ।।

निश–दिन मै तो ध्याऊं प्रभु को,

आत्म कमलमां लब्धि प्रकाशो,

बैठो मेरे दिल पास ।। मेरे प्यारे . . . . . ।। ६ ।।

'सूर्य मुनि' तो गुण को गावे,

माणकमुनि शीश नमावे ।

वन्दन हो हरबार ।। मेरे प्यारे . . . . . . ।। ७ ।।

卐

(तर्ज : स्वामी सुधर्मा ओ गणधर पांचमा)

एक चित्त वन्दूं ओ, बेकर जोड ने,

श्री मिन्दर स्वामी ।। टेर ।।

पूरव दिशा ओ प्रभुजी परवर्या,

नगरी पुण्डरिक पुर सूख ठाम ।

बे कर जोडी ओ श्रावक वीनवे,

श्री मिन्दर स्वामी ।। १ ।।

चौतीस अतिशय ओ प्रभुजी परवर्या,
वाणी पन्दरह ऊपर बीस ।
एक सहस्र अष्ठ लक्षण धनि,
जीत्या राग ने रीस . . . . ॥ २ ॥

काया आपरी ओ धनुष्य पाच सौ,
आयु पूर्व चौरासी लाक ।
निरवद वाणी ओ श्री वीतरागनी,
ज्ञानी आगम मे गया भाख ॥ ३ ॥

सेवा सारे ओ आपरी देवता,
सुरपति थोडा तो एक करोड ।
मुझ मन मोंहे ओ हुस अति घणी,
जपसु नित उठ आपरो जाप ॥ ४ ॥

आडा पर्वत ओ नदिया अति घणी,
बिच में विकट विद्याधर वाट ।
इण भव माही ओ आय सकू नही,
मन्दना होय जो वारम्वार ॥ ५ ॥

कागद लिखसु ओ प्रभुजी प्रेम से,
नित उठ विनन्तडी अवधार ।
कुन्दन सागर ओ कृपा कीजिए,
वन्दना वारम्वार ॥ ६ ॥

(तर्ज : अब तो घुडला पर घूमे थारो बीन्द)

श्रीमिन्दर स्वामी साभलो, प्यारे भक्त खडा है तेरे द्वार,
श्रीमिन्दर स्वामी साभलो, ... ॥ टेर ॥

चार गति का दुःख भयकर, जिसे देख घवराई।
तन-मन-अर्पण है चरणो मे, अब तो भक्तों ने सभालो
श्रीमिन्दर स्वामी सांभलो ॥ १ ॥

काल अनादि भटकत आई, कही तिरन न पायो ।
अब तो आये गुरुदेवजी के चरणों मे, तार-तार-प्रभु तार
श्रीमिन्दर स्वामी साभलो ॥ २ ॥

रग–विरगी सुन्दर जगकी, माया मोहन गारी ।
ऊपर उजली, अन्दर काली, खूब किया हो परचार ।
श्रीमिन्दर स्वामी सांभलो ॥ ३ ॥

भोपालगढ़ में प्रभु गुण गाया, तन–मन–बहु हर्षाया ।
सिमरथ गुरुवर है चरणो मे, अब तो भक्तो ने सभालो
श्रीमिन्दर स्वामी सांभलो ॥ ४ ॥

卐

(तर्ज : वीरजी नी वाणी भली छे, माने लागे छे)

चादलिया जाजे सीमिन्दर देशमां,

केजे कहुँ सदेशमा . . . . . ।। टेर ।।

जीव मारे प्रभुजी, घणो मुंजाय छे ।

केम करी आऊ विदेशमां . . . . ।। १ ।।

दिल तरसे छे वहु, सेवा करवाने,

जाय जीवन कलेशमां . . . . . ।। २ ।।

रात–दिवस थारी, ज्योति निरखवां,

चोटयु छे दिल थारा फेसमां . . ।। ३ ।।

तारा वगर प्रभु, जीव आ मारो,

मोह्यो छे ससारी वेशमा . . . . ।। ४ ।।

आत्म कमलमा, लब्धि खिलववा,

खीचो जयत आप देशमा . . . . ।। ५ ।।

(तर्ज : दर्शन दो जिनराज, साहिब, श्री मिन्दर जिनराया)

तात श्रेयास राया, माता संतकी अपने जाया,
भले अवतरया जिनराज, श्रीमिन्दर जिनराया ।
दर्शन दो जिनराज, साहिव श्रीमिन्दर जिनराया ॥ १ ॥

आप महाविदेह क्षेत्र विराजो, काई आडी नदिया थागो,
आडा पर्वत पाड, श्रीमिन्दर जिनराया ।
दर्शन दो जिनराज, साहिव श्रीमिन्दर जिनराया ॥ २ ॥

लब्ध - विद्या नही पासे, काई देव न दीधि पाखे ।
उडकर आवती हजूर, श्रीमिन्दर जिनराया ॥ ३ ॥

मारी विनतडी अवदारो, माने चरण कमल बिच राखो ।
निरखू भर - भर नेन, श्रीमिन्दर जिनराया ॥ ४ ॥

सवत गुन्यासी भाई, उदियापुर शहर के माई ।
विनन्ती सोभागजी री मान, श्रीमिन्दर जिनराया ॥ ५ ॥

(तर्ज : जायजे भावज इण मोरिया रे लार....)

महाविदेह क्षेत्र में विज पुखलावती जाण जी,
काई नगरी रे कुण्डलपुर श्रीहंस अवतर्या २ ।। १ ।।

संत की नामा राणी छे सुखमालजी,
काई ज्यारीरेक कुक्षि मे प्रभुजी अवतर्या २, ।। २ ।।

सुर पति चवि ने पाया तीनों ही ज्ञान जी,
काई पेटज मेक पोढ्याओ दुनिया देखता ।। ३ ।।

चौंसठ इन्द्र आया बैठ विमानजी,
काई जनमरो मोछव कर सुरपति हरषिया ।। ४ ।।

भर जोवन मे परण्या रुकमणि नार जी,
काई रूपज रेक रूपज रभा सारिखो ।। ५ ।।

भरजोवन मे लीनो सजम भार जी,
काई पछे ओक पछे ओ केवल पामिया ।। ६ ।।

पेंतीस वाणी प्रभुजी करे वखाणजी,
काई वाणी रेक वरसे ओ अमृत सारीखी ।। ७ ।।

बारे परिषदा सुने वेकर जोड जी,
काई सुनता रेक म्हेर जरे मिथ्यात्व री ।। ८ ।।

जैन धर्म पायो गुरणीसारे प्रतापजी,
काई नरका री निगोद्यां रे दुःख सुन कांपिया ।। ९ ।।

मानोजी केवे सांभलो जो महाराज जी,
काई मारी विनन्ती ओक अरजी ओ साहिब
सांभलो ।। १० ।।

सवत् अठारे इगतीसां री साल जी,
कांई नवा रे नगर में ओ प्रभु गुण गाविया ।। ११ ।।

卐

(तर्ज :

श्री–श्रीमिन्दरजी महाराज, तन की ताप बुझाने वाले,
तन की ताप बुझाने वाले, सबका भरम मिटाने बाले ।। टेर ।।

दर्शन को दिल चाहता मेरा, मै हूँ आलस में घेरा,
देवो ज्ञान मिटे भव फेरा, जन्म का त्रास मिटाने वाले ।। १ ।।

तस्कर पाचो ने भरमाया, जो नही करना सो करवाया,
सब मिलकर गहरी जाल बिछाई, अब तो तुम ही बचाने
बाले ।। २ ।।

अरज करूँ जिनराज, तुम बिन कौन उतारे पार,
शरण आया कि रखिये लाज, तुम ही पार लगाने वाले ॥३॥

संकट हारण तुमारो नाम, दीजे मुगती आठोई याम,
अरज करे जसोदीलाल, भूले को राह दिखाने वाले ॥ ४ ॥

卐

(तर्ज : मा मोरादेवीजी गावे रे हालरियो)

श्री अरिहंत प्रभु, वन्दना स्वीकारो,
वन्दना स्वीकारो नाथ, भव से उवारो ॥ श्री ॥ १ ॥

महाविदेह क्षेत्र में, विचरण करते,
विहरमान प्रभु, नाम तिहारो . . . . . ॥ श्री ॥ २ ॥

कर्म खपाये प्रभु, केवल पाये,
जिनराज तेरे शुभ, नाम के सहारो . . ॥ श्री ॥ ३ ॥

पहुँच सकुँ नही, पास तुम्हारे,
कर्मों की राशि, बीच में अपारो . . . . ॥ श्री ॥ ४ ॥

वन्दणी करूँ तव, दर्शन पाऊ,
आज तो यहां से नाथ, वन्दना स्वीकारो......॥श्री॥५॥

सदगुरु सतपंथ बताओ,
भक्त आये आज शरण तिहारो. . . . ॥ श्री ॥ ६

卐

(तर्ज : सारी-सारी-रात तेरी)

जाये-जाये मेरे चन्दा महाविदेह जाये,
महाविदेह जाये चन्दा, सदेशा सुनाये रे,
सदेशा सुनाये ।। जाये-जाये मेरे चन्दा ।। टेर ।।

दीनों के नाथ प्रभु, श्रीमिन्दर स्वामी ।
अगणित तारे है, भविजन प्राणी ।
मोहे उबारो प्रभु, भव सागर से रे ।। १ ।।

दर्शन को प्रभु, दिल मेरा तरसे,
बिच मे है अटवी, वन मार्ग न दरसे,
साथी न मेरा कोई, जिया घबराये रे ।। २ ।।

बुलालो प्रभु मुझे, अपनी शरण में ।
यही विनन्ती मेरी, प्रभु चरण मे ।
करुणा के सागर अब, मत करो देरी रे ।।३।।

गुरुणीजी है मेरे, जैन जगत सितारे ।
चम-चम-चमके है, नभ के है तारे ।
ज्ञान की गगा बहादो, मेरे हृदय मे रे ।। ४ ।।

卐

(तर्ज : सारी–सारी रात तेरी)

श्रीमिन्दर स्वामी मेरी, सुनलो पुकार रे,
सुनलो पुकार प्रभु, अन्तरयामी ।
तारो प्रभुजी अब इस ससार से ॥ टेर ॥

डगमग नैया डोल रही है,
कर्म तरगे उछाल रही है ।
उबारो नैया मेरी इस तूफान से ॥ तारो ॥ १ ॥

राग–द्वेष की इन जजीरों ने,
जकड लिया है प्रभु पास मे अपने,
तोरो ए वन्धन मेरे, दुनिया के जाल से ॥ २ ॥

दर्शन विना, नैन तरसे,
ज्ञान सुनने को, श्रवण तरसे,
मिटादो प्यास मेरी, ज्ञान की धार से ॥ ३ ॥

गुरुणीजी है मेरे, दुःख निकन्दन,
कर दया काटो मेरे, भव २ के बधन,
अज्ञान तिमिर हटादो, मेरे हृदय से ॥ ४ ॥

(तर्ज : सुनो महाराजा जैन सरिखो माखा नहीं दूसरो)

सुणो चदाजी श्रीमिन्दर परमातमा पासे जावजो ।
मुझ विनतडी प्रेम धरी ने, इण पर तुम सभलावजो ॥ टेर ॥

जे त्रण भवन ना नायक छे,
जस चौसठ इन्द्र पायक छे ।
ज्ञान दर्शन जेहने क्षायक छे ।। सुणो.... ॥ १ ॥

जेंनी कचन वर्णी काया छे,
जस धोरी लछन पाया छे ।
पुडरिगिरी नगरी नोराया छे ॥ सुणो... ..॥ २ ॥

बारे परिषदा माहे विराजे छे,
जस चौतीस अतीशय छाजे छे ।
गुण पैंतीस वाणी ए गाजे छे ।। सुणो..... ॥ ३ ॥

भविजन ने प्रतिबोधे छे,
तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे,
रूप देखोने भवी जीव मोहे छे ॥ सुणो ...॥ ४

तुम सेवा करवा रसियो छु,
पण भरत-क्षेत्रमां वसियो छु ।
यहाँ मोह राय कर फंसियो छु ।। सुणो. ॥ ५ ॥

पण साहिब चित्त मां वसियो छे,
तुम आण खडग कर ग्रहियो छु ।
पण कार्इक मुझ तो डरियो छे ।। सुणो....।। ६ ।।

निज उत्तम पूठ हवे पूरो,
कहे पद्मविजय ध्याऊ सूरो ।
तो वाधे मुझ मन अति नूरो ।।सुणो......।। ७ ।।

(तर्ज : जिनंद मारी विनंतडी अवधारो)

महाविदेह क्षेत्र विराज्या हो स्वामी,
गुण गाऊ सिरनामी जिनन्द मारी विनतडी अवधारो ।
हो जी माने भव–जल पार उतारो,
जिनद मारी विनतडी अवधारो ॥ टेर ।।

दूर दिसावर अति घणो आगो,
आवण रो नही थागो ।। १ ।।
दर्शन चाऊ ने किस विध आऊ,
निशदिन तुम गुण गाऊ ।। २ ।।

लब्ध विद्या नही पाख न मारे,

हाजर आऊ तुम्हारे ॥ ३ ॥

पाचमो आरो नही मारो सारो,

अधम उद्धारण हारो ॥ ४ ॥

चौसठ इन्द्र करे आपरो सेवा,

वाणी अमृत मेवा ॥ ५ ॥

धन भव प्राणी सुने आपरी वाणी,

पूरब सुकृत जाणी ॥ ६ ॥

श्रीमिन्दरजी सुणो मारी अरजी,

राखो पूरण मरजी ॥ ७ ॥

उतरते मिगसर मगलवारो,

जडावजी जपे जयकारो ॥ ८ ॥

(तर्ज : ग्यारा ही गणधर जी का गुण गाऊं)

वीस विहरमुनि जी का गुण गाऊ।
पक्खि ए सम्बन्धी मे ही खमाऊँ ।। टेर ।।

श्रीमिन्दर स्वामी ने, युगमिन्दर स्वामी ।
बाहुजी स्वामी ने, सुबाहु स्वामी ।
सुजात स्वामी ने, स्वय प्रभु स्वामी ।
ऋषभानन्दन स्वामी ने, अनन्तवीर्य स्वामी ।
सूरप्रभुजी ने शीश नमाऊ ।
पक्खिए सम्बन्धि मे हो खमाऊँ, ... ।। १ ।।

विशालधर स्वामी ने, वज्रधर स्वामी ।
चन्द्रानन स्वामी ने, चन्द्रबाहु स्वामी ।
भुजंग स्वामी ने, ईश्वर स्वामी ।
नेमप्रभु स्वामी ने, वीरसेन स्वामी ।
महाभद्र स्वामी ने, देवजस स्वामी ।
अजितवीर्य जी ने, शीश नमाऊं ।
पक्खिए सम्बन्धि मे हो खमाऊँ . . . ।। २ ।।

महाविदेह क्षेत्र मे आप विराजो ।
चौपों नो आरो वांही जो वरते ।

पांच सौ धनुष्य री काया तुम्हारी ।
लक्ष चौरासी आयु तुम्हारी ।
स्फटिक सिहासन आप विराजो ।
तीन तो छत्र आप रे सिर पर सोहे ।
चार तो चामर आप रे वींजे ।
चौसठ इन्द्र आपरे सेवा जी मारे ।
पक्खिए सम्बन्धि मे हु खमाऊ ।। ३ ।।

नही माने विद्या ने, नही माने लब्धि ।
नही माने पाख प्रभु किस विध आऊँ ।
आडा तो पर्वत नदियां घणेरी
भरत–क्षेत्र सु मारी वन्दना जी मानो
पूज्य महाराज श्री अमोलक ऋषिजी ।
'सायर' 'पदम' निश दिन गुण गावे ।
पक्खि ए सम्बन्धी मे ही खमाऊँ ।। ४ ।।

(तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की)

जय जय हो बीसो जीनवर की,

जय जयवता जगदीश्वर की ।। टेर ।।

श्रीमदीर युगमिदर देवा,

करू वाहू सु बाहू की सेवा

नुजान स्वयं प्रभू गणा वर की ।। जय . . . ।। १ ।।

श्र ऋषभानन आनन्द करे

फिर अनत विर्य का ध्यान धरे

मुर प्रभू विशाल मुनी वज्रधर की ।। जय. .।। २ ।।

चन्दानन–चन्द्रवाहु–प्यारा

भुजग–इश्वर–मुखकारा

श्री नेम प्रभूवर हितकर की ।। जय . . . . ।। ३ ।।

वीर मेन–महा भद्र–मनो हारा

देवा यस हमारा रखवाला

श्री अजित वीर्य प्रभू मुखकर की ।। जय . . . ।। ४ ।।

जो निर्मल मन मे ध्यान धरे

तन–मन के संकट दूर हरे

जय हो पुष्कर शिवकर की ।। जय . . . . . ।। ५ ।।

स्तवन विभाग

(तर्ज : वाह–वाह री सती चन्दना)

जिवडा से प्यारा गुणधर जी

हिवडा से प्यारा गुणधर जी

कर जोडी ने नित उठ शीश नमाऊं ओ गुणधरजी

हिवडा से प्यारा गुणधर जी ... ॥ टेर ॥

इन्द्रभूती पहला नमूं, अग्निभूतिजी महाराज ।

वायभूतिजी ने ध्यावता, कर्म मैल कट जाय ।

ये तीनों ही एक मात का जाया ओ गुणधरजी,

हिवडा से प्यारा गुणधरजी .... ॥ १ ॥

विगतभूति चौथा नमूं, सुधर्मा पांचमा जाण ।

वीरजी रे पाट विराजिया, ऊग्या जग में भाण ।

जम्बु सरीखा शिष्य जिनों ने पाया ओ गुणधरजी

हिवडा से प्यारा गुणधरजी .... ॥ २ ॥

मडी–मौर्यपुत्रजी, अंक पिता सुखदाय ।

अचल मेतारज ने नमूं, भाव भक्ति चित्तलाय ।

ये इग्यारहमा श्री प्रभासजी मेरे मन भाया ओ गुणधरजी

हिवडा से प्यारा गुणधरजी .... ॥ ३ ॥

(तर्ज : वाह–वाह री सती चन्दना)

जिवडा से प्यारा गुणधर जी

हिवडा से प्यारा गुणधर जी

कर जोडी ने नित उठ शीश नमाऊ ओ गुणधरजी

हिवडा से प्यारा गुणधर जी . . . ।। टेर ।।

इन्द्रभूती पहला नमू, अग्निभूतिजी महाराज ।

वायभूतिजो ने ध्यावता, कर्म मैल कट जाय ।

ये तीनों हो एक मात का जाया ओ गुणधरजी,

हिवडा से प्यारा गुणधरजी . . . . ।। १ ।।

विगतभूति चौथा नमू, सुधर्मा पांचमा जाण ।

वीरजी रे पाट विराजिया, ऊग्या जग में भाण ।

जम्बु सरीखा शिष्य जिनों ने पाया ओ गुणधरजी

हिवडा से प्यारा गुणधरजी . . . . ।। २ ।।

मंडी–मौर्यपुत्रजी, अक पिता सुखदाय ।

अचल मेतारज ने नमू, भाव भक्ति चित्तलाय ।

ये इग्यारहमा श्री प्रभासजी मेरे मन भाया ओ गुणधरजी

हिवडा से प्यारा गुणधरजी . . . . ।। ३ ।।

ये इग्यारे गया श्री वीर पे, धरत मन अभिमान।
वचन सुणिया श्री वीर का, तुरत थया गलतान,
शिष्य मण्डली सहित, संयम ठाया ओ गुणधरजी ॥ ४॥

प्रवल लब्धि आपकी, जैसा गणधर नाम।
जप–तप–खूव कमाय ने, सारया आतम काज।
ऐसा गणधर नमू के, मन-वच-काया ओ गुणधरजी ॥५॥

नव गणधर प्रभुजी से पहले, पहुँच्या शिवपुर धाम।
पहला गौतम और पांचमा, ज्यारा नाम सुधर्मा जाण।
ये दोनों वीरजी रे पीछे, मोक्ष सिधाया ओ गुणधरजी
॥ ६

ऐसे गुणधर नित उठ रटू, इण गुण पर ध्यान लगाय,
रतन कँवर कहे सुन प्राणिया, ज्यू उतरो भव पार।
साजापुर में रत्न कँवर, हर्षाया ओ गुणधर जी ॥ ७

(तर्ज : गुणधरजी रा गुण गावसां....)

इन्द्रभूतिजी गौतम स्वामी,
एतो अग्निभूति गणधर बीजा ओ लाल,
वायभूतिजी ने विगत स्वामी,
ज्यांरा चरण–कमल नित वदु ओ लाल,
गुणधरजी रा गुण गावसां ...... ॥ १ ॥

पाचमा गुणधर गुणा केरा सागर,
एतो वीरजो रे पाट विराज्या ओ लाल,
चारों ही संघ में शशि जिन सोहे,
ज्यांरा नाम सुधर्मा वाज्या ओ लाल,
गुणधरजी रा गुण गावसां .... ॥ २ ॥

मडीपुत्रजी ने मौर्यपुत्रजी,
एतो ज्ञान गुणां का भरिया ओ लाल,
वैरागी लव लागी मुगत सुं,
एतो गुरु चरणा में चित्त धरिया ओ लाल,
गुणधरजी रा गुण गावसां ॥ ३ ॥

अकपिताजी तो आठमा गुणधर,
एतो भाव सुं ज्ञानी गुरु भेंटया ओ लाल,
अचल पिता निज आतम तारी,
एतो भव-भव ना दु.ख मेट्या ओ लाल,
गुणधरजी रा गुण गावसा ॥ ४ ॥

मेतारज ने श्री प्रभासजी, एतो एकादस उत्तम प्राणी ओ लाल,
अतर मोरत अनुभव पाम्या,
एतो चौदह पूरव चउ नाणी ओ लाल
गुणधरजी रा गुण गावसा ॥ ५ ॥

चमालीस सौ एक दिन सयम लीना,
एतो जनम–मरण सुं डरिया ओ लाल,
ये इग्यारे ही ब्राह्मण कुल का,
एतो वीरजी री वाणी सुनी भीना ओ लाल
गुणधरजी रा गुण गावसा ॥ ६ ॥

कठिन करम दल ताप कर तोड़्या,
एतो शुद्ध मन समता आनी ओ लाल,
नव गणधर वीरजी रे पेला,
एतो पहुँच्या मोक्ष मझार ओ लाल,
गुणधरजी रा गुण गावसा ॥ ७ ॥

स्वामी खुशालचन्दजी गुणां केरा सागर,
एतो ज्ञान गुणा का प्यासा ओ लाल,
भगवान दासजी भला–भाव सु जोडी,
एतो जुगती सु जोड प्रकाशी ओ लाल,
गुणधर जी रा गुण गावसां ॥ ८ ॥

(तर्ज : मत भूलो कदा रे मत भूलो)

कर कुमति बिदा, कर कुमति विदा,

स्वामी सुधर्मा ने वंदु सदा ॥ टेर ॥

वीरजी रे विराज्या प्रथम पाट,

सुधो बताई जाने मुगति की वाट ॥ १ ॥

सजम लियो धारणी के अगजात,

गुरु भेट्या जाने त्रिलोकी नाथ ॥ २ ॥

सौ वर्ष की आयु पाया तास,

पचास वरष रह्यो गृहवास ॥ ३ ॥

मति–श्रुति–अवधि–मलपर्यव ज्ञान,

चौदह पूरब विद्या प्रमाण ॥ ४ ॥

बैयालीस वरष ध्यायो निर्मल ध्यान,

प्रगट हुवो पीछे केवल ज्ञान ॥ ५ ॥

रूप दीपे जाको जगमग ज्योत,

देवता से पण अधिक उधोत ॥ ६ ॥

जम्बु सरीखा ज्याने शिष्य विनीत,

रात दिवस जांको चरणा में चित्त ॥ ७ ॥

वाणी प्रकाशी जैसे अमृत की धार,

सूत्र रचा जाको आज आधार ॥ ८ ॥

आठ वरष केवल प्रव्रज्या पाल,

मुगति विराज्या पीछे दीन दयाल ॥ ९ ॥

पाट विराज्या जांको जम्बु अणगार,

परम वैरागी घणो कियो उपकार ॥ १० ॥

चमालीस वर्ष पायो केवल ज्ञान,

ते पण पाया प्रभु शिवपुर स्थान ॥ ११ ॥

सुधर्मा स्वामी ने जम्बु अणगार,

चरण नमु जाने वारम्वार ॥ १२ ॥

खूबचन्दजी कहे मेरे गुरु नन्दलाल,

तिन प्रसादे गायो त्रेपन की साल ॥ १३ ॥

*

(तर्ज : चांदलिया जाजे श्रीमिन्दर देशमां)

वीरजी ने वाणी भली छे,

ओ मने लागे छे सारवर जेम रे ॥ टेर ॥

इन्द्रभूतिजी ने अगनभूतिजी,

वायभूति सुखकार रे ॥ १ ॥

विगतभूतिजी ने सुधर्मा स्वामी,

जम्बु सरिखा शिष्य रे .... ॥ २ ॥

मडी पुतरजी ने मौर्य पुतर जी,

अक पिता सुखदाय रे ॥ ३ ॥

अचल–मेतारज ने श्री प्रभासजी,

मोक्ष नगर में वास रे . . . . ॥ ४ ॥

वीरजी ना मुखडा थी पुष्फ खिरे छे,

गणधर गूंथे छे माल रे . . . , ॥ ५ ॥

सीख्या है अंग ने, सीख्या उपांग छे,

सीख्या है आगम नो सार रे ॥ ६ ॥

चार ज्ञान चौदह पूरव रा पाटी,

लब्धि अठाईस जाण रे ॥ ७ ॥

संवत उन्नीस सौ ने साल अडतीस,

दया कंवर गुण गाय रे ॥ ८ ॥

卐

(तर्ज :

महा भारत के बीच फैला दिया झंडे को महावीर ने,
गूथ लिया आगम को गुणधर ने ॥ टेर ॥

इन्द्रभूतिजी ने अगनभूतिजी

वायभूति वादसा . . . .महाभारत ॥ १ ॥

विगत मुनि सुधर्मा स्वामी,

जम्बु पति शिष्य कहलाये ॥ २ ॥

मंडि–मौर्य–अंक पिताजी, अचल मेतारज

श्री प्रभासजी, प्रभु के गुणधर हैं ॥ ३ ॥

नव गणधर प्रभु के पहले,

मोक्ष सिधाये है ॥ ४ ॥

गौतम गणधर, स्वामी सुधर्मा,

वाद मे मोक्ष सिधाये है ॥ ५ ॥

गुरणीजी के चरणो मे सज्जन कॅवरजी विनमे,

शहर नासिक ग्राम ॥ ६ ॥

★

(तर्ज : आगा एम पधारो पूज, हम घर वेरण वलिया)

वीर जिनन्द वांदी ने गौतम गोचरिया सचरिया,

पलासपुर नगरी मे गौतम घर-घर आंगन फिरिया,

आगा एम पधारो पूज हम घर वेरण वलिया ॥ टेर ॥

तिण अवसर एवंता रमता २,

मन गमता मुनिवर दीठा ।

कंचन वरणी काया प्रभु जी

मन में लागो मीठा ॥ १ ॥

बालक बोले इमरत वाणी,

कॅवर बोले इमरत वाणी ।

सुनजोजी अभि राणा,

खडी दोपरा पाय उलवाणा

वम्वो छो किण कामा . . . . ॥ २ ॥

सुन–सुन बालक राय सोभागी, सुन–सुन कँवर राय सोभागी,
तुरत घोषणा करसा, ना अतिचार ना निरदोष,
भावे भिक्षा लेसां . . . . ॥ ३ ॥

आइजो आज हमारे मन्दिर २, थे केओ सो करसां,
थे केओ तो दीक्षा लेसा, भावे भिक्षा देशा . . . . . . ॥ ४ ॥

थे कय्या में तुझ घर आया २, मन मे थया आनन्दा।
आवतडा जानीने राणियां, विधि से गौतम वाद्य . . ॥ ५ ॥

आज मारे आगन रत्न चितामणि २, मेष अमिरस बूठा,
के मारे आगण सुर तरू फलिया, गौतम रा मुख
दीठा . . . . ॥ ६ ॥

तू बालूडा बहु गुणवता, तू नानडिया बहु गुणवता,
गुणधर गोतम लाया, थाल भरिने मीठा मोदक, भाव सुं
बेराया . . . . ॥ ७ ॥

गुरु ज्ञानी गौतम जानी ने २, माथे हाथ धरैय्या,
भागन्या माताजी रे लेइने, सघला साथे चालया . . . ॥ ८ ॥

बालक केवे माने भारज आपो, कवर केवे माने भारज आपो,
भार घणो तुम पासे, गौतम केवे हम किनने नही आपा,
दीक्षा लो हम पासे . . . . ॥ ९ ॥

दीक्षा लेसा स्वामी हम तुम पासे २, भारज मुझने आपो,
मागन्या किना सा री लाऊ, माय मुखलाया साथे. . . ॥१०॥

हाथ जोड प्रभुजी ने विनवे २, दीक्षा दो स्वामी याने।
रदमान बोलावण दो स्वामी, मोक्ष मार्ग दो याने.....॥११॥

साधु सगाते वन संचरिया २, मेघ अमिरस वूठा,
सघला ही मुनीश्वर स्थानक आया, एवंता एक रैय्या. ॥१२॥

नानी सरोवर नानी भाजा २, नदिया नाव तिराया,
बालक रमणि रमता मुनिवर, एवंता एक रैय्या. . . . ॥१३॥

तू बालूडा यू मत कीजे, तू नानडिया यू मत कीजे,
ज्ञान री ज्योति जगायजे, छः काया री विराधना करीने,
दुर्गति रा फल लीजे. . . .॥१४।

मन में लाज घणेरी आई, मन मे शरम घणेरी आई।
समोसरण में आया, इरियावहियं पडिक्कमणो करने।
केवल ज्ञान उपजाया . . . . ॥ १५

हाथ जोड प्रभुजी ने विनवे २, स्वामी कितना भव ये करा
स्वारथ सिद्ध सु चवकर आया, इण भव मोक्ष जासी..॥१

(तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेश)

गौतमजी करे अरदास, रखा नहीं पास।
मुझे विसराया, अन्तिम दर्शन नही पाया ॥ टेर ॥

कहा देव श्रमण को समझाओ, आज्ञा दी गौतम जाओ,
पीछे प्रभुजी आप मोक्ष सिधाया ॥ १ ॥

मै नही आपके सग आता, पल्ला भी पकडा नही जाता,
फिर किम कारण मुझे न भेद बताया ॥ २ ॥

मै किसके शरणां बैठूगा, सशय भी किससे मेटूगा,
मिलता प्रभुजी मुझे ज्ञान मन चाया ॥ ३ ॥

गौतम कहकर कौन पुकारेगा, मीठे शब्दों से कौन उचारेगा,
अब तो भई सपनो को यह माया ॥ ४ ॥

पलटा विचार मन मे आया, वीतराग प्रभु तो शिव पाया,
छोड्या है मोह ध्यान शुभ शुभ ध्याया ॥ ५ ॥

घनघाती कर्मो का नाश किया,
फिर केवल ज्ञान प्रकाश किया,
गौतम प्रभुजी मोक्ष तणा सुख पाया ॥ ६ ॥

[सं]वत दो हजार छ का आया, चौमासा रत्नपुरी ठाया,
[भी]म चौक मे चौथमल ने गाया ॥ ७ ॥

(तर्ज : आवो-आवो हे जगत उद्धारक त्रिशला)

[आव]ो-आवो ए वधु वहिणो, गणधर के गुण गावो ॥ टेर ॥
इन्द्रभूतिजी ने अगनभूतिजी, वायभूतिजी ने ध्यावो,
विगत सुधर्मा पचम कहिये, जम्बु शिष्य कहावो ॥ १ ॥
मडी मौर्य अक पिताजी, अचल-अचल ने ध्यावो,
मेतारज ने श्री प्रभासजी, एकादस गणधारो ॥ २ ॥
प्रात. उठी ने जो नर-नारी, गणधर के गुण गावे,
गुरनी प्रसादे जडाव कँवरजी कहे, अमरापुरी मे जावे ॥ ३ ॥

(तर्ज : सेवो सिद्ध सदा जयकार)

भज ले भक्त युवत गणधार, सदा ही वरते मंगलाचार ।।टेर।।

इन्द्रभूति है गौतम गणधर, ज्ञान गुण भण्डार।
अग्निभूति और वायभूति का, जाप जपो सुखकार ।। १ ।।

विगतभूति है मोटा मुनिवर, केवल ज्ञान के धार।
सुधर्मा स्वामी वीर प्रभु के, गादी के है धार ।। २ ।।

मंडीपुत्र और मौर्यपुत्र का, गुण गावो हर वार।
अकंपिता और अचल भ्रात ने, तार दिये नर-नार ।। ३ ।।

मेतारज ने श्री प्रभासजी, एकादस गणधार।
हुए शिष्य महावीर प्रभु के, लब्धि तणा भण्डार ।। ४ ।।

ऐसे ऋषभादिक चौवीसी, जिनवर के गुणधार।
सब मिलकर चौदे सौ बावन, पहुँचे मोक्ष मझार ।। ५ ।।

कलपवृक्ष और चिन्तामणि सम, चिन्ता चूरण हार।
काम धेनु और काम कुंभ सम, इच्छा पूरण हार ।। ६ ।।

गुरु प्रसादे हरि ऋषि कहे, सुमरो वारम्बार।
गणधर को निश दिन ध्याने से, रोग न आवे लिगार ।। ७ ।।

卐

(तर्ज : लेके पहला-पहला प्यार)

प्रभु तुम थे तारणहार, मुझको छोड चले मझधार ।
तेरी नगरी मे तेरे बिन, लागे मोहे डर ।। टेर ।।

प्रीत तगाकर ओ निर्मोही, छोड चले पर खबर न काही ।
मुझको छोड चले मझधार, अब मै किससे करू विचार ।।१।।

गौतम-गौतम कौन कहेगा, विपदा मेरी कौन हरेगा ।
मैं तो रो-रो करूँ पुकार, मेरा कोई नही गम खार ।। २ ।।

कौन हरेगा विपदा मेरी, चारो तरफ अब घोर अंधेरी ।
मैं तो पडा था तेरे द्वारा, मुझसे कहना था इकवार ।। ३ ।।

सब कुछ मेरा लुट ही गया है, तेरा सहारा छुट ही गया है ।
डगमग डोले मेरी नाव, इकबार आजा खेवनहार ।। ४ ।।

वीतरागी प्रभु तुम हो निरागी, भूल में था प्रभु ममता थी मेरी,
बोले गौतम बारम्बार, केवल ज्ञान हुआ तत्काल ।। ५ ।।

लक्ष्मी पुकारे विपदा के मारे, आये प्रभुजी द्वार तुम्हारे ।
जो भी आया तेरे द्वार, उसकी नैया भव से पार ।। ६ ।।

(तर्ज : सेवो सिद्ध सदा जयकार)

भज ले भक्त युवत गणधार, सदा ही वरते मंगलाचार ॥टेर॥

इन्द्रभूति है गौतम गणधर, ज्ञान गुण भण्डार ।
अग्निभूति और वायभूति का, जाप जपो सुखकार ॥ १ ॥

विगतभूति है मोटा मुनिवर, केवल ज्ञान के धार ।
सुधर्मा स्वामी वीर प्रभु के, गादी के है धार ॥ २ ॥

मडीपुत्र और मौर्यपुत्र का, गुण गावो हर वार ।
अक पिता और अचल भ्रात ने, तार दिये नर-नार ॥ ३ ॥

मेतारज ने श्री प्रभासजी, एकादस गणधार ।
हुए शिष्य महावीर प्रभु के, लब्धि तणा भण्डार ॥ ४ ॥

ऐसे ऋषभादिक चौवीसी, जिनवर के गुणधार ।
सब मिलकर चौदं सौ बावन, पहुँचे मोक्ष मझार ॥ ५ ॥

कलपवृक्ष और चिन्तामणि सम, चिन्ता चूरण हार ।
काम धेनु और काम कुंभ सम, इच्छा पूरण हार ॥ ६ ॥

गुरु प्रसादे हरि ऋषि कहे, सुमरो वारम्बार ।
गणधर को निश दिन ध्याने से, रोग न आवे लिगार ॥ ७ ॥

卐

(तर्ज : लेके पहला-पहला प्यार)

प्रभु तुम थे तारणहार, मुझको छोड चले मझधार।
तेरी नगरी मे तेरे बिन, लागे मोहे डर ॥ टेर ॥

प्रीत लगाकर ओ निर्मोही, छोड चले पर खबर न काही।
मुझको छोड चले मझधार, अब मै किससे करू विचार ॥१॥

गौतम-गौतम कौन कहेगा, विपदा मेरी कौन हरेगा।
मै तो रो-रो करूँ पुकार, मेरा कोई नही गम खार ॥ २ ॥

कौन हरेगा विपदा मेरी, चारों तरफ अब घोर अंधेरी।
मै तो पडा था तेरे द्वारा, मुझसे कहना था इकबार ॥ ३ ॥

सब कुछ मेरा लुट ही गया है, तेरा सहारा छुट ही गया है।
डगमग डोले मेरी नाव, इकबार आजा खेवनहार ॥ ४ ॥

वीतरागी प्रभु तुम हो निरागी, भूल में था प्रभु ममता थी मेरी,
बोले गौतम वारम्बार, केवल ज्ञान हुआ तत्काल ॥ ५ ॥

लक्ष्मी पुकारे विपदा के मारे, आये प्रभुजी द्वार तुम्हारे।
जो भी आया तेरे द्वार, उसकी नैया भव से पार ॥ ६ ॥

(तर्ज : रे जीवा जिन धर्म कीजिए)

गौतम गणधर वंदिए, पूरण लब्धि तणा भण्डार रे,
जीवा गौतम गणधर वंदिए ॥ टेर ॥

चौवीसमा वर्द्धमान के, चेला चतुर सुजान रे जीवा,
सब साधां में शिरोमणि, ऊग्या जगत में भाण रे जीवा ॥१॥

चौदह पूर्वना पाटिया, ज्ञान चार वखान रे जीवा,
तपस्या करी चित्त निर्मलो, नही मन में आयो गिलयान रे
जीवा गौतम गणधर वंदिए. . . .॥२॥

पर्वत में मेरू बडो, सीता नदिया के माय रे जीवा।
स्वयम्भूरमण दधिया विषे, ऐरावत गज माय रे जीवा ॥३॥

सब रस मे इक्षु रस बडो, दान मे बडो अभय दान रे जीवा।
सम अनेक है ओपमा, कहाँ लग करूं जो वखाण रे जीवा॥४॥

सर्व बाणु वरषणो आउखो, दश युग रह्या घर माय रे जीवा,
पीछे एवा गुरु भेटिया, चौविसमा जिनराज रे जीवा ॥ ५ ॥

तीस वरष छद्मस्त रह्या, पछे ध्यायो शुक्ल ध्यान रे जीवा,
केवलज्ञान द्वादश वरष ते, पालने पाया पद निर्वाण रे जीवा
॥ ६ ॥

अनत सुखा मे विराजिया, माता पृथ्वी के नन्द रे जीवा।
खूबचन्द जी कहे थारा नाम से, होवे जय–जयकार रे जीवा॥७॥

★

(तर्ज : ख्याल की)

गणधर नमुंजी, श्री वीरना पाटवी ।। टेर ।।

इन्द्रभूतिजी और अगनभूतिजी काई, वायभूति मुनिराज ।
ये तीनों बधव सगाजी कांई, लीधो संजम भारजी.....।। १ ।।
विगत सुधर्मा ध्यावतांजी काई, खुले बुद्धि अपार ।
सुख पामे शिवपुर तणाजी कांई, टूटे आठों कर्म जी....।। २ ।।
मडीपुत्र और मौर्य पुत्र जी कांई, आठमा अकपिता जाण ।
अचल मेतारज ने हूँ नमु जी काई,

इग्यारेमा श्री प्रभासजी....।। ३ ।।

नव गणधर प्रभुजी पहले जी काई, पहुँच्या शिवपुर धाम ।
दोय गणधर प्रभुजी पछे जी कांई,

सारया आतम काजजी..... ।। ४ ।।

अन्तर मोरत में हुवा जी कांई, चवदे पूरव ज्ञान ।
लब्धि अठाईस रा धणी जी काई,

राख्यो जुग में नामजी......।। ५ ।।

गुणधरजी रा गुण गावतां जी काई, पामे सुख भरपूर ।
रोग शोक दु.ख आपदाजी काई,

सिवरियां होवे दूर जी......।। ६ ।।

सम्वत उन्नीस सौ गुनसठ मे जी कांई, गांव कुचेरा रे मांय ।
भादवा सुद पचमी दिनेजी कांई,

हुलास कँवर गुण गाय जी.....।। ७ ।।

(तर्ज : एक चित्त वन्दु ओ वे कर जोड ने)

स्वामी सुधर्मा ओ वीरजी रा पाटवी ।। टेर ।।

स्वामी सुधर्मा ओ गणधर पाचमा, गुरु भेंट्या वर्धमान,
परम उद्धारक हा रूप सुन्दर, अनुत्तर सुर अवतार ।। १ ।।

कोलकग्राम ओ धर्मिला तुम पिता, भद्दिला तुम्हारी माता,
वरष पचास ओ घर मे तुम रह्या, भेंट्या श्री जगन्नाथ ।।२।।

सौ वरष नो ओ पूरो आउखो, केवली वरष है आठ,
सुर नर इन्द्र ओ सेवा करे, पाचमा आरा के माय ।। ३ ।।

जम्बु सरीखा ओ शिस्य आप रे, वैरागी उत्कृष्ठा जान,
रमणी आठ ओ छिन्नु करोड दाय जो, परणी तजी परभात
।। ४ ।।

सोलह वरष ओ सजम आदरया, केवली वरष चमालीस,
चरम केवली ओ जम्बु शिव गया, अस्सी वरष आयु रसाल
।। ५ ।।

जम्बु स्वामी ओ सब पूछा करी, भाख्या सुधर्मा स्वामी,
ऐसा मुनीवर ओ मन-वच-काय सु, नित्य वंदे मुनीराम
।। ६ ।।

(तर्ज : जिया बेकरार है....)

हृदय की पुकार है, मिलने की आश है ।
आवो प्यारे गणधरजी, आये तेरे द्वार है ॥ टेर ॥

इन्द्रभूतिजी और अग्निभूतिजी, वायभूतिजो ध्यावे है ।
विगट सुधर्मा पचम जाणू, जम्बु शीश नमावे है ।। १ ।।

मडी मोरी अकपिताजी, अचल–अचल मन भाये है,
मेतारजजी श्री प्रभासजी, सगलाई मोक्ष सिधाये है ।। २ ।।

सवत दो हजार अठारह का, मनमाड़ चोमासा ठाया है,
गुरणीसा की आशा पूरो, चॉद कँवर यू गावे है ।। ३ ।।

卐

(तर्ज : राती माला पेरो जडाव री रे लाल)

ये तो इन्द्रभूतिजी पेला नमु रे लाल,
ये तो अगनभूतिजी दूजा जान रा दयाल,
लाल था विना परसन कुण करे रे लाल ।। टेर ।।

ये तो वायभुतिजी तीजा नमु रे लाल,
ये तो विगतभूति चौथा जाण रा दयाल,
लाल था विना परसन कुण करे रे लाल ।। १ ।।

ये तो स्वामी सुधर्मा पाचमा रे लाल,
ये तो मंडी मोरी जाण रा दयाल,
लाल थां विना परसन कुण करे रे लाल ।। २ ।।

ये तो अकपिताजी आठमां रे लाल,
ये तो अचल–मेतारज श्री प्रभास रा दयाल,
लाल था विना परसन कुण करे रे लाल ॥ ३ ॥

ये तो चमालीस सौ ही सजम आदर्या रे लाल,
ये तो एकन दिन रे मांय रा दयाल,
लाल था बिना परसन कुण करे रे लाल ॥ ४ ॥

ये तो इग्यारे गणधर वादसा रे लाल,
ये तो ब्राह्मण कुल अवतार रा दयाल,
लाल था बिना परसन कुण करे रे लाल ॥ ५ ॥

ये तो अन्तर मोरत मे बनीया घणा रे लाल,
ये तो हुआ पूरब रा जाण रा दयाल,
लाल थां बिना परसन कुण करे रे लाल ॥ ६ ॥

ये तो छत्तीस हजार परसन पूछिया रे लाल,
ये तो सूतर भगवती रे माय रा दयाल,
लाल था बिना परसन कुण करे रे लाल ॥ ७ ॥

ये तो सम्वत अठारे वावने रे लाल,
ये तो बूसी गाव चौमास रा दयाल,
लाल थां बिना परसन कुण करे रे लाल ॥ ८ ॥

ये तो बाई नवला गुण गाविया रे लाल,
ये तो नवा रे नगर माय रा दयाल,
लाल थां विना परसन कुण करे रे लाल ॥ ९ ॥

★

(तर्ज : सुनजो वीनन्ती ओ राज, मारासा)

मारासा इन्द्रभूति अणगार,
मारासा अगनभूतिजी ने वीर बखाणिया ओ राज ॥ १ ॥

मारासा वायभूति, विगत साम,
मारासा स्वामी ने सुधर्मा री सुनजो वीनन्ती ओ राज ॥२॥

मारासा मडी मौर्य अकपीत,
मारासा अचल मेतारज श्री प्रभास नमु ओ राज ॥ ३ ॥

मारासा सन्मुख दियो उपदेश,
मारासा गणधर हुआ ओ श्री महावीर रा ओ राज ॥ ४ ॥

मारासा लीनो है सयम भार,
मारासा लब्धि तो पायी ओ केवल ज्ञान री ओ राज ॥ ५ ॥

मारासा मानो जी भणे रे हुलास,
मारासा शहर ने पीपाड़ छप्पन्ना री साल में ओ राज ॥ ६ ॥

(तर्ज : मेरा जीवन कोरा कागज....)

मुझे तजकर मेरे भगवन, किधर चल दिये ।
बिन तुम्हारे आज गौतम, किस तरह जिये ॥ टेर ॥

हो दयालु माफ करदो, यदि हुई कुछ भूल ।
मन पटल पर चुभ रहे है, वेदना के शूल ।
कौन से है ! पाप मेरे अब उदय हुए . . . . . ॥ १ ॥

कुछ कहा ना सुना मुझको, चल दिये चुपचाप ।
कौन समझे पीर मेरी, जब न समझे आप ।
वीर की नित वाट जोहते, नैन वह रहे . . . . ॥ २ ॥

मोह–माया मे फँसा रे मन, मन तुझे धिक्कार ।
वीर जिनेश्वर को किसी से, वैर है प्यार ।
प्रथम गणधर ! हुए गौतम सरस जय कहे. . . ॥ ३ ॥

(तर्ज : बीस विहर मुनि जी का गुण गाऊँ)

इग्यारे ही गणधर जी का गुण गाऊँ,
पविख ए सम्बन्धी मे ही खमाऊँ ॥ टेर ॥

इन्द्रभूतिजी ने. अगनभूतिजी ।
वायभूतिजी ने, विगत भूतिजी ।
सुधर्मा स्वामीजी ने शीश नमाऊँ ॥ १ ॥

मंडि पुतर जी ने, मौर्य पुतर जी ।
अक पिताजी ने, अचल पिताजी ।
मेतारज–श्री प्रभास जी ने वन्दु ॥ २ ॥

महावीर स्वामी जी रा शिष्य इग्यारा ।
सगला ही मोक्ष नगर सिधाया ।
मारी सरीखी ने वेगा बुलाय जो ।। ३ ।।

पूज्य महाराज श्री अमोलक ऋषिजी ।
पूज्य महाराज श्री कल्याण ऋषिजी ।
सायर पदम निश दिन गुण गावे ।। ४ ।।

(तर्ज : प्यारा लागे सुधर्मा स्वामी....)

धन धन ओ अन्तरयामी, प्यारा लागे सुधर्मा स्वामी ।। टेर ।।
पिता धर्मी पुरुष केवाया, माता धारणी रा जाया ।
चवदे पूर्व, चऊ नाणी, प्यारा लागे सुधर्मा स्वामी ।। १ ।।
ज्यारा त्रिशलानंद गुरुजी, ज्यारी महिमा कहाँ लग करूँ जी,
सुरा-सुर करे प्रणामी . . . . ।। २ ।।
ज्यारा गौतम स्वामी गुरुभाई, ज्यारी कहाँ लग करूँ रे बडाई,
काम-क्रोध-दिया सब त्यागी . . . . ।। ३ ।।
ज्यारा शिष्य आलीजा वैरागी, जम्बु स्वामी जी वड़ भागी ।
ज्ञान-ध्यान रा पार गामी . . . . ।। ४ ।।
साल बासठ की है खासा, रावल पिंडी शहर चौमासा,
देवीलाल को देवो आरामी . . . . ।। ५ ।।

卐

(तर्ज : श्री वीर जिनंद जी रा प्यारा हो हो....)

इन्द्रभूतिजी ने, अगनभूतिजी, वायभूति तीजा जाणो हो हो।
श्री वीर जिनंदजी रा प्यारा हो हो, गुणधरजी प्यारा....
|| टेर ||

विगतमुनिजी ने सुधर्मा स्वामी,
मंडीपुतर छट्टा जाणो हो हो ।। १ ।।

मौर्यपुतर जी ने, अंकपिताजी,
अचल, मेतारज ने ध्यावो हो हो ।। २ ।।

श्री प्रभास जी ने नित उठ ध्याऊ,
ग्यारों हो ब्राह्मण जाणो हो हो ।। ३ ।।

एकन दिन में दीक्षा लीनी, श्री वीर जी रे पासे हो हो ।।४

सम्वत उगनीस सौ ने साल सितंतर,
रतन कॅवरजी गुण गाया हो हो ।। ५

卐

(तर्ज : बडो विनायक)

एक गौनम गणधर, पायेजी लागु, गुरु ज्ञानी आगे विनवूं
हात जोडी ने पाये जी लागु. मैं शिस नम

ये तो गोवर गांवरा वासी विनायक, गोतम गोत्र सुहावणो,
ए तो वसुभूतिजी तात तुम्हारा,

पृथ्वी देवीजी रा लाडला ।। २ ।

एक दिन माताजी सुख भर पोडया,

स्वपनो तो देख्यो सुहावणो,

एतो इन्द्र भवन तो झलकन्तो देख्यो,

अर्थ करायो यांरा कथसु ।। ३ ।।

एतो जिन कारण नाम तो इन्द्रभूति दियो,

सलगा रे मन भाविया

एतो चार वेद, छ. शास्त्र पाठी,

भणिया यांरा वडी चुँप सु ।। ४ ।।

ये तो ब्राह्मण कुल का पंडित वाजे,

यज्ञ करण पावापुरी आविया,

ये तो भगवंत भेटया श्री वर्धमान,

जातिस्मरण तिहां पामिया ।। ५ ।।

ये तो संजम लेईने शिवपुर पहुँच्या,

अनन्त सुखा में विराजिया,

ज्यांरा नाम लिया सुं आनन्द पावे,

आनन्द रंग वधावणा ।। ६ ।।

सती विभाग

दोई बेना बाबोसा आगे वीनवे,
गाने शील संयम सु लवलागी ।
मारी सपना मे मति करजो सगाई ॥ धन्य . . . ॥ ७ ॥

मै तो बहुवा किणारी नही वाजां.
मै तो सासरिया रो नाम लेता ही लाजा ।
माने पति री परवा नही छे कोई ॥ धन्य . . . ॥ ८ ॥

मै तो बीन्द णेणा सुं नहीं निरखां,
मै तो गुरु ने गुरणिसा ने देख्या हरखा ।
मै तो सेवा करांला दिन मे दोई वारी ॥ धन्य . . ॥ ९ ॥

बाबोसा केवे सुणो ए बेट्यां,
थे तो रतन चिन्तामणि री पेट्या ।
थारी करणी में कसर नही हे बायां ॥ धन्य . . ॥ १० ॥

सुन्दरी ने देख भरत हरख्या,
सती रो अंग उपांग सगला ही निरख्या ।
पछे भरत रे मन कुमति आई ॥ धन्य . . . . . ॥ ११ ॥

थे तो आदेश्बरजो रा बेटा वाजो,
एक वारी जाई ने छः खण्ड साधो ।
मै तो अटेई लादसां भरत भाई ॥ धन्य . . . , ॥ १२ ॥

छः खण्ड सादवां भरत चाल्या,
सतिया उण दिन सु ही तप माण्ड्या ।
बेले-तो बेले सतिया पारणो करे ॥ धन्य . . . ॥ १३ ॥

साठ हजार वरष तप तपिया,

ये तो आंबिल लूखो आहार करे ।

ज्यारी काया फूलां ज्यू कुमलाणी ।। धन्य . . . ।। १४ ।।

छः खण्ड साध भरत आया,

सती रो रूप देखिने समता लाया ।

कलश बधावण दोय बेना आई ।। धन्य . . . . .।। १५ ।।

दोई बेना में वैराग्य घणो,

एतो कँवारी कन्या लेवे साधु पणो ।

माने द्वीपती दीक्षा दिरावो भाई ।। धन्य. . . ।। १६ ।।

ये तो आदेश्वरजी री हुई चेलयां,

पछे वाहुवली जी ने समजावां मेलया ।

पछे वाहुवली केवल पाया ।। धन्य . . . . . ।। १७ ।।

एतो आदेश्वर जी री सिखाई,

इग्यारह अग भणी ने आई ।

पछे शिवरमणी में जाय डेरा दिया ।। धन्य . . ।। १८ ।।

卐

सीता सती का स्तवन

(तर्ज :

महिमा फैली है सकल ससार,

सीता जी थारा शील री ॥ टेर ॥

जनक राजा री पुत्री कहिजे, रामचन्द्र घर नार।
दशरथ जी री कुल वहु रे,
पुरी रे अयोध्या रे गाव ॥ सीताजी. . . . ॥ १ ॥

अयोध्या वासी कलक दियो है, सुनी राम ने वात।
देश निकालो दियो सती ने,
छोडी है वन रे मझार ॥ सीताजी . . . ॥ २ ॥

कर्म गति आ विचरत देखो, भम गया वन के माय।
दण्ड काल अटवी माये,
जनमिया है युगल कुमार ॥ सीताजी ॥ ३ ॥

दोय वालक ने देखने सती, मन मे करे विलाप।
पूरवला भव रा वाध्या करम तो,
उदे आया है अबे पाप ॥ सीताजी . . . ॥ ४ ॥

मन मे धीरज धार ने सती, वडा किया दोय वाल।
शूरवीर तो वडा हुआ छे,
पिता सुं करे तकरार ॥ सीताजी . . . ॥ ५ ॥

नारद सीता आय ने, समझाया है दोय बाल ।
पुत्र पिता रे झगडो कैसो,
राम ओलख्या है कुमार ।। सीताजी . . .।। ६ ।।

राम लक्ष्मण तो अरज करे छे, सुनो गुणवती नार ।
कृपा करो मारी नगरी पधारो,
पगलयां धरोनी स्वीकार ।। सीताजी . . . ।। ७ ।।

लक दियो मै कैसे आऊ, सुनो पृथ्वी के नाथ ।
ोज करीने सत्य दिखाऊ,
देखेला सकल ससार ।। सीताजी . . . ।। ८ ।।

ाम लक्ष्मण मिल अग्नि कुण्ड तो, तुरन्त कियो तैयार
ग-जगता तो खीरा धरिया,
देखिने धूजे नर-नार ।। सीताजी . . . ।। ९ ।।

ीरज ऊभी सीता बोले, पर नर वच्यो कोय ।
ो मुझ अग्नि बाली-झानी ने,
नीतर होय जाइ जो थडो नीर ।। सीताजी . . ।। १० ।।

डण पर बैठा आग मे ने, अग्नि को हो गयो नीर ।
राम अपराध खमाय सती ने,
देवता करे जय-जयकार ।। सीताजी . . . ।। ११ ।।

ीले सर्प न आवडे, शीले शीतल आग ।
ील अरी करी केसरी रे,
दुःख गया सब भाग ।। सीताजी . . . ।। १२ ।।

सीता सती का स्तवन

(तर्ज :

महिमा फैली है सकल ससार,

सीता जी थारा शील री ॥ टेर ॥

जनक राजा री पुत्री कहिजे, रामचन्द्र घर नार।
दशरथ जी री कुल वहु रे,
पुरी रे अयोध्या रे गाव ॥ सीताजी. . . . ॥ १ ॥

अयोध्या वासी कलक दियो है, सुनी राम ने वात।
देश निकालो दियो सती ने,
छोडी है वन रे मझार ॥ सीताजी . . . ॥ २ ॥

कर्म गति आ विचरत देखो, भम गया वन के माय।
दण्ड काल अटवी माये,
जनमिया है युगल कुमार ॥ सीताजी ॥ ३ ॥

दोय वालक ने देखने सती, मन मे करे विलाप।
पूरवला भव रा वांध्या करम तो,
उदे आया है अबे पाप ॥ सीताजी . . . ॥ ४ ॥

मन में धीरज धार ने सती, वडा किया दोय बाल।
शूरवीर तो वडा हुआ छे,
पिता सु करे तकरार ॥ सीताजी . . . ॥ ५ ॥

नारद सीता आय ने, समझाया है दोय बाल ।
पुत्र पिता रे झगडो कैसो,
राम ओलख्या है कुमार ।। सीताजी ...।। ६ ।।

राम लक्ष्मण तो अरज करे छे, सुनो गुणवती नार ।
कृपा करो मारी नगरी पधारो,
पगलयां धरोनी स्वीकार ।। सीताजी ...।। ७ ।।

कलक दियो मैं कैसे आऊ, सुनो पृथ्वी के नाथ ।
धोज करीने सत्य दिखाऊ,
देखेला सकल ससार ।। सीताजी ...।। ८ ।।

राम लक्ष्मण मिल अग्नि कुण्ड तो, तुरन्त कियो तैयार
ग–जगता तो खीरा धरिया,
देखिने धूजे नर-नार ।। सीताजी ...।। ९ ।।

तीरज ऊभी सीता बोले, पर नर वंच्यो कोय ।
तो मुझ अग्नि वाली–ज्ञानी ने,
नीतर होय जाइ जो थडो नीर ।। सीताजी ..।। १०।।

डण पर बैठा आग मे ने, अग्नि को हो गयो नीर ।
राम अपराध खमाय सती ने,
देवता करे जय–जयकार ।। सीताजी ...।। ११ ।।

शीले सर्प न आवडे, शीले शीतल आग ।
शीले अरी करी केसरी रे,
दुःख गया सब भाग ।। सीताजी ...।। १२ ।।

सीता सती तो संयम लेने, गया देवलोक मझार।
ज्ञान–ध्यान तो खूब दिपाया,
गया है स्वर्ग मझार ॥सीताजी . . . ॥ १३ ॥
वर्धमान मे कस्तूर कँवर जी, सयम कियो अगोकार।
ऐसी सतिया रा नित गुण गाऊ,
भमर करे है नमस्कार ॥ सीताजी . . . ॥ १४ ॥

(तर्ज : जी धन ब्रामी ने धन सुन्दरी ये सतियां, पालयो

आदिनाथ घर ऊपन्योजी कोई, भरतादिक सौ पूत,
ब्रामी ने सुन्दरी दोनो बेनडयाजी,
ज्यारा मन माये बसियो शील,
जी धन ब्रामी ने धन सुन्दरी ये सतिया,
पालयो शील अखण्ड ॥ १ ॥

छ खण्ड पदवी रा धणीजी काई, वरते अखडित आण,
रूप देखने वीरा बोलियाजी कोई,
काढी बिखारी बात . . . . ॥ २ ॥

वचन सुनी ने सतिया बोलिया ए बाई,
किस विधि राखो गज ठाम,
मोहनी कर्मा रे वश पडियाजी कांई,
देखो–देखो कर्म चण्डाल . . . . ॥ ३ ॥

शील वरत छे मोटका जी काई, शील बडो सरदार ।
सब वरतां माई मोटका जी काई,
भाख गया भगवान . . . ॥ ४ ॥

शील रतन छे मोटका जी काई, शील रत्नारी खान ।
वाड सहित व्रत पालसा जी काई,
चौल झपट ले जाय . . . ॥ ५ ॥

बेले तो बेले करसा पारणो जी काई,
आयम्बिल लूखो आहार,
साठ सेस वरष तप तपिया जी ज्यारा,
सूखा–सूखा लोई ने मास . . . ॥ ६ ॥

छः खण्ड साध पाछा वलिया जी काई,
सब राजिद रा राव,
कामण्या करसी बधावणा जी काई,
घर–घर मगलाचार . . . ॥ ७ ॥

कलश बधावणा सतियां साचारी जी काई,
सगली सहेलयां रे साथ ।
अखिए अजरा मर पद जीवजो रे वीरा,
देवो–देवो अगिया वक्षिष . . , ॥ ८ ॥

वचन सुनी ने वीरा बोलिया ए वाई,
किस विद सुखायो शरोर,
नसा जाल जुवा जुलेए वाई,
सुखा–सुखा लोही ने मास . . . ॥ ९ ॥

सीता सती तो संयम लेने, गया देवलोक मझार।
ज्ञान–ध्यान तो खूब दिपाया,
गया है स्वर्ग मझार ॥सीताजी . . . ॥ १३ ॥
वर्धमान मे कस्तूर कंवर जी, सयम कियो अगीकार।
ऐसी सतिया रा नित गुण गाऊ,
भमर करे है नमस्कार ॥ सीताजी . . . ॥ १४ ॥

(तर्ज : जी धन ब्रामी ने धन सुन्दरी ये सतियां, पाल

आदिनाथ घर ऊपन्योजी कोई, भरतादिक सौ पूत,
ब्रामी ने सुन्दरी दोनों बेनडयाजी,
ज्यारा मन माये वसियो शील,
जी धन ब्रामी ने धन सुन्दरो ये सतिया,
पालयो शील अखण्ड ॥ १

छ खण्ड पदवी रा धणीजी कांई, वरते अखडित आण,
रूप देखने वीरा बोलियाजी कोई,
काढी बिखारी बात . . . . ॥ २
वचन सुनी ने सतिया वोलिया ए बाई,
किस विधि राखो गज ठाम,
मोहनी कर्मा रे वश पडियाजी कांई,
देखो–देखो कर्म चण्डाल . . . . ॥ ३

शील वरत छे मोटका जी काई, शील बडो सरदार ।
सब वरतां माई मोटका जी काई,
भाख गया भगवान . . . ॥ ४ ॥

शील रतन छे मोटका जी काई, शील रत्नारी खान ।
वाड सहित व्रत पालसां जी कांई,
चील झपट ले जाय . . . ॥ ५ ॥

बेले तो बेले करसा पारणो जी काई,
आयम्बिल लूखो आहार,
साठ सेस वरष तप तपिया जी ज्यारा,
सूखा–सूखा लोई ने मास . . ॥ ६ ॥

छः खण्ड साध पाछा वलिया जी काई,
सब राजिद रा राव,
कामण्या करसी बधावणा जी कांई,
घर–घर मगलाचार . . . ॥ ७ ॥

कलश वधावणा सतिया साचारो जी काई,
सगली सहेल्यां रे साथ ।
अखिए अजरा मर पद जीवजो रे वीरा,
देवो–देवो अगिया वक्षिष . . , ॥ ८ ॥

वचन सुनी ने वीरा बोलिया ए वाई,
किस विद सुखायो शरीर,
नसा जाल जुवा जुलेए वाई,
सुखा–सुखा लोही ने मास . . . ॥ ९ ॥

तप करता जीवन गयो रे वीरा,

कलेवर रह्यो निज ठाम ।

खादे तो लेसा पोतिया ओ वीरा,

विचरां चारों ही खूट . . ।। १० ।।

आज्ञा तो लेने सतियां नीसर्या जी काई,

आया तात रे पास ।

हाथ जोडी ने वन्दना करी जी माने,

देवो–देवो महाव्रत पाच . . . ।। ११ ।।

दीक्षा लीनी सतियां भाव सु जी काई,

हुआ पूर्व रा जाण ।

खादे तो लीनी पोलियां जी काई,

विचरया चारों ही खूट . . , ।। १२ ।।

दान–शियल–तप–भावना जी काई,

शिवपुर मारग चार ।

सरदो आराधो भावसु जी काई,

जिवु उतरो भव पार . . . ।। १३ ।।

卐

(तर्ज : मै आया तुझ दरबार प्रभु, तीर जाने के)

मुश्किल सयम नेम प्रभु ने, भव तरवा काजे ।
प्रीत छे एनी नव–नव भवनी, राजुल ने साथे ।। टेर ।।

तोरण आव्या नेम प्रभुजी, वजे शहनाई शोरों करती,
पशु पखी ने रो–रो करती, नेमजी दिलमा धरता हरजी,
घन–घन–घोर–घटा छायी त्सा, राजुल ने है ये ।। १ ।।

नेमजी कहे छे हूँ ना परणु, छोडू ओ ससारनु झरणु,
सयम साथे हूँ तो परणु मीठु लागे एक है तरणो,
सहेसा वन मां लई प्रभु ने, शिव सुख ने माटे ।। २ ।।

साजन रोवे माजन रोवे, धूसके धूसके राजुल रोवे,
हरणा रोवे चरणा रोवे, आकाशे पण तारा रोवे,
विनवे सौ कोई रडती आखे, राजुल ने वरिए ।। ३ ।।

नेमजी कहे छे आपन वन्ने, सयम लई जगमा विचरिए ।
जैन धर्म नो झण्डो लईने, गढ गिरनारे मुक्ति वरिए ।
चालो राजुल मारे साथे, सयम लई फरिए ।। ४ ।।

卐

(तर्ज : तेजाजी री . . . .)

नव भव रा स्वामी ने अन्तरयामी ओ,
तेल चढी ने क्यू छोडिया . . . . ॥ टेर ॥

धीरज राखो बावलि तू, सुनले राजुल नार ए,
शिव रमणी सु प्रीती जोड ले . . . . . ॥ १ ॥

कुण थाने भरमाया ने, कुण जी रिझाया ओ,
कुणजो मोसा ओ थाने बोलिया . . . . ॥ २ ॥

नही म्हाने भरमाया ने, नही जी रिझाया ओ,
नही जी मोसा ओ म्हाने बोलिया . . . ॥ ३ ॥

प्रेम सु तो ब्याव रचायो स्वामी नाथ ओ,
रथडो पाछो तो क्यु फेरियो . . . . . . ॥ ४ ॥

पशुवांरी सुणी रे पुकार राजुल नार ए,
दया आणी ने रथ फेरियो . . . . . . ॥ ५ ॥

रंग में तो भग कांई किधो स्वामी नाथ ओ,
छोटी सी बातारे जी कारणे . . . . . . ॥ ६ ॥

एक जीव रे कारणे तूं सुणले राजल नार ए,
घणा ई जीवा ने मरता देखिया . . . . ॥ ७ ॥

इस्या काम ससार का थे सुणजो स्वामी नाथ ओ,
अनादी काला सु चलता आविया . . . . ॥ ८ ॥

मूरख नर समझे नही, तूं समझ–समझ सुण राजुल ए,
मोहि रूलावे थारी आतमा . . . . .   ॥ ९ ॥

पिव् बिना सूनो ससार स्वामी नाथ ओ,
चावल विना ओ किसी खीचडी . . . .   ॥ १० ॥

ससारिया झूठा नाता, समझ–समझ सुन राजुल ए,
ज्ञानी ज्ञानी ने विलमाविया . . . .   ॥ ११ ॥

परण्या पछे सजम लेता स्वामी नाथ ओ,
माडाई पल्लो नही झेलता . . . .   ॥ १२ ॥

सुण उपदेश बेगी आऊ स्वामी नाथ ओ,
अटल निभाऊ थाणा प्रेम ने . . . .   ॥ १३ ॥

सात सौ सहेलयां सु लिधो सजम भार ओ,
धन–धन राजुल नार ने . . . .   ॥ १४ ॥

राजुल नेमजी री इव चल जोडी ओ ।
पिऊ पेली मुगते सिद्धाविय . . . .   ॥ १५ ॥

卐

(तर्ज :

नेमजी सुनता जइजो जी, श्याम थे सुनतां जइजो जी।
ओजी मारी मनडा केरी बाता, राजुलजी बोलया जी
॥ टेर ॥

नेम अध परणी छोड्या जी २,
ओजी मारी हाथा शरम गमाई ॥ राजुलजी ॥ १ ॥

नेम निरणो नही किधो जी,
म्हाने किस विध कर दी न्यारी ॥ राजुलजी ॥ २ ॥

प्रीत नव भव की होती जी,
म्हाने छिन मे दिया छिटकायी ॥ राजुलजी ॥ ३ ॥

गुनो काई मोटो होतो जी,
ओजी म्हाने छोड चलया गिरनारिया ॥ राजुलजी ॥ ४ ॥

सति रहनेमी तार्या जी,
ओ जी वे तो अपना ही जनम सुधार्या ॥ राजुलजी ॥ ५ ॥

सति वे मोक्ष सिधाया जी,
ज्याने नित उठ वदना म्हारी ॥ राजुलजी ॥ ६ ॥

प्रसन कर सुनजो भायांजी २,
सावण मे जोड बनाई ॥ राजुलजी ॥ ७ ॥

(तर्ज : छोड गये बालम)

छोड गये गिरनार, मेरे नाथ अकेली छोड गये।
मेरे नेम गये गिरनार, मेरा आश भरा दिल तोड गये।
सुन हो राजुल नार, दुनिया से दिल अब टूट गया।
वरवा मुक्ति नार, अब दिल हमारा झुक गया ।। टेर ।।

बिन पानी मछली तडपती, ऐसे मैं घबराऊ।
जल रही हूँ विरहानल से, दड-दड नीर वहाऊ (मैं)
।। छोड ।। १ ।।

आतमा की गत आतम जाने, मै जानु प्रभु जाने।
झूठी माया झूठी काया, क्यु कर मेरा माने (तू)
।। छोड ।। २ ।।

मेरे मन मे आग लगी है, तुम हो तारणहार।
हाथ से हाथ मिला दो साही, विनती लो स्विकार
।। मेरी छोड ।। ३ ।।

आतम कमल विकसादो मेरा, भव्य हृदय के हार।
लब्धी लक्ष्मण कीर्ति गावे, भव पार उतार
।। मोहे छोड ।। ४ ।।

(तर्ज : सारी-सारी रात तेरी याद सताये)

जाते हो कहाँ नेमी राज दुलारे,
राज दुलारे प्यारे प्राण हमारे रे ॥ टेर ॥

प्रीत हमारी नव भव की स्वामी, छोड चले क्यो अन्तरयामी
अन्तरयामी सुनो राजुल पुकारे रे ॥ १ ॥

भूल हुई क्या ऐमो, रथ फेर लीनो,
हो गया अब मुश्किल मेरा जीना ।
मुश्किल जीना रहूँ किसके सहारे रे ॥ २ ॥

मै भी प्रभु जी तोरे सग चलूँगी, ज्ञान से अपनी झोली भरूंगी
झोली भरूगी सत्य शब्द उचारे रे ॥ ३ ॥

(तर्ज : नगरी–नगरी द्वारे द्वारे ढूढूं रे)

जाए–जाए मेरी सखिया जायरी सावरिया ।
जाओ उन्हे मनाओ जाओ गिरनारी डगरिया ।। टेर ॥

आठ जनम से प्रीतम मेरे, यादव नेम कुमार है ।
मै हूँ उनकी चरण किकरी, वे मेरे भरतार है ।
श्याम सलोना के दर्शन की, प्यासी है नजरियाँ ।। १ ॥

वर राजा वनकर आये, फिर तोरण से मुख मोड चले,
नाव खिवैया जीवन साथी, बीच भँवर मे छोड़ चले
कैसे पार लगेगी सजनी, जीवन की नावडिया ॥ २ ॥

जीवन धन जब रुठ गये तो, किसे करुँ फरियाद मैं ।
टप-टप आसू टपक रही है, ज्यो मोती की लडिया ।
आँखो मे सावन उतरा है, प्राणेश्वर की याद मे ॥ ३ ॥

ककण तोडू, माला तोडू, तोडू नवसर हार मै।
विंदिया मेहन्दी उतार फेकू, सारे ही श्रृंगार मै ।
केवलमुनि वैराग्य ज्ञान की, ओढूगी चूनरिया ॥ ४ ॥

(तर्ज : आ लौट के आजा मेरे मीत)

लौट के आजा महावीर, तुझे चन्दना बुलाती है ॥ टेर ॥

माता से विछुडी, पिता से विछुडी,
बिछड चली सब परिजन से,
प्रथम प्रथा की सीमा नही है ।
हुई विविश है तन मन से,
मेरे तन पे पडी झझीर . . . . . .
॥ १ ॥

द्वार पे आके जी तरसाके, कहाँ लौट अब जाते हो ।
तीन दिवस की भूखी प्यासी, फिर भी रहम नही लाते हो ।
नयनो से बरसे नीर . . . .
॥ २ ॥

चाँदो से निर्मल फूलों से कोमल, प्रभु हृदय कहलाता है
चन्दना की भक्ति स्वर से, अनुग्रह रस वरसाते हो
तब लौट के आये महावीर . . . . ॥ ३

हरषे हृदय सरस जीवन, देती है दान वह उडदन क
वृष्टि करे सुर सौनैयो की, प्रमोदित हुए मुनी जन से
मुनी गणेश मिटायी भव पीर . . . . ॥ ४

(तर्ज :

आवो-आवा प्रभु जी मारे आगणे जयवताजी,
काई कृपा करो भगवान जिओ जयवताजी ॥ टेर ॥
शासन पति सयम लियो, जयवताजी, काई
तप कियो दुष्करकार । जिओ जयवताजी ॥ १ ॥
षट मास तप आदरयो, जयवताजी, काई
लीनो अभिग्रह धार ॥ जिओ जयवताजी ॥ २ ॥
विचरत प्रभुजी पधारिया ॥ जयवताजी ॥ काई
नगरी कोशम्बी मझार ॥ जिओ जयवताजी ॥ ३ ॥
दोपहर दिन आविया, जयवताजी, काई
उठिया गोचरी काज ॥ जिओ जयवताजी ॥ ४ ॥
नर-नारी धामे घणा, जयवताजी, काई
नाना विध पकवान ॥ जिओ जयवताजी ॥ ५ ॥

चन्दन वाला के घरे, जयवंताजी,
काई आया श्री भगवान ।। जिओ जयवंताजी ।। ६ ।।
चन्दन बाला के घरे, जयवताजी,
नही बेरया श्री भगवान ।। जिओ जयवताजी ।। ७ ।।
वारा बोल पूरा हुया, जयवंताजी,
नही देख्या नयनां में नीर ।। जिओ जयवंताजी ।। ८ ।।
घर आया पाछा फिरिया, जयवंताजी,
इम बोले आंसू भराय ।। जिओ जयवताजी ।। ९ ।।
मे अभागन पापिनी, जयवताजी,
काई हूँ दुखियारी नाथ ।। जिओ जयवताजी ।। १० ।।
पाछा फिर पारणो लियो, जयवंताजी,
काई सती हुई हुल्लास ।। जिओ जयवताजी ।। ११ ।।
दान देता बेडी झडी, जयवताजी,
काई हो गया सब श्रृंगार ।। जिओ जयवंताजी ।। १२ ।।
सौनैया री विरखा हुई, जयवताजी,
काई साढे वारे करोड ।। जिओ जयवताजी ।। १३ ।।
मास. आई तुरन्त मिलो, जयवताजी,
काई धन-धन चन्दन वाला ।। जिओ जयवताजी ।। १४ ।।
दान-सियल-तप-भावना, जयवताजी,
काई शिवपुर मारग चार ।। जिओ जयवताजी ।। १५ ।।
कर्म खपाय मुगते गया, जयवताजी,
काई हो गया जय-जयकार ।। जिओ जयवताजी ।। १६ ।।

(तर्ज :

प्रभु प्राण का आधार, आया–आया मारे द्वार ।
बोले चन्दनबाला पाछा क्यू कर फिर गया
मारा अनदाता, छीजे मारी आतडली ॥ टेर ॥

मैं हूँ घणी दुखियारी नाथ, मारी कूण सुनेला बात ।
मा पर करुणा करीने पाछा आइजो ॥ १ ॥

म्हारे कणी जनम रो पाप, छुटा मायडली ने बाप ।
आई पराया घरा में दिनडा काढु ॥ मारा ॥ २ ॥

भारी बधन में बधानी, नही मिलियो अन्न ने पानी ।
मेतो तीन दिनारी भूखी प्यासी बैठी ॥ मारा ॥ ३ ॥

जीनराज पाछा ओवो, म्हाने दर्शन दिराओ ।
म्हारा आगना मे पगलया बेगा करजो ॥ मारा ॥ ४ ॥

थेतो घणा जीवा ने तारिया, भव जल सु उबार्या ।
अब तारवा री वारी म्हारी आई ॥ मारा ॥ ५ ॥

भलो जोग मिलीयो आज, म्हारे आई धर्म री जहाज ।
म्हाने बैठाई ने मुगतियां ले चालो ॥ मारा ॥ ६ ॥

प्रभू पाछा क्यू सिदाया, म्हारा नैना भर आया ।
राणी त्रिशलाजी रा जाया बेगा अइजो ॥ मारा ॥ ७ ॥

(तर्ज : जिया बेकरार है, छाई बहार है)

जिया बेकरार है, हृदय के पुकार है।

आ जाओ महावीरजी, तेरा इन्तजार है ।। टेर ।।

राज कन्या हूँ दधिवाहन की, महलों के मतवारी हो २।
तीन दिवस से पडी एकली, मै कर्मो की मारी हो २।
कोई न पूछनहार है, किसी का न प्यार है ।। आजा ।।१।।

हाथ-पाव मे बेडी पड रही, सिर मुडित है सारा हो २,
नही अग पर चीर कच्छ से, लज्जा को निवारा हो २,
भूख भी अपार है, दिखता नही आहार है ।। २ ।।

उडदों के ही दिये बाकुले, यही भावना भाई हो २,
तेले का आज पारणा, आवे कोई मुनिराया हो २,
सुपात्र सत्कार है, देऊ यह आहार है ।। आजा ।। ३ ।।

इतने ही मे आप पधारे, रोम-रोम हर्षाया हो २,
उसी समय फिर वापिस फिर गये,
दुखिया दिल दुःखाया हो २,
वहती अश्रुधार है, तेरा ही आधार है ।। आजा ।। ४ ।।

हुआ अभिग्रह ने पूर्ण आंसू जब, हुए सती के जारी हो २,
लिया प्रभु ने आहार गगन में, बजी दुदभी भारी हो २,
चन्दनबाला नार है, 'जीत' हुआ उद्धार है ।। आजा ।।५।।

(तर्ज : वाह-वाह री सती चन्दना)

राज सुता सुखमाल है, विकी चौवटे आय ।
धन्ना सेठ घर ले गया, निज पुत्री दर्शाय ।
माता मूला देख द्वेप दिल लाई हो चन्दना ।
वाह–वाह री सती चन्दना, बलिहारी सती चन्दना ॥ १

समय देख सिर मुडके, लीना वस्त्र छिनाय ।
हाथ–पाव बेडो जडो, दीना कांच पहनाय ।
सतो डालो भोयरा मे दया नही लायी हो चन्दना ।
वाह–वाह रो सती चन्दना, वलिहारी सती चन्दना ॥ २

सेठ आय बाहर खडा, बैठो देहलो माय ।
उडद बाकला छाजले, रहो भावना भाय ।
वीर पधार्या दियो दान हर्षायी हो चन्दना ।
वाह–वाह री सती चन्दना, बलिहारी सती चन्दना ॥ ३

दान देत बेडी खुली, तन श्रृंगार सजाय ।
रत्न वृष्टि आंगणे, माता आय खमाय ।
सती नमी चरणो मे द्वेश नही लाई हो चन्दना ।
वाह–वाह री सती चन्दना, बलिहारी सती चन्दना ॥ ४

अधिक क्षमा सती आपकी, ये गुण हम कब पाय ।
जेष्ट शिष्य श्री वीर की, गुण आगम मे गाय ।
साजापुर मे रत्न कॅवर हर्षाई हो चन्दना ।
वाह–वाह री सती चन्दना, बलिहारी सती चन्दना ॥ ५

卐

(तर्ज : गरीबों की सुनो)

दोहा– मोहन भोग नही है भगवन, दाने है दो चार ।
चाहे तो ठुकरावो इनको, चाहे करो स्विकार ।।

चन्दना की सुनो ओ महावीर स्वामी ।
पधारो पारणो लो पधारो अन्तरयामी ।। टेर ।।

फूल-सी प्यारी राज कुमारी, लुटी विकी बाजार में,
माता मर गई, पिता विछुड गये, कोई नही ससार में ।

भटकती–भटकती किनारे पे आई,
तभी एक किस्मत ने ठोकर लगाई,
इसे करुणा सिधु दया कर सभालो,
तारण–तीरण अब चरण से लगाओ

अब तो नैया पार लगावो, शरण पडी हूँ नाथ मै ।। १ ।।

पूर्व जन्म के पाप कर्म ने, जरा नही आराम दिया ।
मूला ने भी निष्कारण ही, वैरिणी सा व्यवहार किया ।

कोई कष्ट ऐसे कभी भी न पाये,
कोई ऐसे धक्के कभी न खाये,
शीश मूडकर के कछनी पहनाई,
अधेरे तहखाने मे उसने गिराई ।

तौक गले मे पात्र में बेडी हथकडियां हैं हाथ में ॥ २ ॥
आहार दिये बिन एक कण भी, मै प्रभु कभी नही खाऊंगी
आप पारणा पायेगे तो मै भी पारणा पाऊंगी।

आवो देव मेरे दया करके आवो,
अभागिन की सोई किस्मत जगावो,
पारणा किया प्रभु ने आनंद छाया,
चदना ने भव-भव का बधन मिटाया।

केवल मुनि महावीर प्रभु की, जय बोलो एक साथ मे ॥३॥

卐

(तर्ज : दूर कोई गाये)

माताजी के सामने, बोले-बोले राम ने।
जनक दुलारी हो, क्यो हठ धारी हो ॥ टेर ॥

तेरी कोमल काया, कटको से छाया,
वन दुःख भारी हो ॥ क्यों ॥ १ ॥

शेर और चीते है, झाडी घनघोर है,
लागे डर भारी हो ॥ क्यों ॥ २॥

सरस्वती है साक्षात, सच्ची है तुम्हारी बात,
नही अवसर प्यारी हो ॥ ३ ॥

दासियां तुम्हारी आज, रही है सेवा में साथ,

ऋतु अनुसारी हो ॥ क्यों ॥ ४ ॥

भूख–प्यास–शीत धाम, दु ख वनवास काम,

घोर दुःख प्यारी हो ॥ ५ ॥

मुझे मत डराइये नाथ, अरज स्विकारिये नाथ,

अर्द्ध अंग नारी हो ॥ क्यो ॥ ६ ॥

सुख-दुःख साथ में, यश दोनों हाथों में,

पाये गुण धारी हो ॥ क्यो ॥ ७ ॥

भारत की सन्नारियां, गई वलिहारियां,

दृढ़ व्रत धारी हो ॥ क्यो ॥ ८ ॥

अवसर पाऊगी, तव बतलाऊगी,

शक्ति सारी हो ॥ क्यो ॥ ९ ॥

माताजी की सेवा साध, अपना धरम आराध ।

सुनो सिया प्यारी हो ॥ क्यों ॥ १० ॥

नाथ मात थारी है, सासु सेवा भारी है ।

पति बिन नही रहे नारी हो ॥ ११ ॥

पतिव्रता धर्म, मेरे सत कर्म में ।

लागे लांछन भारी हो ॥ क्यों ॥ १२ ॥

पिया नही लागे जिया, विरह में मरेगी सिया ।

अरज गुजारी हो ॥ क्यों ॥ १३ ॥

आओ बेटी साथ जाओ, सेवा मे जीवन विताओ, ।

बनो जयकारी हे ॥क्यों ॥ १४ ॥

जहां तक गगा वहे, तेरा यश सौभाग्य रहे ।

वचन उचारी हो ॥ क्यो ॥ १५ ॥

(तर्ज : स्थूलिभद्रजी रया चातुर्मास वैश्यारी शालमा)

माथे मुण्डन हाथो मा वेडी हती ।

त्रण–त्रण दिनना उपवासी हतो

मुख थी गणती हती नवकार,

चन्दन जोवे वाटडली ॥ १ ॥

घरना आंगणिया मा थे बैठी हती,

सूखा बाकुला सिवाय त्या काई नथी ।

बहती आंखों मा आसूनी धार,

चन्दन जोवे वाटडली ॥ २ ॥

धार्यो मनमा अभिग्रह तेने हतुं,

मुनि ने वोहराबि ने खावु हतु ।

एमां मनमा कर्यो निराधार,

चन्दन जोवे वाटडली ॥ ३ ॥

तेना मनना मनोरथ सर्वे फलया,

ज्यारा महावीर स्वामीना दर्शन मलया ।

त्या तो थई गयो चमत्कार,

चन्दन जोवे वाटडली ॥ ४ ॥

वेडी तूटी ने माथे वाल थया, चन्दनबाला ना दुखों दूर थया,
विमल गावे जय-जयकार, चन्दन झोवे वाटडली ।। ५ ।।

卐

(तर्ज :

मारे आगणिये आयोडा मत जाओ महावीर ।
आसूडा ढलखावे मारी आँखडली ॥ टेर ।।
चपा लुट गई, मै विखियोडी, पग बन्धन बांध्योडा ।
मारी कूण सुनेला भगवान महावीर ।। आसूडा.....।। १ ।।
मात-पिता सब सखिया छुट गई, छूटयो सब परिवार ।
थे तो दु खिया ने मती दुखरावो महावीर ।। आसूडा ।।२।।
आप पधारया मनडो हरण्यो, पण काई देख्या जाय,
पगल्यां करता ही पाछा क्यों फिरग्या महावीर
।। आंसूडा ।। ३ ।।
उडद वाकला देख आप क्यों, पाछा फिरिया नाथ,
मैं तो दुखियारी और कांई लाऊ महावीर ।। आंसूडा ।।४।।
आप बिना दुखियारी सुनवाई, कूण करेला नाथ,
मै तो पलकासु पूजू भगवान महावीर ।। आसूडा ।। ५ ।।
जोधाणा में कियो चौमासो, कुमुद मुनि गुण गाया ।
थे तो चन्दना रा सारा कारज सार्या महावीर
।। आंसूडा ।। ६ ।।

(तर्ज : कभी याद करके, गलि पार करके, चले आना)

चन्दना जोवे प्रभु वाट, माला फेरे दिन रात।
प्रभु आवो हमारे आंगना . . . . || टेर ||

सती सुखमाला चन्दनवाला, मुख से नवकार फेरती माला।
चन्दनबाला, तेला तप करके, सती मन हरके. . प्रभु || १ ||

परिणाम शुद्ध है देहली बैठी,
उडदों के बाकले सुपडा में पैठी,
देहली बैठी, आशा पूरो कृपानाथ,
याद करूं दिन रात || २ ||

प्रभु को देखके हर्ष मनावे, नैनों मे नीर नही प्रभु फिर जावे,
रुदन मचावे, प्रभु पीछे फिरके, गये सती तार के || ३ ||

इन्द्रों ने रत्नों की वृष्टि वर्षाई, देव दुंदभी से आवाज आई,
वृष्टि वर्षाई, धन्य २ सती आज, सारे आतम के काज ||४||

विक्रम संवत दो हजार पांचमे,
कियो चौमासा धूलिया शहर मे,
दो हजार पांचमे, चंचल कहे कर जोड,
संत सति सिर मोड || ५ ||

(तर्ज : अब तेरे सिवा कौन मेरे कृष्ण कन्हैया)

अब तेरे सिवा कौन मेरे लाज बचैया,
भगवान महावीर करो पार अनैया ।। टेर ।।

राजा दधिवाहन की हूं मै राजकुमारी,
किस्मत से दुःखी हो करके घर-घर में विखयारी ली मोल
धनवाह सेठ दे पायक को रुपैया ।। १ ।।

मूला सेठानी सेठ की करती थी अत्याचार ।
एक दिन वो मोका देख के, कोठे में दीनी डार ।
पावों बेडी डाल दी हाथो में हथकडियाँ ।। २ ।।

सिर को मुडाया वस्त्र सभी लीने उतारी,
लहगे लांग चढा के निज लाज बचाई,
कोठे में कर दी बंध वो धारी न दिल दया ।। ३ ।।

तीन दिन के बाद आज सेठजी आये ।
देखा जो कोठा खोल दिल में बहुत घबराये ।
आई मै थली बीच लगी भूख सतैय्या ।। ४ ।।

उडदो ही के थे वाकले थे सेठ पटाये ।
लेने गये लुहार इधर आप यही आये ।
हुआ मनोरथ पूर्ण मेरे हर्ष वधैय्या ।। ५ ।।

आके क्यो फिर गये आप विना आहार,
प्रभु थारे नैनों न मावे नीर दिल ये धीर ना धरे ।

उडदों ही का लो आहार हो त्रिशला के कन्हैया ॥ ६ ॥

हुआ अभिग्रह पूर्ण प्रभु ने आहार झट लीना ।
कचन भी बरसा सुर जय–जयकार बहु कीना ।
नैया भंवर में जीत रखो लाज खिवैया ॥ ७ ॥

卐

(तर्ज :

कालिया राणी सफल कियो अवतार,
वह तो पायी है भवदधि पार ॥ टेर

कोणिक नृप की छोटी माता, श्रेणिक नृप की नार ।
वीर जिनन्द की वाणी सुनके, लीना है सजम भार ॥ १

चन्दनवाला जैसी मिली गुराणी, नमी चरण विनय सहित,
पढी अग ग्यारा, निर्मल बुद्धि अपार . . . ॥ २

सुमति गुपति युत सयम पाला, चढ़ता परिणाम किया धार,
आज्ञा लेकर निज गुराणीजी की, तपस्या की अंगीकार ॥ ३

निज शक्ति लखी सती आराध्या, रत्नावलि तप हार,
चार लडी सपूर्ण कीना, आठवे अंग अधिकार ॥ ४

पाच वरष तीन मास दो दिन कम काली विचार,
धन्य महासती तप आराध्या, वन्दना बारम्बार ॥ ५ ।

आठ वर्ष संजम पाला, कर्म किया चकचूर ।
जन्म-जरा और मरण मिटाया, पहुँची मोक्ष मझार, ॥ ६ ॥

मुनि नन्दलाल तणा, शिष्य कहे छे, विलाडा शहर मजार,
ऐसी सती का स्मरण सेती, वरते मगलाचार ॥ ७ ॥

(तर्ज : सती पदमावती, सती पदमावती)

सती जम्वुवती २, कृष्ण पटराणी हुई मोटी सती ॥ टेर ॥
रिष्टनेमी त्रिभुवन धणी,
जाग्यो वैराग्य ज्यारी वाणी सुनी ॥ १ ॥

हाथ जोडी ने कहे सुनो भगवत,
सजम लेवुंगी पूछी ने कंत ॥ २ ॥

निज घर आय कहे जोडी दोनों हाथ,
दीजिए आज्ञा माने हो प्राणनाथ ॥ ३ ॥

जन्म-मरण भय लागो विशेष,
साभल ने बोल्या कृष्ण नरेश ॥ ४ ॥

जिम सुख होवे, तिम ही करो,
संसार सागर से जल्दी तिरो ॥ ५ ॥

कनक रत्नों की झारी जलसुं भरी,
स्नान करायो खुद आप हरी ॥ ६ ॥

गहना वस्तर खूब पहराय,
तुरन्त शिविका माय बिठाय ॥ ७ ॥

लाई प्रभुजी पासे हाजर करी,
दीधि आज्ञा माधव हर्ष धरी, ॥ ८ ॥

सजम लियो श्री मुखसु करी,
जक्षीणी आर्याजी की शिष्य बनी ॥ ९ ॥

गुरु हीरालालजी गुणारा भण्डार,
चौथमलजी जोड कीनी सूत्र के अनुसार ॥ १० ॥

(तर्ज : वीरा जिर-मिर, वीरा जिर-मिर)

वीरा अलगो, वीरा अलगो, रहीजे मोय ओ,
वीरा प्राण त्याग करसु अभीजी ।
वीरा प्रभुजी, वीरा प्रभुजी सामो जोय ओ,
वीरा सपना में वंछु नही कभी जी . . . . . ॥ १ ॥

वीरा अहिमुख, वीरा अहिमुख देणो हाथ ओ,
वीरा अगन. झपा करनी भली जी ।
वीरा करणी, वीरा करणी आतमघात ओ,
वीरा कौन भी साथ चाले नही जी . . . . ॥ २ ॥

वीरा अलगो, वीरा अलगो, रहीजे दूर ओ,
वीरा क्रूर दृष्टि जो जोवसू जी।
वीरा चढसी, वीरा चढसी कोपजो पूर ओ,
वीरा मारा प्राण खोवसूं जी ...... ॥ ३ ॥

वीरा सतियां, वीरा सतियां संतावीने भूल ओ,
वीरा इन्द्र भणी वछु नही रतिजी।
वीरा रही छु, वीर रही छु, शील सरोवर झूल ओ
वीरा नीच वचन कहिजे मर्त जी .... ॥ ४ ॥

वीरा जो तू, वीरा जो तू छेडसी मोय ओ,
वीरा जीऊं नही हूँ अध घडीजी।
वीरा रेसी, वीरा रेसी पछे तू रोय ओ,
वीरा शील व्रत मुझ जीवन जडीजी .... ॥ ५ ॥

धारणी जीभ, धारणी जीभ खण्डन करी लेत ओ,
धारणी ततक्षण प्राण त्यागियाजी।
मुनि राम–मुनि राम, कहे छे यह ओ,
वीरा शील पाले सो सोभागियाजी .... ॥ ६ ॥

(तर्ज :

तारा बोली रे सावरिया कैसे गुजरी ॥ टेर ॥

अवधपुरी के हरिश्चन्द्र राजा, हो गये ऐसे दानी,
अपनों मे भी दान दे दिया, धन–दौलत और नारी।
छोडी तीनो ने नगरिया कैसे गुजरी .... ॥ १ ॥

राजा विक गये, राणी विक गई, विक गये रोहित लाल।
साठ बार सोने के खातिर, काशी के वाजार।
प्रभु पारस की नगरिया कैसे गुजरी ..... ॥ २ ॥

चौबीस घण्टे राजा करते मरघट की रखवाली।
रोहित प्यारा लाल कन्हैया माजे लोटा झारी।
रानी भरने चली पनिया कैसे गुजरी .... ॥ ३ ॥

पडित बोला रोहित लाल को, फूल तोडकर लाना।
पूजा करनी ईश्वर की लौट के जल्दी आना।
रोहित दौड़ चला बगिया कैसे गुजरी .... ॥ ४ ॥

फूल तोडने रोहित लग गया तो, डस गया काला नाग।
जहर चढा तो पडा जमीन पर, कैसे उसके भाग।
माता पाई रे खबरिया कैसे गुजरी .... ॥ ५ ॥

माता नाता छोड दिया है, तीनों के सग तोड।
स्वर्गवास में वास किया है, अन्तिम शक्ति छोड।
ओह कैसे आ गई निन्दियां कैसे गुजरी .... ॥ ६ ॥

रोहित लाल की लाश उठाकर, मरघट ऊपर लाई ।
देखकर राजा हरिश्चन्द्र ने, आधी कणक मगाई ।
छलके नैनो की गगरिया, कैसे गुजरी . . . . ॥ ७ ॥

खतम कहानी कर दो भाइयों मिल गये तीनो प्राणी ।
हरिश्चन्द्र राजा सत्य नही छोडा, हो गई अमर कहानी ।
प्रभु पारस की नगरिया, कैसे गुजरी . . . . ॥ ८ ॥

(तर्ज : सियल व्रत पालो नर-नारी)

सियळ शुद्ध पालो मन–वच–काया,

तासे विघन सहु टल जाय ॥ टेर ॥

मोटी सती हुई अजना, पुत्र थयो वन माय ।
निश–दिन सुर सेवा करे, कांई सिहनो रूप वनाय ॥ १ ॥

विल–विल रोवे अजना, पूरव वात विचार ।
वाला सव वैरी हुआ, कांई जिनवर को आधार ॥ २ ॥

वसंत माला इम विनवे, वाई करो संतोप ।
कर्म कमाया आपना, कांई दीजे किनने दोप ॥ ३ ॥

इतने मे मामो आवियो, तिन अटवी के मांय ।
वाई तू रोवो मति, झट लीनी कठ लगाय ॥ ४ ॥

बैठाई विमान में, वसन्तमाला पिण लार।
मामाजी घर आपणे, काई ले चलिरो तिणवार ॥ ५ ॥

बालक मोती झूमको, देख्यो तिण विमान।
लेवण काजे उछल्यो, काई हेठे पडियो आण ॥ ६ ॥

आल न आयो लाल के, मात थई दिलगीर।
मामाजी लायो थोक ने, काई मेटी मन की पीर ॥ ७ ॥

हनुमत पाटन वेग सु, ले गयो निज स्थान।
मामाजो महोत्सव कियो, काई नाम दियो हनुमान ॥ ८ ॥

महामुनि नन्दलालजी, ज्ञान तणा दातार।
शियल तणा परताप से, काई वरते मगलाचार ॥ ९ ॥

(तर्ज : वीरजी नी वाणी भली छे, माने लागे छे)

वीरजी आव्या आगणी ए,
प्रभुजी आव्या आंगणी ए ॥ टेर ॥

महावीर पधारया, मारे आंगणी,
चदना जोवे छे वाट रे ॥ १ ॥

माये मुडनवली, पगमां छे बेडी,
एक पग उम्बर बार रे ॥ २ ॥

सती सुखमाला, चन्दनबाला,

मुख मे बोले छे नवकार रे ॥ ३ ॥

सुपडा मे खुणवली, अडदना वाकला,

त्रण दिननो उपवास रे ॥ ४ ॥

एकण जोया ने, पाछा जो वलियो,

चन्दना रोवे निरधार रे ॥ ५ ॥

चन्दना वीरजी ने पारणो करावे,

ज्याने छे जय–जयकार रे ॥ ६ ॥

सजम लेईने, केवल पाम्या,

पहुँच्या छे मोक्ष मझार रे ॥ ७ ॥

गुरु–गुरणीजी, अर्ज करत है,

सतिया का गुण गाय रे ॥ ८ ॥

(तर्ज : हरजस)

ब्राह्मीजी ने, सुन्दरी सतीजी,

शास्त्रों में भरपूर, सुहावे सति ॥ १ ॥

चन्दनवाला सती, राजमतीजी,

दीनों है वीरजी ने दान, सुहावे सति ॥ २ ॥

कौशल्या कुंता, सुलसा सीता,

कीनो है अग्नि को नीर, सुहावे सति ॥ ३ ॥

द्रौपतीजी ने, मृगावतीजी,
चीर वढ़यो भरपूर, सुहावे सति ॥ ४ ॥

शिवा ने सुभद्रा सतीजी,
काढयो है चालनी सुं नीर, सुहावे सति ॥ ५ ॥

पद्मावतीजी ने, प्रभावतीजी,
चूला है महा गभीर, सुहावे सति ॥ ६ ॥

दमयन्ती महासतीजी,
नल राजा छोडी निराधार, सुहावे सति ॥ ७ ॥

सोले सतिया के नित गुण गावो,
चरणो मे शीश नमाय, सुहावे सति ॥ ८ ॥

दान–सियल–तप–भावना भावो,
वरत्या है मगलाचार, सुहावे सति ॥ ९ ॥

卐

(तर्ज : अगर जिन देव के चरणों में)

सतिया हो गई जग मे, उन्ही को शीश नमाते है ।
वजाया धर्म का डका, उन्ही का ध्यान धरते है ॥ टेर ॥

ब्राह्मी और सुन्दरी बहने, ऋषभ की पुत्री कहलायी ।
वनी त्यागी, वनी ज्ञानी, वाहुवल को ये समझायी ॥ १ ॥

चन्दनबाला है गुणवान, सतियों में शिरोमणि है।
राजुल द्रोपदी शीलवान, पूरण प्रेम निभाया है ॥ २ ॥

सीता है शील की ज्योति, सुभद्रा वीरता धारी।
दिया था बोध श्रेणिक को, विदूषी चेलना राणी ॥ ३ ॥

कुंता सुलसा है दमयती, कौशल्या स्वारथ को त्यागी,
सहे है कष्ट वह भारी, जीवन सफल बनाया है ॥ ४ ॥

सिवा चूला प्रभावतीजी, कर्म का नाश करती है,
पद्मावती और मृगावती, प्रभु के पास आती है ॥ ५ ॥

किया है विजय भारत मे, दिया सत ज्ञान महिला को,
सूर्य शरण में आई है, उसे निहाल कर लीजे ॥ ६ ॥

卐

(तर्ज : लाखों प्रणाम, तुमको करोडों प्रणाम)

सोलह सतिया न्यारी तुमको लाखो प्रणाम ।
तुमको करोडो प्रणाम ।
शील धर्म रखवाली तुमको लाखो प्रणाम ।
तुमको करोडों प्रणाम ॥ टेर ॥

ब्राह्मी-सुन्दरी-चन्दन कुमारी,
राजमती है अखण्ड कुमारी,
शास्त्रों मे बखाणी, तुमको . . . ॥ १ ॥

द्रौपतीजी ने, मृगावतीजी,

चीर वढ़्यो भरपूर, सुहावे सति ॥ ४ ॥

शिवा ने सुभद्रा सतीजी,

काढ्यो है चालनी सुं नीर, सुहावे सति ॥ ५ ॥

पद्मावतीजी ने, प्रभावतीजी,

चूला है महा गंभीर, सुहावे सति ॥ ६ ॥

दमयन्ती महासतीजी,

नल राजा छोडी निराधार, सुहावे सति ॥ ७ ॥

सोले सतिया के नित गुण गावो,

चरणो मे शीश नमाय, सुहावे सति ॥ ८ ॥

दान–सियल–तप–भावना भावो,

वरत्या है मगलाचार, सुहावे सति ॥ ९ ॥

卐

(तर्ज : अगर जिन देव के चरणों में)

सतिया हो गई जग मे, उन्ही को शीश नमाते है।
वजाया धर्म का डका, उन्ही का ध्यान धरते है ॥ टेर ॥

ब्राह्मी और सुन्दरी वहने, ऋषभ की पुत्री कहलायी।
वनी त्यागी, वनी ज्ञानी, वाहुवल को ये समझायी ॥ १ ॥

चन्दनबाला है गुणवान, सतियों में शिरोमणि है।
राजुल द्रोपदी शीलवान, पूरण प्रेम निभाया है ॥ २ ॥

सीता है शील की ज्योति, सुभद्रा वीरता धारी।
दिया था बोध श्रेणिक को, विदूषी चेलना राणी ॥ ३ ॥

कुंता सुलसा है दमयती, कौशल्या स्वारथ को त्यागी,
सहे है कष्ट वह भारी, जीवन सफल बनाया है ॥ ४ ॥

सिवा चूला प्रभावतीजी, कर्म का नाश करती है,
पद्मावती और मृगावती, प्रभु के पास आती है ॥ ५ ॥

किया है विजय भारत मे, दिया सत ज्ञान महिला को,
सूर्य शरण मे आई है, उसे निहाल कर लीजे ॥ ६ ॥

卐

(तर्ज : लाखों प्रणाम, तुमको करोडों प्रणाम)

सोलह सतिया न्यारी तुमको लाखो प्रणाम।
तुमको करोडो प्रणाम।
शील धर्म रखवाली तुमको लाखो प्रणाम।
तुमको करोडों प्रणाम ॥ टेर ॥

ब्राह्मी-सुन्दरी-चन्दन कुमारी,
राजमती है अखण्ड कुमारी,
शास्त्रों में बखाणी, तुमको .... ॥ १ ॥

पांच पाण्डवों की द्रोपदी नारी,

कुता क्षमा शील की धारी।

सुभद्रा चपा उघाडी, तुमको . . . . ॥ २ ॥

कौशल्या, सीता, दमयन्तीजी,

शिवा सुलसा प्रभावतीजी,

चूला है गुणधारी, तुमको . . . . ॥ ३ ॥

मृगावती ने केवल पाया, दमयन्ती ने कर्म खपाया,

जग मे सुयश कमाया, तुमको . . . . ॥ ४ ॥

सूर्य विश्व मे नाम कमाया, शील धर्म को पूर्ण निभाया,

शासन को उजियाला, तुमको . . . . ॥ ५ ॥

(तर्ज :

कहे ब्राह्मी–सुन्दरी करत पुकारी, सुण भैया बात हमारी ॥ टेर ॥

तेने राज तख्त तज दीना, सत सयम मारग लीना।

फिर क्यो करी गज असवारी . . . . ॥ १ ॥

मान गज पे जो चढ जावे, सो कभी न मुक्ति पावे जी।

हम कहे तुमे हरवारी . . . . ॥ २ ॥

आ वन मे ध्यान लगाया, आपने कैसा कष्ट उठाया।

लो दिल मे जरा विचारी . . . . ॥ ३ ॥

बहनों की सुनी वाणी, चौंके बाहुबलि ध्यानी ।
जिन आज्ञा दिल में धारी . . . . ॥ ४ ॥

ततक्षण केवल पद पाया, श्री आदिनाथ पे आया ।
कहे चौथमल बलिहारी . . . . ॥ ५ ॥

(तर्ज :

श्री रामचन्द्र महाराज पधारे वन को, पधारे वन को,
सतवंती सीता नार चली उन सग को . . . . ॥ टेर ॥

तुम पीछा पलट जाओ, नार अयोध्या घर को,
जानकी घर को,
वन खण्ड का दु:खडा. सहय्या न जावे तुमको ॥ १ ॥

मै कैसी पलट जाऊ, नाथ अयोध्या घर को,
श्याम जी घर को,
मेरा जीवन जान प्राण बसेजी एक तुमको . . . . ॥ २ ॥

एक ओढन जरीका चीर, काने कुण्डल को,
काने कुण्डल को,
एक हीरा पदारथ लाल मोतीयन की लडको . . . ॥ ३ ॥

तुम धीमा चलो महाराज कोश दोय चलना.
मजल दोय चलना,
सीता रे कांटो लाग्यो खडग की धारां . . . . ॥ ४ ॥

एक मात कौशलया रूदन करे जी महला मे,
करे जी महला मे
मेरा राज्य करता पुत्र गया जी वन खण्ड मे . . . ॥ ५ ॥

कब आसी नन्दन लाल अयोध्या घर को,
रामजी घर को
जब होसी मगलाचार सभी के दिल को . . . . ॥ ६ ॥

(शील की चूंदडी)

(तर्ज :

बेना ओडो शीयल नी चूदडी जी,
सतिया ओडो शीयलनी चूंदडी जी,
ओड्या लागे सुहावणी नार, . . . बेना ॥ टेर ॥

प्रेम भक्ति नो कपडो मगावजोजी,
पछे धर्म नो रग लगाय . . . . ॥ १ ॥

गुरू भक्ति जो गोटो मगाव जो जी,
पछे तपस्या रो फीतो लगाय . . . . ॥ २ ॥

दया–दान रा फूल जडावजो जी ।
पछे ज्ञान रो गोखरू लगाय . . . . ॥ ३ ॥

आदेश्वरजी री दोनु पुत्रियाँ जी,
चूदड ओडी छे मन हुलसाय . . . . ॥ ४ ॥

जबु स्वामी री आठों ही कामण्याजी,

चूदड ओडी है करम खपाय . . . . ॥ ५ ॥

वलीं राम पियारी सती जानकी जी,

दियो सुभद्राजी कलक उतार . . . . ॥ ६ ॥

चदनबालादि सतिया हुई जी,

चूदड ओडी छे करम खपाय . . . . ॥ ७ ॥

दान–शीयल–तप–भावना रे,

शिवपुर मारग चार . . . . ॥ ८ ॥

गुरु अमोलकऋषिजी इम भाखिया जी,
गुरु कल्याणऋषिजी इम भाखिया जी ।

थे तो छोडोनी विषय कषाय . . . ॥ ९ ॥

(तर्ज : अपने जीवन की उलझन, उलझन)

कैसा चन्दन नाम मिला है, पूजा न कर पाऊ ।
लौट चले प्रभु वीर पलट कर, कैसे वापस लाऊ ॥ टेर ॥

हाथों मे जजीर पडी है, इनसे छुडा ना जाये ।
पग में मेरे बेडी पडी है, आगे बढ ना पाये ।
मन कहता है रोक प्रभु को, लेकिन गिर–गिर जाऊ ॥१॥

चाहे जीवन भर के लिए ही, बदी मुझे बना दो ।
लेकिन कोई जाकर प्रभु को. वापस जरा बुला दो ।
मुझको नही गम दर्शन पाकर, चाहे फिर मर जाऊ ॥२॥

कैसी–कैसी विपदा मिली, पर फिर भी कभी ना रोई,
हंस कर दुःख को सहती गई, पर आखें नही भिगोई,
लेकिन अव "मधु" इन आखों को रोके रोक न पाऊ ।।३।

।। चन्दना ।।

दोहा

श्री रे सिद्धारथ कुल तणा, भगवत श्री महावीर ।
कर्म शत्रु ने जीतने, विचरता सु धीर ।। १ ।।

(तर्ज :

कोशम्बी नगरी पधारिया जब, भववत श्री महावीर ।
अभिग्रह लई तेरह बोलरो, उपशम खिमिया रा धीर ।
जिनेश्वर बोल करलो अभिग्रह छः मास रो ।। १

नित प्रति उठे गोचरी जब, जब घर–घर भमे भगवान ।
आहार वहु विधि भात रो, पण लेवे नही वर्धमान ।
जिनेश्वर बोल करलो अभिग्रह छः मास रो ।। २

दाल–शाल घृत सारणा, बहु भांत–भात रा पक्कवान ।
वेरावे भला भाव सु, लेवे नही वर्धमान ।
जिनेश्वर बोल करलो अभिग्रह छः मास रो ।। ३

तिण अवसर कोशम्बी पति, ओ तो संतानिक मांड्यो जंग,
निज स्थान छोडी नीसरया, ए तो रथ पायक रा वृन्द ।
जिनेश्वर बोल करलो अभिग्रह छः मास रो ।। ४ ।।

दधिवाहन तो नासी गया जद, लूटी है चम्पा पोल,
पायक रे पाने पडी, आ तो माय ने बेटी दोय ।
जिनेश्वर, जो-जो करम उदे बेला पडे ।। ५ ।।

ायक रथ चलाय ने, वाने ले चालयो एकान्त ।
प लक्षण गुण देखने, पायक बोले विखमी बात ।
ति ने जो-जो करम उदे ओ बेला पडे ।। ६ ।।

ान सुनी जीभ्यां खंडी, जब धारणी किधो काल ।
ा ही नेत्र चलाय ने, जब विलखी थई चन्दनबाला ।
त ने जो-जो करम उदे ओ बेला पडे ।। ७ ।।

ायक कहे इण कॅवरी ने बाई, थे मति करो अभियाघात ।
छो बेटी मायरी ये बाई, थासु नही विखवी वात ये बाई ।
सु प्रीत उदारी मोयलो ।। ८ ।।

श्वास देय घर लाविया, वारा घर माये केहता नार ।
ने ले जायने बेच दो, केहता द्वेष धरे रूप देख सती रो ।
नि मोल लाया किण कारणे ।। ९ ।।

नक-भनक करे कन्थ पे, यांरा घर मांयें कहता नार ।
 तो ले जाय थाने बेच दो, नही तो केसा रावा ने जाय ।
न्याजी, पछे के बोला माने कयो नही ।। १० ।।

पायक डरप्यो घरनी सुं, वाने ले चाल्यो बाजार।
रूप लक्षण गुण देखने, मोलावे वेश्या घर नार।
सति ने, जो–जो करम उदे ओ वेला पडे ॥ ११ ॥

पायक मोल किया पछे जद, वेश्या करे ओ दाम त्यार।
पछे रई कॅवरी इम केवे बाई, तुम घर काई ओ आचार।
ए बाई, माने मोल लेयो किण कारणे ॥ १२ ॥

मांस खाणो मद पीवणो ये बाई, सजनो सोले सिणगार।
खाट हिडोले हीण्डणो ए बाई, नित नवला भरतार।
ए बाई, इसडो आचारज हम घरे ॥ १३ ॥

वचन सुणी विलखी थयी, एतो विलखी थई चन्दन बाल।
इण घर माने वेचो मति, कलक चढसी तावो।
पिताजी, इण घर माने बेचो मति ॥ १४

दाम दिया कुण छोडसी जद, वेश्या पकड्यो हाथ।
जिण शासन रूपी देवता, वारे आण मूक्यो माथे हाथ।
सति ने, बैक्रिय बादरा दोलू किया ॥ १५

हाथ–पाव लबूरिया जद, नासी है वैश्या नार।
पाछे रही ओ कॅवरी इम केवे, मारो शील पल्यो तंत शाल
ओ पिताजी, मारा धर्म तणा गुण जोयलो ॥ १६

इतना मे जब आविया, वारो नाम धन्नाजी सेठ।
रूप लक्षण गुण देखने, वारा घर बेटी री चावो।
सति ने जो–जो करम उदे बेला पडे ॥ १७

पायक मोल लिया पछे जब, सेठ करे दाम त्यार।
पाछे रही कॅंवरी यू केचे, साजी तुम घर कई है आचार।
ओ साजी, म्हाने मोल लेवो किण कारणे ॥ १८ ॥

अरिहन्त–सिद्ध–साधु तणा ये बाई, केवलया रो भाख्यो धर्म।
सुद्ध सामायिक पोषा करो ये बाई,
करो करणी ने काटो करम ये बाई।
इसडो आचरण हम घरे ॥ १९ ॥

वचपन सुणी हरख्या घणा जब, हरख्या है चन्दन वाला।
करम धरम समोसर्या ले, कितनो बीतेला काल सतिने।
जो–जो करम उदे ओ बेला पडे ॥ २० ॥

विश्वास दे घर लाविया, वारा घर माये मूला नार।
धरम करम जाने नही, मूला द्वेष धरे रूप देख सति रो।
याने मोल लाया किण कारणे ॥ २१ ॥

दीसे सुलक्षणी डावडी, यारा जीवन है भरपूर।
याने बेटी ज्यू राखजो, यासु राखोजी रूडो हेत सति ने।
सेठ सीख भोलावण देरया ॥ २२ ॥

मूला तो भोजन करे जब, कॅंवरी पखा ले पाव।
वीणी रा बालज ढुल पड्या, जब लूस लिया तत सालो।
पिताजी, पल्ला सूं पूछ खोले लिया ॥ २३ ॥

मूला तो मन माये चिन्तवे, थांरा भीतर और विचार।
भलो नही जी मारा कंथ रो, ये तो परणन लाया।
सोको कंथा जी, परी रे कडाओ विषरी वेलडी ॥ २४ ॥

दोहा

स्वारथ तो बारे गया पकडी है चन्दन बाल ।
माथो मूडी ने गाथे गज धर्या, मूड्या वीणीरा डाल ॥१॥

हाथा पागा माय बेडिया, नाख्या भोयरा रे माय ।
आडो देईने तालो दियो, सति दियो है तेलो ठाय ॥ २ ॥

स्वारथ निज घर आविया, जो वे छे चन्दन बाल ।
मूला तो मारी इस्तरी, घर–घर भटकन जाय ॥ ३ ॥

बार–बार केवे सेठजी, मूला शंकाणी म्हारी नार ।
उठ प्रभाते कलो करे, बैठो है पीयर जाय ॥ ४ ॥

पाडोसन केवे सुनो सेठजी, जोवो छो चन्दन बाल ।
मूला तो थारी इस्तरी, नाख्या हे भोयरा रे भाय ॥ ५ ॥

वचन सुनी विलखा थया, खोलने जोवे किवाड ।
कष्ट देख्यो कॅवरी तणो, स्वारथ पूछयो वाय ॥ ६ ॥

कुण थाना, कुण थरपना, कुण था पर धरयो देग ।
कॅवरी कहे सुणो तातजी, मारे कर्म तणा ही दोष ॥ ७ ॥

सोंयरा सु बारे काढिया, सोच मती लावो लिगार ।
बेडी कटावु थायरी, तेडिने लाऊ लुहार ॥ ८ ॥

कॅवरी केवे सुणो तातजी, चौथो दिन मुझ आज ।
पहलां करावो मावे पारणो, करडी लागी भूख ॥ ९ ॥

ढाल

भूडी रे भूख अभागिनी, बाला खानी थारो नाम लाल रे,
आपो जणावे आप रो, ठौड गिने न कुठौड लाल रे।
कीधा ओ करम ना छूटिये . . . . ॥ १ ॥

थाल कचोला दीसे नही, सेठजी जोवे वारम्वार लाल रे,
आहार ताला माहि दे गई, कूचो है मूला रे हाथ लाल रे,
कीधा ओ करम ना छूटिये . . . ॥ २ ॥

लाधा उडदा रा बाकला, धाल्या है सुपडा रे माय,
लाय चन्दनबाला ने सूपिया, तेडन चाल्या लुहार लाल रे,
कीधा ओ करम ना छूटिये . . ॥ ३ ॥

कॅवरी तो बैठी भावे भावना,
जो कोई आवे अणगार लाल रे,
वरत निपजाऊ बारमो, देऊ निरदोषित आहार लाल रे,
कीधा ओ करम ना छूटिये . . . ॥ ४ ॥

फिरता तो गिरता पधारिया, भगवत श्री महावीर लाल रे,
आय आंगणिये उभारया, पाच उणायत छे मास लाल रे,
दान सुपातर दीजिए . . . . ॥ ५ ॥

बारा तो बोल पूरा मिलिया,
नही देख्या नयना में नीर लाल रे,
विन वेरया ही पाछा फिरया, सती हुया दिलगीर लाल रे,
दान सुपातर दीजिए . . . . ॥ ६ ॥

रेण–वेण कर रोवती, आसू दीठा महावीर लाल रे,
आय आंगणियें ऊभा रया, मनि हुया हुल्लास लाल रे,
दान सुपातर दीजिए . . . . ॥ ७ ॥

पातरा श्री वर्धमान रा, दातार चन्दनवाला लाल रे,
लोनी उडदा रा बाकला, कृपा करोनी महावीर लाल रे
॥ ८ ॥

दान देत वेडी झडी, मस्तक ऊगा वाल लाल रे,
अचित फूला री विरखा हुई, सौनैया साढो बारे क्रोड
लाल रे ॥ ९ ॥

देव वजावे दुंदभी, जय-जय करे जयघोप लाल रे,
देवनामी वस्त्र वरषिया, रत्न वरसाया अनमोल लाल रे
॥ १० ॥

जाय मूला ने इम कह्यो, थें क्यो बैठा इन ठौल लाल रे,
थानी तो बेटी तीरथ धोकिया, सौनैया वरष्या अनमोल
लाल रे ॥ ११ ॥

मूला तो चाली उतावली, लोक ले जासी मारो माल लाल रे
मूला तो मन माये चिन्तवे, जाय खमावे चन्दन बाल
लाल रे ॥ १२ ॥

आवो माताजी बैठो सांगवे, मारे आम तणो प्रताप लाल रे
आप मासु इसडी करता नही, वीर न लेता मांसु आहार
लाल रे ॥ १३ ॥

इतरे मृगावती राणी सांभलयो,
सेठजी घरे चन्दनबाल लाल रे,
जावीनी रांव उतावला,
तेडीने लावो चन्दनबाल लाल रे ।। १४ ।।

किणरी मासी ने, किणरी भानजी,
स्वारथियो संसार लाल रे,
संजम लेसां अणी अवसरे,
मारे शील तणो प्रताप लाल रे ।। १५ ।।

छत्तीस हजार आरजां बिचे, गुरणीजी चन्दनबाल लाल रे,
करम खपायी मुगत्यां गया, वख्या है जय-जयकार लाल रे ।। १६ ।।

दान-सियल-तप-भावना, शिवपुर मारग चार लाल रे,
श्रद्धो आराधो भला भाव सुं, ज्यू उतरो भव पार लाल रे ।। १७ ।।

(चूंदडी)

रंग दे चुनरियां . . . . रंग दे चुनरियां,
नेम प्रभु मोरी . . . . रंग दे चुनरियां ।। टेर ।।

ऐसो रंग रंग दे-रंग नहीं जाये, हाँ रंग नहीं जाये,
धोबी धोवे चाहे, सारी उमरिया . . . . ।। १ ।।

लाल नही ओढ़ू मैं तो, पीली नही ओढ़ूं,
हां, पीली नही ओढ़ू, माने मंगादो मारी धोली
चुनरियां . . . . ॥ २ ॥

विना रंग चढिये मैं तो – घर नही जाऊँ,
हाँ घर नही जाऊँ, बीति जाये चाहे सारी उमरियाँ
॥ ३ ॥

प्रतिक्रमण के बाद

नमन करी गुरुदेव को, खमाऊं सारा जीभ को ॥ टेर ॥

लक्ष चौरासी भ्रमत फिरा, कठिन–कठिन नर देह धरा
अपराधी मैं रोज को ॥ १ ॥

अनत दोष प्रभु माफ करो, सब पापों का नाश करो,
मन–वच तन कर आपको ॥ २ ॥

श्रमण उपासक वृन्द को, गुण–गुण–धारी मुनिंद को,
तीरथ चारो सघ को ॥ ३ ॥

ससार समुदर पार करो, भव–भव से उद्धार को,
पावे हम सब शिव को ॥ ४ ॥

प्रतिक्रमण के बाद बोलना

वन्दन श्री गुरुराज को, खमाऊ संघ समाज को ॥ टेर ॥

गुरु गौतम अणगार महान, गणधर ज्ञानी गुणों की खान,
मन–वच–तन कर आपको . . . . ॥ १ ॥

दूर होय दैनिक दुष्कर्म, जमे हृदय में निर्मल धर्म,
पावें जिससे मोक्ष को . . . . ॥ २ ॥

गुरु ही तारण तीरण जहाज, कोटी–कोटी वन्दन मुनिराज
माफ करो अपराध को . . . . ॥ ३ ॥

पार्श्वनाथ प्रभु की आरती

जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा।
सुर–नर करे थारी सेवा, त्रिजगना देवा,
जय देव, जय देव ॥ टेर ॥

पहलो तो मतिज्ञान, प्रभु अठाईस भेदे,
आठ करम नो छेदे, पाप ना दल भेदे ॥ १ ॥

दूजो तो श्रुति ज्ञान, प्रभु चतुर दस भेदे,
चउदे पूर्व घर सुधा, भव–भागे खुदा ॥ २ ॥

तीजी आरती प्रभु, अवधि ज्ञान केरी,
मिटा दे भवनी फेरी, सेवा करूँ तेरी ॥ ३ ॥

चौथी आरती, प्रभु मन पर्यव जानो,
दोय भेदनो राया, मुगति सकरानो ॥ ४ ॥

पाचमी आरती, प्रभु केवल एक भाख्यो,
अखण्ड सुख जेने चाख्यो, अजर–अमर राख्यो ॥ ५ ॥

पाचो आरती, प्रभु जे कोई भणसे,
अखण्ड सुख जेने लेसे, सोभाग्य गुण गासे ॥ ६ ॥

वन्दन करते वक्त बोलना

गुरणीसा आये, सभी के मन भाये,
विराज रहे पाट पे, वन्दन करलो तिखुता के पाठ से
॥ १ ॥

सुनो मेरे भाई, अगर सुख पाना, है सदगति जाना
करम सब काटके, वन्दन करलो तिखुत्ता के पाठ से
॥ २ ॥

आप बडे ज्ञानी, सुनाते जिन वाणी, तीराते भवी प्राणी,
बनादो कल्याणी, आये है वडी दूर से, वन्दन करलो
तिखुत्ता के पाठ से ॥ ३ ॥

गणधर विभाग

(तर्ज : उड़ उड़ रे म्हारा काला रे कागला)

उठ उठ रे २ मारा ज्ञानी रे जीवडा,
दो घडी प्रभुजी रो भजन करो २ ॥ टेर ॥

प्रभु भजने सुं शान्ति मिले है,
करमां रो कोड कटे रे ज़िवडा .... ॥ १ ॥

प्रभु भजने सु मैल धुपे है,
ममता री आच टले रे जिवडा .... ॥ २ ॥

प्रभु भजने सु अनुभव होवे,
जीव निज अवगुण जोवे ज़िवडा .... ॥ ३ ॥

अवगुण देख्यां मनडो टिके है,
चक्कर खातो रुके रे जिवडा .... ॥ ४ ॥

मन रुकेने सु ज्ञान वड़े है,
प्रभुजी सुँ तार जड़े है जीवडा .... ॥ ५ ॥

तार जुडियां प्रभु खुद आजावे,
मनड़ा मे डेरा लगावे जीवडा .... ॥ ६ ॥

प्रभु आया अरि सारा लाया,
गोळी रे भडाके कागा भागे ... ॥ ७ ॥

(तर्ज :

हीरे को क्यों व्यर्थ लुटाये, अमृत को ठुकराये
तुमे क्या हो गया है।

उडता पछी गाते जाये, जीवन गीत सुनाये,
तुमे क्या हो गया है ॥ टेर ॥

ओ भोले बंधुओ ! कुछ तो वता दे कहाँ पे ध्यान है,
खोया कहाॅ पे भंवरे, समझ ले कहाँ पे तेरा स्थान है,
जिन फूलों पे तू इतराये, फूल धूल मिल जाए ॥ १ ॥

ओ भोले साथियों ! घडियां जो बीते फिर न आयेगी,
चार दिन की चांदनी है, फिर तो अंधेरी रातें छायेगी,
क्यों न अपने कदम वढाये, फिर काये पछतायें ॥ २ ॥

ओ भोले प्राणियों ! अव भी विगडी सुधार ले,
पहुॅचे किनारे नैया, हाथ में धरम की पतवार ले,
दु.खडे भव-भव की मिट जाये, सुन ले क़मल सुनाये ॥ ३ ॥

卐

(तर्ज : सारी सारी रात तेरी याद)

प्रभु के भजन विना जीवन गमाया रे,
कुछ ना कमाया, तूने कुछ ना कमाया ॥ टेर ॥

लाखों करोडों तूने रुपये कमाये,
सोने और चाँदी के ढेर लगाये,
साथ न जाये कौडी, झूठी सारी माया रे ॥१॥

पांच-चांच मंजिल के महल बनाये,
आनन्द से रहने को बाग लगाये,
जाना पडेगा छोड़ संतों ने गाया रे ॥ २ ॥

गोरा-गोरा सुन्दर तन को सजाया,
माल मसाले खाकर पुष्ट बनाया,
राख बनेगी एक दिन मिट्टि की काया रे ॥३॥

बडे-बडे लोगों में नाम कमाया,
सारे शहर को अपना बनाया,
सुख के है साथी सारे व्यर्थ फैलायो रे ॥ ४ ॥

धर्म कमाई तेरे साथ चलेगी,
प्रभु के भजन से ही मुक्ति मिलेगी,
शान्ति प्रभु ने सच्चा मार्ग बताया रे ॥ ५ ॥

卐

उपदेशी-स्तवन

जाना नही निज आतमा, ज्ञानी हुए तो क्या हुए ।
ध्याया नही शुद्ध आतमा, ध्यानी हुए तो क्या हुए ॥ टेर

सूत्र सिद्धान्त पढ़ लिये, शास्त्री महान बन गये।
आतम रहा वहिरातमा, पंडित हुए तो क्या हुए ॥ १ ॥

पंच महाव्रत आदरे, घोर तपस्या भी करे।
मन की कषाये न गई, साधु हुए तो क्या हुए ॥ २ ॥

माला के दाने फेरते, मनवा फिरे बाजार में।
मणका न मनसे फेरते, जपिये हुए तो क्या हुए ॥ ३ ॥

गाके-बजाके-नाचके, पूजन भजन सदा किये।
प्रभु हृदय मे न वसे, पुजारी हुएं तो क्या हुए ॥ ४ ॥

करते न गुरुवर दरशन को, खाते सदा अभक्ष्य को।
दिल में जरा भी दया नहीं, मानव हुए तो क्या हुएं ॥५॥

मान बढाई कारणे, द्रव्य हजारों खरचते।
घर के तो भाई भूखे मरे, दानी हुए तो क्या हुए ॥ ६ ॥

दोष पराये हेरते, दृष्टि न अन्तर फेरते।
शिवराम एक नाम के, शायर हुए तो क्या हुए ॥ ७ ॥

(तर्ज :

मेरे मालिक की दुकान में सब लोगो का खाता।
मेरे प्रभु की दुकान में सब लोगों का खाता।
जैसा जो भी कर्म करेगा, वैसा ही फल पाता ॥ टेर ॥

(तर्ज :

धीरज री धरती करो, खिमिया री खेती कीजो जी २,
हृदय रूपी हलखडो, बेलया शील राखीजो जी ॥ १ ॥
धरम री खेती कीजो जी .... ॥ टेर ॥

खेती करो जिन धर्म री, जिनसुं पार उतरनोजी,
भव सागर तरणोजी, धरम री खेती कीजोजी ॥ २ ॥

न्याय वाधू निज न्यावटे, सुकरत बीज वइजे जी २,
ज्ञान तणी विरखा करोजी, डोरी ध्यान री दीजोजी ॥३॥

राग–द्वेष दोय ठूठका, ज्यारा खोज काढीजेजो २,
क्रोध–मान–माया, कारमी, ज्यारा खोज वूरीजेजी ॥ ४ ॥
सोच रूपी सुवटो चुगे, ज्याने उडाय दीजोजी २,
धेग रूपी धाडा पडे, जद मन वस कीजोजी .... ॥ ५ ॥
चिन्ता रूपी चिडकल्या चुगे, ज्याने उडाई दीजोजी २,
पाचु ही इन्द्रिया वश करो, खेती खायवा ना दीजोजी ॥६॥
सुकरत कण भेलो करो, जटे मडलो मडीजे जी २,
तपस्या रूपी ताली करो, जठे लाटो लटिजे जी,
जठे खलो काडीजे जी .... ॥ ७ ॥
खेती करे जिन धरम री, ज्याने मांगे सोई दीजोजी २,
गुरु प्रसादे विनवु, गर्भवाम निवारो जो,
भव सागर तारोजी .... ॥ ८ ॥

(तर्ज : गजल–साखी)

आशाओं का हुआ खातमा, दिल की तमन्ना धरी रही,
बस परदेशी हुआ रवाना, प्यारी काया पडी रही ॥ टेर ॥

करना–करना हो रे मूरख, हरदम फूक लगाता है,
मरना–मरना लब्ज जबा पर, जरा कभी नही लाता है,
आखिर सब है मरने वाले, झडी न किसी की खडी रही
आशाओं . . . , ॥ १

एक पडितजी पत्री लेकर, गणित हिसाब लगाते थे,
समेकाल तेजी मदी का, होनहार बतलाते थे।
आया काल चले जोशीजी, पत्री कर मे धरी रही,
आशाओ . . . . ॥ २

एक वकील आफिस में बैठे, सोच रहे थे अपने दिल,
फला दफा पर बेहस करूगा, पोइट मेरा प्रबल,
इधर कटा वोरट मौत का, कल की पेसी पडी रही,
आशाओं . . . . ॥ ३

एक सेठजी बैठे दुकान पर, हिसाब किताब लगाते थे,
इतना लेना, इतना देना, बडे गौर से जोड रहे,
काल बली की लगी चोट जब, कलम कान मे टंगी रही,
आशाओं . . . . ॥ ४

करने इलाज एक राजा को, डाक्टरजी तैयार हुए,
विविध दवा औजार साथ ले, मोटर कार सवार भये,

उलटी मोटर मर गये डाक्टर, दवा बोक्स में भरी रही,

आशाओं . . . . ॥ ५ ॥

जेटलमेन वक्त शाम का, रोज धूमने जाते थे,
पाच सात मित्रो को सग ले, बाते खूब बनाते थे,
लग गई ठोकर, गिर गये बाबू, घडी हाथ में लगी रही,

आशाओं . . . . ॥ ६ ॥

हलयाईजी को भी देखो, पुरी कचोरी बनाते है,
घी के वदले बेच डालडा, पैसा खूब कमाते है,
गिर गया मौत की भट्टी मे, जब गरम चासनी पडी रही

आशाओ . . . . ॥ ७ ॥

ट्टी छुदी मिट्टि रुदो, सुन्डर बर्तन बना रहा,
कुभकार के अजब हाल है, मिट्टि से धन कमा रहा,
चली एक फूटी हडिया, नई मटकियां धरी रही,

आशाओं . . . . ॥ ८ ॥

नादार चोरों को पकडे, पकडे और पिटाते है,
गरम कर लेते पहले, दोनों हाथों से खाते हैं,
ल वलि ने चोट लगा कर, इस दुनिया से रिहा किया

आशाओं . . . . ॥ ९ ॥

बावाजी जा जंगल में, योग विद्या लगा रहे,
र नीचे श्वास खीचकर, सप्त कुण्डली लगा रहे,

रुक गया सास रह गई होंश, टिपकी तुंबी पडी रही,
आशाओं . . . . ॥ १० ॥

(तर्ज : जरा सापने तो आवो चलिए)

जरा मन में विचारो भैया, नर–तन पाने का क्या सार है
जो भक्ति करे न भगवान की, वह मनुष्य पशु अनुसार है
॥ टेर

खाने–कमाने की चिन्ता मे, रात–दिवस बरबाद करे,
एक घडी भी बैठ प्रेम से, कभी न प्रभू को याद करे,
वह जीवन लगता भार है, भला ये भी कोई अवतार है ॥

पशु तो जितना खायेगा उतना, औरों पर उपकार करे,
लेकिन प्राणी तू जितना भी खाये, खाये उसे बिगाड करे
सुख लेने मे जब तू तैयार है, सुख देने में क्यों इनकार है
॥ २

दान करे सन्मान करे और प्रेम से प्रभु का ध्यान करे,
अशोकमुनि इस भांति जग में, स्व पर कल्याण करे,
वह प्राणी सबका सरदार, उस प्राणी का बेडा पार है ॥

(चेतन का स्तवन)

थन्ने धीरे से समझाऊं, थन्ने छाने से समझाऊ,
थन्ने मीठी–मीठी वाणी सुनाऊ रे चेतनियां,
सुनाऊ रे चेतनियां, तू बारे–बारे क्यों भटके ।। टेर ।।

आतम गुण से तू भरपूर, फिर भी किसी नशा में चूर,
लाखीणो सो जनम गमायो रे चेतनिया २,
तू वारे–बारे क्यों भटके ।। १ ।।

वाहर घर मे घणो उजालो, आतमा मे घोर अधारो,
ज्ञान दीपक से जग–मग ज्योति जगाले रे चेतनिया,
तू बारे–वारे क्यो भटके ।। २ ।।

इण शरीर की भूख मिटावे, रकम–रकम का भोजन खावे,
आतमा री भूख कियां मिटसी रे चेतनियां २,
तू वारे–वारे क्यो भटके ।। ३ ।।

ठडा–ठडा जल सुं नावे, खुशबोई का तेल लगावे,
वढ़िया–वढिया कपडा पेरोरावे रे चेतनिया २,
तू बारे–वारे क्यो भटके ।। ४ ।।

मखमल की गादी पर सोवे, घणा–घणा सुख तन ने देवे,
झूठी–साची गप्पा बैठ लगावे रे चेतनिया २,
तू वारे–वारे क्यो भटके ।। ५ ।।

मोटर गाडी चढ़-चढ़ घूमे, नाटक निनेमा में नित झूमे,
झूठी मस्तियां मे पागल बन जावे रे चेतनिया २,
तू बारे–वारे क्यो भटके ॥ ६ ।।

आत्मा की निर्मलता चावे, साचो सपनो प्राणी पावे,
कचन सम जीवन चमकाले रे केतनिया २,
तू वारे–वारे क्यो भटके ॥ ७ ॥

(टेलीफोन) ७

महावीरजी ने करसा टेलीफोन, आज का जमाना मे,
शान्तिनाथजी ने करसां टेलीफोन, आज का जमाना मे
॥ टेर ॥

माला नही, सामाइक नही, पेली चहिये दूध,
ये तो भर–भर गिलासां पीवे दूध, आज का जमाना मे ...
॥ १ ॥

नौकारसी नही पोरसी नही, पेली चहिये चार,
ये तो भर–भर मग्गा पीवे चाय .... ॥ २ ॥

बेटा छोड्या काण कायदा, ववां छोडी लाज ।
बेटा राख्या चोटी-पट्टा, बेट्या पेरया बेलवाटम ॥ ३ ॥

नवा–नवा श्रृंगार चालिया, खाली पेरे कौन ।
ट्रिकल, टेरीकाट, चालिया, ऊपर चालियो फारीण ॥ ४ ॥

रिक्षा चालया, मोटर चालया, पयदल चाले कौन ।
दो पगा री स्कूटर चालया, घर–घर ऊभी कार ॥ ५ ॥

धर्म ध्यान तो सव ही छोड्या, वाच रैया अखबार ।
कुर्सी बैठ्या कुल्ला छांटे, मुख माये भर लिया पान ॥ ६ ॥

वीडी चहिये, सिगरेट चहिये, और चहिये तास ।
घर–घर मे तो रेडियो चहिये, बजावे दिन–रात ॥ ७ ॥

गाया छोडी, भेस्या छोडी, कुत्ता बांध्या बार ।
गोमाता री सेवा छोडी, गोबर-गोमूत्र नही है घर ॥ ८ ॥

आप महावीर श्री मोक्ष पधारिया, मै इण भरत मझार,
भीलो भगत मारो अति दु.ख पावे, जिणसु कियो
टेलीफोन . . . . ॥ ९ ॥

(तर्ज : पर्वतों के पेडों पर)

विपदाओ के माध्यम से, कर्मो का किनारा है ।
डरना भी क्या कष्टो से, सत पुरुषो का नारा है ॥ टेर ॥

गज सुखमाल मुनि, राह निकट की चुनि ।
आजादी ली हस के गुणी, सीस पे अगारा है ॥ १ ॥

धन–धन खदकजी, सहि कैसी होगी व्हथा ।
चर्म किया नन से जुदा, आखिरी संथारा है ॥ २ ॥

धर्म रुचि की दया, एक तन गया तो गया ।
विष पिया नागला दिया, स्वार्थ सुधारा है ॥ ३ ॥

जहर दिया महाराणी, राजा परदेशी पी गया ।
विगठन पापों का किया, रोप को विसारा है ॥ ४ ॥

दुःख है विचारों मे, अवधूतो ने जान लिया ।
अव्यावाद सुख ही सदा, निर्लिप्तो को प्यारा है ॥ ५ ॥

माताओं को नहीं सताना

(तर्ज :

मावा ने सतावो मती भोला भाईडा,
मम्मी ने रुलावो मती भोला भाईडा ॥ टेर ॥

थाने खेलनो सिखायो, थाने बोलनो सिखायो,
थाने चालनो सिखायो, मारा भोला भाईडा,
मावा ने सतावो मती भोला भाईडा ॥ १ ॥

मै तो रोटी–लूखी–सूखी खाई,
थाने दूध – दही रो मलाई,
ऊपर सु शक्कर भी खिलाई ...मारा ॥ २ ॥

थाने गोदयां में खेलाया,
थाने झूला मैं झूलाया,
रस्सी पकड पकड हिलाया ...मारा ॥ २ ॥

क्या साधु क्या संत महात्मा, क्या राजा क्या राणी,
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सब की कर्म कहानी,
वो ही सबका लेन-देन का, सई हिसाब चुकाता ॥ १ ॥

करता वह इन्साफ सभी का, ऊँचे आसन बैठे,
उसका फैसला कभी न बदले, लाख कोई सिर फेरे,
धर्म की नैया पार करे वो, पाप की नाव डुबोता ॥ २ ॥

बडे-बडे कानून प्रभु के, बडी-बडी मर्यादा,
किसको कौडी कम नहीं देता, किसको कौडी ज्यादा,
इसीलिए वह सारे जगत का, जगत पिता कहलाता ॥३॥

चले नहीं उसके घर रिश्वत, चले नही चालाकी,
उसके लेन-देन की भैया, रीति बडी है बांकी,
समझदार तो चुप रह जाता, मूरख शोर मचाता ॥ ४ ॥

कोकी करणी करियो रे भैया, करनी न करना काला,
लाख आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला,
अच्छी करणी करो चतुर जन, समय गुजरता जाता ॥५॥

(तर्ज :

ओ भगवन मुक्ति पहुँचाने वाले, तीरण और तारणे वाले,
सुनजो दयालु मारी विनन्ती, ओ भगवन,
सुनजो दयालु मारी विनन्ती ॥ टेर ॥

मै अज्ञानी जीव प्रभुजी, नेम धरम ना जानू,
कपट भरी दुनिया की चालां, मै कुछ ना पहचानू,
हिरदो मारो शुद्ध राखजो, ज्ञान थे दीजो साचो ॥ १ ॥

अन्त कोई थारा ज्ञान रो, आज तलक नही पायो,
रात–दिवस थारी–मारी मे, मूरख जनम गमायो,
माया का फदा सु काढो, अटक्योडो जीवड मारो ॥ २ ॥

चोरा रो वाजार भरयो है, पाखड्यां रो मेलो,
लोग मिलावट का धंधा सुं, कर रह्यो पैसो भेलो,
चोरा सु मारी रक्षा कीजो, सता री संगत दीजो ॥ ३

पैसा वाला – पैसा वाला, सु ही नातो जोडे,
निर्धन की छिया भी, निर्धनियां सु मूडो मोडे,
निर्धन का महावीर रखवाले, धीरज बधाने वाले ॥ ४

मतलव की दुनिया है सारी, कूण–कूणा की लागे,
सुख मे सब साथी बन जावे, दुःख मे दूरा भागे,
निर्धन का तो महावीर रखवाले, धीरज बधाने वाले ॥

(तर्ज :

मान करेला. गुमान करेला, तो नीच गति माहीं जाय ॥

कई रे गुमान करे जीवड़ा

एक नगरी दस दरवाजा, तो पांच प्रधान छट्टो मन

'कई रे गुमान करे जीवडा . . !

एक कुवो ने पाच पिणियार्यां, नीर भरे सव न्यारी–न्यारी,
कई रे गुमान करे जीवदा .... ॥ २ ॥

धस गयो कुओ ने, चुस गयो पानी,
तो विलखी थई पांचो पणियार्यां,
कई रे गुमान करे जीवडा .... ॥ ३ ॥

वेलु केरी भीता ने पुष्प केरी तटियां,
तो उड गया हस ने, रह गई मिट्ठिया,
कई रे गुमान करे जीवडा .... ॥ ४ ॥

ोना रा कोठा ने, रत्ना सु जडिया,
तो ऊठ चलया नगरी रा महाराजा,
ई रे गुमान करे जीवडा .... ॥ ५ ॥

ोथो चक्री सत कुमारो, वे कोणो रूप तणो अहकारो
ई करे गुमान करे जीवडा . . ॥ ६ ॥

ोले रोग थया ततकालो, देख शरीर चिते भूपालो,
ई रे गुमान करे जीवडा .... ॥ ७ ॥

प्पन करोड का नाथ कहायो, तो पिण मुओ कोशम्बी जातो
ई रे गुमान करे जीवडा .... ॥ ८ ॥

ोई नही मिलयो पानी पावन वालो,
तो थारो गुमान किण–विध रे वेला,
ई रे गुमान करे जीवडा .... ॥ ९ ॥

कुण जाने मीत किण विद आसी,

तो वो घर छोड किसो घर जासी,

कंई रे गुमान करे जीवडा . . . . ॥ १० ॥

इन्द्र–नरेन्द्र ने चक्रवर्ती, वे सब छोड़ गया है धरती,

कंई रे गुमान करे जीवडा . . . . ॥ ११ ॥

(तर्ज :

सीधि रेल चली शिवपुर को, देव मिनख दोय आडा।
जहाँ जावे जाही रे ले जावे, पवन पतंग आ,
चाली ज्ञान गाडी, आ चाली रेल गाडी,
चाली शिवपुर रेल खडी रे, तैयारी हाँ हाजर रे तैयारी,
चालो शिवपुर ॥ टेर ॥

सत्तावन संवर का डब्बा, रोको अमृत वाणी।
सतरा सयम माल भरयो छे, बारा वरत रा जड दो
किवाडी २ ॥ १ ॥

तिवारी का चोकी फेरा, चार कसायक टालो।
अट्ठाईस इस्टेशन बनिया, सांसो सांस की मील लगाई,
हाँ मील लगाई ॥ चालो....॥ २ ॥

रान दिवस दोय इंजन जुडिया, उम्मर अग्नि लगाई ।
कर्म कोयला मायें झोंको, क्रिया करण की कूंची लगाई,
हाॅ कूची लगाई ।। चालो....।। ३ ।।

ब्रह्म जोत की चिराग लगाई, नही पवन संचानो ।
केवल ज्ञान, केवल दर्शन, क्षायक समकित जोत उजवाली,
हाँ २ ।। चालो....।। ४ ।।

शी सयम की सीटि लगाई, सत गुरुजी उपकारी ।
पच महाव्रत चोका पालो, खर्ची ले लेनी खरच विचारी,
हाँ २ ।। चालो....।। ५ ।।

दया धरम का टिकट कराया, सत गुरुजी उपकारी ।
कोई एक उत्तम पास कटावे, मोक्ष तणा शिव ऐसा भारी,
हाँ २ ।। चालो....।। ६ ।।

राग–द्वेष दोय चोर लुटेरा, आगे करत विखेरो ।
सरकारी में धोडो पडियो,
चेतन खडा बाबू आगे न पछाडी, हाँ २ ।। चालो....।। ७ ।।

नारी तार जवाबी पक्खो, आगे होत हुस्यारी ।
सावज कर २ सजकर सूतो, मूरख चेतन होत खरावी,
हाँ २ ।। चालो....।। ८ ।।

दर्शन की दूर्बिन लगाई, जल थल देख सिपाही ।
प्रभु नाम की तोप लगावी, मोह मिथ्यात्वी को दूर
भगाओ, हाँ २ ।। चालो....।। ९ ।।

धर्मी-धर्म गया मोक्ष में, पापी पाप संवारे।
मोह नींद में सूतो रे मूरख, चूक गयो स्टेशन नरक मझारी,
हाँ २ ॥ चालो ...॥ १ ॥

(तर्ज : अब तो घुडला पर घुमे थारो)

माने अब के बचा दे मोरी माय,
वटाउ आयो लेवण ने ॥ टेर ॥

आठ कोठरी नव दरवाजा, इण नगरी रे माय।
लुकती छिपती मे फिरू रे, छिपतां ने छेडे वेरी नाथ ॥१॥
केवे कन्या सुनो डोकरी, सुनजो मारी वात।
अब के वटाउडा ने पाछो फेर दो,
करदो अवक्रोडो गुन्हो माफ ॥ २ ॥

कहे डोकरी सुणो पावणा, सुनजो मारी बात ॥
मारा कन्या भोली-भाली, करदो अव करोडो गुन्हो माफ
॥ ३ ॥

कहे पावणा सुनो डोकरी, सुनजो मारी बात।
माने हुक्म मोटा घरां रो, आयो ढलतोडी माजल रात ॥४॥

सावन रा सतरा गया ने, अब तीज परभात।
मारा मन मे ऐसी आवे, खेलू साथणिया रे साथ ॥ ५ ॥

पांच भायांरी बेन लाडली, सिर पर धरियो हाथ ।
पाछी फिरकर देखती रे, कुण-कुण आवे बाई रे साथ ॥६॥

कहे कबीर सुन भाई साधु, इयु सासरिये जाय ।
इण सासरिए सबने जाणों, पार उतारो दीनानाथ ॥ ७ ॥

(तर्ज : दुनियां में हम आये हैं)

आवशे ए काल क्यारे, कइयें के वाय ना,
दीपक बुझाशे क्यारे, समझी सकाय ना ॥ टेर ॥

जिन्दगी ने महल मानी रच्यो पच्यो रह्यो नही,
पानानो महल छे ए मने, खबर पडी नही ।
खबर नही आ महल नश, नही करवा भरोसा ॥ १ ॥

प्रमाद अने प्रपंचमा, जीवन विताव्यु,
तोफान एक आव्यो ने, मैं सर्व गुमाव्यु,
समझाय पछो साचु तारे द्वार चढयो ना ॥ २ ॥

जीवन दीपकनी ज्योति, धीमि २ थती गई,
घडपन पछी आव्यु ने, वलि उमर वधी गई,
परभव नु हु तो भातु कंई, बाधी शक्योना ॥ ३ ॥

जैन समयक्त मंडल कहे छे, एवो छे ए महल,
एमा फसाया पछी, भव तरवो छे मुश्किल,
छुटवा एमाती साची छे, जिनवरनी सेवना ॥ ४ ॥

(तर्ज :

अब घर छूटा, चेतन समझियेजी ।। टेर ।।

छप्पर पुराणा पड़ गया जी, तूटन लागा बन्द ।
संध–सध खुलन लगाजी कांई,
तो ही ना दीसे मति मंद . . . . ।। १ ।।

झरोके जाली लगी जी कांई, वारी आडी भीत ।
मूल नीव डग–मग करे जी कांई,
भई पुरानी रीत . . . . ।। २ ।।

लक्षण सुभट नासी गया जी कांई, साई ने लोक गया दूर ।
शिखर थर–हर धूजिया जी कांई,
भई पुरानी रीत . . . . ।। ३ ।।

थिगली पण ठेरे नहीं जी कांई, नही कोई रक्षपाल ।
क्यू सूतो तूं नीद में जी कांई, अब तो सुरत संभाल ।। ४ ।।

अब करणो हे सो कीजिए कोई, देणां है सो दे ।
लेणां है सो लीजिए जी कांई, केणा सो केह ।। ५ ।।

लाय लगी चऊं फेरसुं जी कांई, मिल रह्यो झालों झाल ।
मुनिराम कहे सब काढजो जी कांई,
इण घर बहु माल . . . . ।। ६ ।।

थाने नारियां लागे प्यारी,
थाने मावां लागे खारी,
थाने माया लागे प्यारी....मारा ॥ ३ ॥

ये तो गुरुसा रो केनो,
थे तो स्वाध्यायी वनो,
थे तो शिक्षित वनो....मारा ॥ ४ ॥

(तर्ज :

नर कर उस दिन की याद, जिस दिन चल ३ होगी ।
तू जोड–जोड कर धरे वस्तु, तेरी कोई नही होगी ।
जव आवे यम के दूत नगर मे खल वल खल होगी ॥

सव भरे रहे भण्डार नारी तेरी सगी नही होगी ।
काठी के लिए दो वांस, ओढ़ने को मलमल होगी ॥

ले जायेगे श्मशान, चिता सोने के लिए होगी ।
झट देगे अगनी लगयाय, राख तेरी जल जल जल होगी ॥

भले–वुरे जो किये पूछ सभी, परभव मे होगी ।
यो कहता है 'भूदेव' कर्मगति पल–पल पल होगी ॥

भजन

(तर्ज : °

चाहे लाखो नोट कमाया, चाहे ऊंचा भवन वनाया।
पर व्यर्थ है जीवन उसका, जिसने प्रभु गीत ना गाया ॥टेर॥

तू सात वजे जव जागा,
दिन भर तो करी कमाई,
पायल की रुणक जुणक मे,
मद होश हो रात गवाई,
प्रभुजी का मीठा प्यारा, इक नाम ना मुह पर लाया,
पर व्यर्थ . . . . ॥ १ ॥

पत्नि वच्चों को रुलाकर,
जाएगा जव तूं अकेला,
रह जाएगी भरी तिजोरी,
स्नेही मित्रों का मेला,
नही साथ चलेगा कोई, नही साथ मे कोई आया.
पर व्यर्थ . . . . ॥ २ ॥

अव भी जागो तो सवेरा,
शूलों को फूल वना दे,
होली वन जाए दिवाली,
रोते को यदि हंसा दे,
केवल मुनि खुश्बू महकी, जिसने कुछ करके दिखाया,
पर व्यर्थ . . . . ॥ ३ ॥

धर्म रो बधावो

(तर्ज :

पाच बधावा सखी म्हारे ओवटे आया ।
कोई आयजो ओ, आय उतरिया धर्म री पोलमें जी ।।टेर।।

पेली वधावो माने समकित आई ।
कांई दूजे जओ, दूजे ओ वरत सुहावणाजी .... ।। १ ।।

तीजे बधावो माने चारित्र आयो ।
काई चौथे जओ, चौथे ओ शील सुहावनोजी ... ।। २ ।।

पाचमे वधावो मारा ज्ञानी गुरु आया ।
कोई जानूज ओ, जानू सतगुरुसा री सेवा में करूँजी ।।३।।

समकित सुसरो सा माने घणा रे सुहावे,
सुवावेज ओ, समता सासुजी रे पाये लागेणोजी ।। ४ ।।

सवर जेगेसा माने घणा रे सुहावे,
सुहावेज ओ समता भाभी सर पाय लागणोजी ।। ५ ।।

शील सुरगा देवर घणा रे सुहावे,
सुहावेज ओ गुप्ता देयराणीजी सुं मीठो बोलनोजी ।। ६ ।।

खिमिया तो ननदल माने घणी रे सुहावे,
सुहावेज ओ, तपसी ननदोई नितरा पावणाजो ।। ७ ।।

धीरज पिताजी रो म्हाने लाड सुहावे,
सुहावेज ओ, दया माताजी सुं कद मिलाजी ... ।। ८ ।।

केवल वीरा वाई ने लेवण आया, कोई जाणुज ओ,
मुगत पियरिये माने मामणोजी . . . .   ॥ ९ ॥

इसडो वधावो सतगुरु मोल मंगावो, कोई इसडेज ओ,
इसडो वधावो म्हारे मन गयोजी . . . .   ॥ १० ॥

इसडो वधावो ए वायां मोल नही आवे, कोई समकित री,
समकित री वायां मिलकर गायलोजी . . . . ॥ ११ ॥

विनजारो

(तर्ज :

काया नगर माय दस दरवाजा, पांच प्रधान छट्ठो मन राजा,
दया रे धर्म रो आयो विनजारो,
मोक्ष मारग सु आयो बिनजारो
मूरख कई जाणे धर्म री बाणी . . . .   ॥ १ ।

काया नगर माये धोबन राणी,
कपडा धोवे बिना साबून पानी ॥ २ ।

काया नगर मांय तेलन राणी,
तेल काढे बिना बलदा ने घाणी ॥ ३

काया नगर माय इमरत कुआ, नीर भरे पाचों पिणियारिय
खुट गयो नीर, बिलखी थई राणिया   ॥ ४

काया नगर माय जूनी–जूनी भीत्यां,
जूनी–जूनी भीत्या लगायो है चूनो ऊपर जिगामिग,
माय दीशे सूनो .... ॥ ५ ॥

काया नगर म,य मडियो है मेलो,
उड गयो हस बिखर गयो मेलो ॥ ६ ॥

(तर्ज : बड ने पिपल दोय बीचे नेमजी)

गुरु ने गुरणीजी आये स्थानक में,
कदियन किया प्रभु दर्शन जाय ....
धधा मे भूल गई भगवान ॥ १ ॥

रुपया जी दिया प्रभु, पैसाजी दिया ।
तो कदियन दी प्रभु, कोडी एक दान....
धधा मे भूल गई भगवान ॥ २ ॥

अन्नज दियो प्रभु, धन्न दियो,
तो कदियन घाली प्रभु, मुट्ठी भर धान....
धधा मे भूल गई भगवान ॥ ३ ॥

गायां भी दीनी प्रभु, भैसां भी दीनी,
तो कदियन घाली प्रभु लोटो भर छाछ....
धधा में भूल गई भगवान ॥ ४ ॥

पीयरिया सुं आणोजी आयो,
तो कदियन रही प्रभु पीयर जाय......
धंधा मे भूल गई भगवान ।। ५ ।।

रामजी रा घर सु आणोजी आयो,
तो ऊठ चली प्रभु आधी रात.....
धंधा मे भूल गई भगवान ।। ६ ।।

पाछीज फिरने पाछीज जोभू,
तो कंई-कई आवे प्रभु मारे लार......
धधा मे भूल गई भगवान ।। ७ ।।

फूटी जी हांडी ने, जिगतो छानो,
तो लकड़ा री गाडी बाई थारे लार....
धंधा में भूल गई भगवान ।। ८ ।।

पाछी जी मेलो प्रभु, पाछी जाऊं ।
तो धरम करूँ प्रभु दोनोई हाथ....
धंधा मे भूल गई भगवान ।। ९ ।।

आयोडी बाई तू पाछी नही जावे,
तो नरक गिदोलो बाई सारी रात.. ....
धधा में भूल गई भगवान ।। १० ।।

प्रसन्नचन्द्रजी का स्तवन

(तर्ज :

प्रणमुं तमारा पाय ओ प्रसन्नचन्द, प्रणमुं तमारा पाय,
तमे छो मोटा ऋषिराय प्रसन्नचन्द्र,
प्रणमुं तमारा पाय ॥ टेर ॥

राज्य छोडी रळियामणो रे, जाणी अस्थिर संसार ।
वैरागी मन वालियो रे, लीनो संजम भार ॥ प्रसन्न ॥१॥

शमशाने जाय काउसग कर्या रे, पग ऊपर पग चढाय,
बे हूँ बाहु ऊचा करया रे, सूरज सामे दृष्टि लगाय ॥२॥

दूत मुख वचन सुनी ने, कोप चढयो ततकाल ।
मन सु संग्राम माडियो रे, जीव पड्यो झंजाल ॥ ३ ॥

श्रेणिक वीर ने पूछियो रे, स्वामी एनी कौन गति थाय,
भगवत कहे हमना मरे तो, सातवे नरके जाय ॥ ४ ॥

क्षण एक अन्तरे पूछियो रे, स्वारथ सिद्ध विमान ।
वागी देव दुंदभी रे, ऋषि पाम्या केवल ज्ञान ॥ ५ ॥

मनने जीते जीतवु रे, मनने हारे हार ।
मन लेई जाय मोक्ष में रे, मन ही नरक मझार ॥ ६ ॥

प्रसन्नचन्द्र मुगते गया रे, श्री महावीर ना शिष्य ।
रूप विजयजी कहे धन्य-धन्य, जोया शास्त्र सिद्धान्त ॥७॥

卐

नवकार मंत्र का स्तवन

(तर्ज : होठों को छूलो तुम)

नवकार है गुणकारी, शुद्ध मन से ध्या लेना।
भव–भव के वन्धन से, तुम मुक्ति पा लेना।
नवकार है....॥ टेर ॥

हृदय मे रखी इसको, आत्मा शुद्ध वन जाता,
सदा दिल से रटो इसको, जाना नरक में नही पडता,
सब मत्रो से वलशाली, नया जीवन वना लेना ॥ १ ॥

ये शाश्वत अनादि है, और मगलकारी है,
मिट जाती उपाधि है, अति आनन्दकारी है,
है चवदह पूर्व का सार, नही इसको भूला देना ॥ २ ॥

सदा होवे मगलाचार, हो जायेगी नैया पार,
जीवन का है आधार, मिल जायेगा मुक्ति द्वार,
नवकार के ले शरणा, सुख शान्ति को पा लेना,
भव भव के ॥ ३ ॥

जीवन की ज्योति यही, है शांति सुधा सुख धाम,
महामत्र की महिमा अपार, वन जायेगे विगडे काम,
श्रद्धा से कहे भारती, सदा सुमिरन कर लेना,
भव भव के ॥ ४ ॥

नवकार मंत्र का स्तवन

श्री नवकार जपो मन रगें, श्री जिन शासन सार रे,
सर्व मंगलमा पहलो मगल, जपता जय–जयकार रे ।। टेर ।।

पहले पद त्रिभुवन जन पूजित, प्रणमुं श्री अरिहन्त रे,
वाला प्रणमु श्री अरिहन्त रे ।। १ ।।

अष्ठ करम बीजे पद लीजे, ध्यावो सिद्ध अनन्त रे,
वाला, ध्यावो सिद्ध अनन्त रे ।। २ ।।

आचारज तीजे पद सुमरूँ, गुण छत्तीसनी खान रे,
वाला गुण छत्तीसनी खाण रे ।। ३ ।।

चौथे पद उपाध्याय जपिजे, सूत्र सिद्धान्त सुजाण रे,
वाला सूत्र सिद्धान्त सुजाण रे ।। ४ ।।

सभी साधु पचम पद प्रणमु, पंच महाव्रत धार रे,
वाला पच महाव्रत धार रे ।। ५ ।।

नव पद येनु नव–निधि आपे, अडसठ वर्ण उधार रे,
वाला अडसठ वर्ण उधार रे ।। ६ ।।

श्रावक नी जात जेवी विजी कोई जात नही ।
भावना नी रात जेवी विजी कोई रात नही ।
मायानी लात जेवी विजी कोई लात नही ।
ज्ञानी नी वात जेवी विजी कोई वात नही ।
सतानो सग जेवो विजो कोई संग नही ।

भक्ति नो रंग जेवो विजो कोई रंग नही।
मुक्ति न जंग जेवो विजो कोई जग नही।
महावीर न सग जेवो विजो कोई सग नही।
ससार ना ताप जेवो विजो कोई ताप नही।
नवकार ना जाप जेवो विजो कोई जाप नही ॥

श्री नवकार जपो मन रगे, श्री जिन शासन सार रे।
सर्व मगलमा . . . . जय-जयकार रे ॥

छ-छ-पद

(तर्ज : छः छः हिराती सुंजे शोभे शोभाग्य टिली)

छः छ. पदो थी मारी अन्तर आराधना,
शाश्वत सिद्धि ने पमाय, एवी अन्तर आराधना ॥ टेर ॥

पहेलु पद ने मारो आतमदेव सत्त छे, सतचित्त आनद स्वरू
ऽ ऽ ऽ . . . . सतचित्त आनन्द स्वरूप,
चेतनना चमकारे चोमेर व्यापतो
जडमा मलेना एनु रूप . . . . मारी अन्तर ॥ १ ॥

बीजु पदते मारो आत्मा अविनाशी छे,
धृव ने शाश्वत स्वरूप ऽ ऽ ऽ धृव ने शाश्वत स्वरूप,
देह-देहिनी अभेद भिन्नता, म्यान मा समसेर रूप ॥ २ ॥

त्रीजु पद ते मारो आत्माज कर्ता,
व्यवहार नय ने अधीन ऽ ऽ ऽ व्यवहारे नयने अधीन
व्यह्वारे कर्ता कर्मना जणाय पण,
निश्चय स्वरूपाधीन . . . . ।। मारी ।। ३ ।।

चोथु पद ते मारो आत्माज भक्ता,
कीधेला कर्मो नो भोग ऽ ऽ ऽ की धेला कर्मो नो भोग,
पोते करीने पोतेज भोगवे,
ईश्वर नो मानेना योग . . . . . ।। मारी ।। ४ ।।

पाचमु पदते सहु थी सोहामणो ।
मोक्षनी प्राप्ति पमाय ऽ ऽ ऽ मोक्षनी प्राप्ति पमाय ।
पर सयोगे संसारे आथड्यो,
स्वभावे स्वमा समाय . . . . . . ।। मारी ।। ५ ।।

छठु पद ते मोक्ष उपाय छे ।
सहुनो छे सरखो अधिकार ऽ ऽ ऽ सहुनो छे सरखो अधीकार
राग-द्वेष अज्ञान वंधन तोडता,
उघडे छे मोक्षनु द्वार . . . . . . ।। मारी ।। ६ ।।

आराधक भाव ये आत्मा नो भाव छे ।
गुरु कृपा से पमाय ऽ ऽ ऽ गुरु कृपा से पमाय ।
ललित गुरुनी असीम आशिप थी ।
ससार सागर तराय . . . . . . ।। मारी ।। ७ ।।

पंच परमेष्टी का स्तवन

पञ्च परमेष्टि छे सार
बीजु बध असार छे ॥ टेर ॥

अरिहन्त देवो सर्व जाणे छे ।
राग-द्वेष ना जीतनार ॥ १ ॥

सिद्ध परमात्मा मोक्षमा विराजे ।
तेमनु सुख छे अपार ॥ २ ॥

आचार्य देव नेता समान छे ।
पाले पलावे आचार ॥ ३ ॥

अपाध्यायजी भणे भणावे,
ज्ञान बगीचे रमनार ॥ ४ ॥

साधुओ सत्तावीश गुणो थी शोभता
सद्गुणना भण्डार ॥ ५ ॥

ससार ना सुखो सर्व क्षणिक छे
धर्ममा शान्ति अपार ॥ ६ ॥

नमस्कार हो एवा प्रभु ने ।
तेमना विना नही उद्धार ॥ ७ ॥

ऋषभनाथ स्वामी का स्तवन

(तर्ज :

ऋषभदेव स्वामी, तुम हो अन्तर्यामी ।
वनिता नगरी के तुम जाया--जाया–जाया ओ
अयोध्या नगरी के तुम राया–राया–राया ॥ टेर ॥

मात तुम्हारी मोरादेवी, ओ नाभिजी नन्दन
तुम जाया–जाया–जाया . . . . ॥ १ ॥

साझ सवेरे दुन्दभि वाजे, ओ इन्द्र मिली ने
जश गाया–गाया–गाया . . . . ॥ २ ॥

उठ सवेरे करूँ नित वन्दना, ओ कर जोडी ने
लागु पाय–पाया–पाया . . . . ॥ ३ ॥

तन–मन–वारूँ ने, शीश जुकाऊ, ओ दुःखडा
निवार्या सुख पाया–पाया–पाया . . . ॥ ४ ॥

दान–शियल–तप–भावना–भाऊं, ओ कर्म
खपाय मुक्ति पाया–पाया–पाया . . . ॥ ५ ॥

महावीर स्वामी का स्तवन

(तर्ज :

दया करो हे त्रिशला के प्यारे,

हम भी तो सेवक जिनजी तुम्हारे,

हम भी तो सेवक प्रभुजी तुम्हारे ॥ टेर।

न हम मे वल है, न हम में भक्ति।

न हम मे साधन, न हम मे शक्ति।

हमने तो मन–मन चरणो में डाला,

हम भी तो सेवक जिनजी तुम्हारे....॥ १ ॥

तुमने ही चन्दनवाला को तारा,

गौशाले के भी हित में विचारा,

विष धारी चण्डू के काज सारे.... ॥ २ ॥

अर्जुनमाली अधमो का साथी,

निन सात मारे मानव जाती,

पलटे थे पासे जव तू ने धारे..... ॥ ३ ॥

करुणा के सागर जव तुम कहाते,

फिर क्यों न करुणा हम पर भी लाते,

आये है याचक दाता के द्वारे ... ॥ ४ ॥

'प्यारा' है दर्शन, 'मीठी' है वाणी,

कण–कण मे छलके तेरी निशानी,

मस्ताने मन के गूजेगे नारे . . . . ॥ ५ ॥

महावीर स्वामी का स्तवन

(तर्ज : इन्हीं लोगों ने, इन्हीं लोगों ने)

वीर प्रभु ने, महावीर प्रभु ने, कैसी यह समता दिखाई,
देखो रे भाई ..... ॥ टेर ॥

ग्वालों ने कानों में खीले ठोके,
पैरों पे खीर रधाई .... ॥ १ ॥

महा भयकर चण्डकोशी को,
मुक्ति की राह दिखाई .... ॥ २ ॥

चन्दना जैसी राज दुलारी को,
सयम की वात वताई .... ॥ ३ ॥

अर्जुन जैसे महा हत्यारे को,
सीधाई मोक्ष मे विठाया .... ॥ ४ ॥

करुणा के सागर करुणा करके,
हमको भी राह दिखाई .... ॥ ५ ॥

महावीर भगवान का स्तवन

(तर्ज : छल्लो आवे आधि रात वटावे चटनी)

त्रिशलाजी रा लाल घणा वाला लागे क
वोलो–वोलो रे महावीर भाया भाग जागे ॥ टेर ॥

कुण्डलपुर में घणो आनन्द छायोक,
जनम्या-जनम्या रे महावीर भलो जोग पायो ॥ १ ॥

सिद्धारथ राजा मन में खुशिया लावेक,
देखे-देखे रे लाल रो मुखडो वारी जावे ॥ २ ॥

काली रे घटा में ज्यू चाद चमके क,
आया भारत मे महावीर ज्यारी सूरत चमके ॥ ३ ॥

छप्पन कुमारियां मिलने दौडी आवे क,
नाचे कूदे रे मेला में धुम्मर गीत गावे ॥ ४ ॥

इन्दर-इन्द्राणियां मिलने उत्सव कीनो क,
लेगा-लेगा रे मेरू पे पूरो जस लीनो ॥ ५ ॥

रत्नां रा पालनिया में महावीर झूले,
सखियां हालरियो सुनावे रे रसिक फूले . . . . ॥ ६ ॥

महावीर से प्रार्थना

(तर्ज :

करजो-करजो नैया पार, महावीर तारो छे आधार,
मारा जीवन नो तू सार, महावीर तारो छे आधार ॥ टेर ॥

झूठी छे आ जगनी माया, झूठी छे आ काची काया,
झूठो जान्यो सब ससार . . . . महावीर ॥ १ ॥

जीवन लागे छे आ खारू, नाम तुम्हारा लागे प्यारू,
तमे छो सौ ना तारणहार . . . .   ॥ २ ॥

मारी अरजी उरमा धरजो, संकट मारा दूरा करजो,
तमे छो आशाना इक तार . . . .   ॥ ३ ॥

मारी नैया निर्भय करजो, प्रभु तमे सुखानी वन जो,
हरजो आतमना अंधकार . . . .   ॥ ४ ॥

सुन्दर गुण तुमारा गावे, प्रभुजी तुमने मलवा मागे,
सूनो लागे छे संसार . . . .   ॥ ५ ॥

महावीर का स्तवन

(तर्ज : दुनियां पैसा री पूजारी)

दुनिया वीर की पुजारी, गुण ने गावे नर और नारी,
जग मे धर्म कमावे भारी,
हो वीरा–महावीरा, हो वीरा-महावीरा
(दुनिया . . . . . .)

राजा सिद्धारथ रो प्यारो, माता त्रिशलाजी रो दुलारो,
प्रभुजी भक्ता रो रखवारो,
हो वीरा–महावीरा, हो "वीरा महावीरा,
(दुनिया . . . . . .)

धरम अहिंसा रो अपनाया, चण्डकौशिक ने समझाया,
उणने भव सु पार लगाया,

हो वीरा महावीरा, हो वीरा महावीरा,

(दुनिया . ....)

अर्जुनमाली भी तिर पायो, पारणो चन्दन ने करायो,
श्राविका सुलसा ने बनायो,

हो वीरा महावीरा, हो वीरा महावीरा,

(दुनिया ....)

वाणी वीर की मन भावे, फेरा जन्म मरण मिट जावे,
"सज्जन" "शान्ति मण्डल" गुण गावे,

हो वीरा महावीरा, हो वीरा महावीरा,

(दुनियां ......)

महावीर भगवान की महिमा

(तर्ज : दुनियां पैसा री पूजारी)

महिमा वीर की है न्यारी, शरणे आते नर और नारी,
मन मे ज्योत जगाते भारी,

करुणा धारी है, हो करुणा धारी है,

(महिमा ......)

मानव जीवन को तू ने पाया, मन को विषयो में भरमाया,
क्यों ना गीत प्रभु के गाया, करुणा धारी हो,
हो करुणा धारी है। (महिमा ......)

जग मे दो दिन का है डेरा, साथी कोई नही है तेरा,
प्रभुजी जग का तारणहारा, करुणा धारी है,
हो करुणा धारी है। (महिमा ......)

नैया भव सागर मे तेरी, मान ले बात ना कर तू देरी,
प्रभुजी मेटे भव की फेरी, करुणा धारी है'
हो करुणा धारी है। (महिमा ......)

जग में शुभ करनी तू कर ले, कलिमल पापों को तू धोले,
प्रेम से शान्ति मण्डल ये बोले, करुणा धारी है,
हो करुणा धारी है। (महिमा ......)

(तर्ज : हो साथी रे, तेरे बिना भी क्या)

हो वधु रे ...., निज को नहीं तू ने जाना–२ . . .
मानव का चोला है, हीरा अनमोला है–२ ....
रस धर्म का तू पीना, बिना धर्म क्या जीना–२ ....
हो वधु रे .... ॥ टेर ॥

दौलत जोड़ी–मेहनत करके, अन्त समय मे–साथ न आवे,
दिल की धड़कन-चलते-चलते, क्या जाने ये कब रुक जावे,

सब कुछ लुटाया है–२. . . . ., जाग ना पाया है,
ज्ञान का दीपक जगाना, मन तेरा तू सजाना,

हो वधु रे . . . . ॥ १ ॥

जग मे साथी–सुख में सारे, दुःख मे कोई काम न आये,
पल दो पल तो–नाम प्रभु का, भजले भाई साथ में आये,
पापो को धोना है-२ . . . . . ., निर्मल होना है,
ज्ञानी गुरु का तो कहना, प्याला धर्म का पीना,

हो वधु रे . . . . ॥ २ ॥

लाख चौरासी–घूमके आया, विषयों मे क्यों तू भरमाया,
सत–सगत मे कभी ना आया, जीवन तेरा यों ही गवाया,
पाया तू मोका है–२ . . . . . ., अवसर अनोखा है,
"शान्ति मण्डल" सग ध्याना, ध्यान बिना भी क्या जीना,

हो वधु रे . . . ॥ ३ ॥

(तर्ज : होठों को छूलो तुम)

प्रभु वीर दया करके, मुझे अपना बना लेना ।
विनन्ती है यही तुमसे, मेरी बिगडी बना देना ॥ टेर ॥

दुःखियो का तू साथी है, निर्बल का सहारा है ।
मझधार मे नैया है, चऊ और अधेरा है ।
मेरी नाव डूबती है, इसे पार लगा देना ।

(विनंती है . . . .

पावन है तू भगवन, कलि मन की मुसकाई,
करती हूँ तुझे वन्दन, खुशियों की बहार आई,
प्यारी है छवि न्यारी, मुझे दरस दिखा देना।

(विनन्ती ....)

जीवन का इरादा मेरा, करू पूजा व तेरी सेवा,
मिट जाये भव फेरा, तेरी धुन लगाऊ देवा,
मुझको भी लगन तेरी, मुझे पार लगा देना।

(विनती ....)

तेरे देखे शान्ति मिले, मुरझाया कमल खिले,
सद्ज्ञान की ज्योति जले, मन सब आश फले,
"शान्ति मण्डल" गाया सत पथ को दिखा देना।

(विनन्ती ....)

(तर्ज : होठों को छूलो तुम)

महावीर दया कर दो, तेरे दर पे आया हूँ।
तू ही देगा शरण मुझको, यही आशा लगया हूँ।

(महावीर . ..)

१) चण्डकौशिक पापी का, तूने जन्म सुधारा था।
सती चन्दनबाला को, निज हाथो से तारा था।
लाखो को उबारा है, शुद्ध भाव से आया हूँ।

(तू ही ....)

२) तेरी गीत सदा गाऊं, तेरी धुन में खो जाऊं।
तेरे द्वार से ना जाऊं, तेरा दरस सदा पाऊं।
तेरी याद बहुत आती, हृदय में बिठाया हूँ।
(तू ही . . . .)

३) "शान्ति मण्डल" की भी, विनन्ती है यही तुमसे।
वरदान प्रभु दे दो, तिर जाऊं भव जल से।
प्रभु नाम तेरा प्यारा, मेरे मन में बसाया हूँ।
(तू ही . . . .)

卐

(तर्ज : जहाँ से जाती हूँ, वहीं चले आते)

प्रवचन गाव – गाव फिर के सुनाते हो,
भव जल तिरने की राह बताते हो,
ये तो बताओ मुनि ऽ ऽ ऽ ये गुण कहा मिले।
भोजन भी खाते हो तो, उतना ही लाते हो,
कभी–कभी लघन की लडिया लगाते हो,
ये तो बताओ मुनि ऽ ऽ ऽ ये गुण कहाँ मिले ।। टेर ।।
हो ऽऽऽऽ तुमने महाव्रत धारे है, महाव्रत धारे,
प्राणी मात्र ही के तुम प्यारे हो २,
किसी को सताने की तो राह भी न जाते हो,
कोई करे द्वेष भी तो प्रेम से बुलाते हो,
ये तो बताओ मुनि ऽऽऽऽ ये गुण कहाँ मिले ।। १ ।।

हो ऽऽऽऽ तुमने जादू किया है, जादू किया है,
सघ सकल का मन हर लिया है २,
पास तो न धेला ये क्या मन्तर चलाते हो,
लाखो करोडो पतियो की वन्दना जो पाते हो,
ये तो बताओ मुनि ऽ ऽ ऽ ऽ ये गुण कहाँ मिले ॥ २ ॥

हो ऽ ऽ ऽ ऽ तुमने शान्ति सजाई है, शान्ति सजाई,
नित दरशन चाह जगाई है २,
विरजीपुरम सघ की ये चाह को पुराते हो,
खेतर फरसने को कब फरमाते हो,
ये तो बताओ मुनि ऽ ऽ ऽ ऽ ये गुण कहा मिले ॥ ३ ॥

शान्तिनाथ भगवान का स्तवन

(तर्ज :

मै तो शान्ति ही शान्ति चाहूँ सदा,
नित्य मगलमय गुण गाऊ सदा ॥ टेर ॥

अचलाजी के नन्दन, विश्व के प्यारे,
शान्ति दुलारे थे हिन्द सितारे,
जिन शान्ति ही शान्ति वरतार्ई सदा ... ॥ १ ॥

नव लक्ष जो जाप जपे तेरा कोई
सुख शान्ति रहे उस घर मे सदा ही
दु.ख मारी बिमारी न आवे कदा.... ॥ २ ॥

जैसे नाम गरुड का जो लेवे कोई ।
काटा सर्प का जहर उतारे सही ।
तैसे शान्ति के नाम से पाप अदा ॥ ३ ॥

शान्ति नाम का अमृत प्याला सदा,
जो पीवे पिलावे अमूल्य सुधा
पावे स्वर्ग और मोक्ष भला सर्वदा ॥ ४ ॥

अनुभव के ही साथ कहे सबसे ।
पूज्य गुरु अमोलक यू तुमसे ।
गावो शान्ति ही शान्ति होवे सदा.... ॥ ५ ॥

तप की महिमा

(तर्ज : थाने लाखां क्रोडां स्वागत मारा प्यारा)

तपस्या जीवन रो श्रृंगार, सारी दुनिया केवे
तप मे भारी चमत्कार, सारी दुनिया केवे ॥ टेर ॥

हिम्मत री है किम्मत भारी,
हिम्मत री है महिमा न्यारी,
तपस्या हिम्मत रो आधार ॥ १ ॥

वीर पुरुष ही तपस्या करसी,
जनम-जनम रा पातक झडसी,
सारो हिम्मत रो व्यापार ... ॥ २ ॥

तप करने से कुल चमकेला,
तप रे आगे देव झुकेला,
तप मे शक्ति है अपार... ॥ ३ ॥

तप दीपक री ज्योति निराली,
अन्तर तम ने हरने वालो,
तपस्या इच्छित फल दातार .. ॥ ४ ॥

तप गगा मे सगला न्हावो,
मुनि कन्हैया मोद मनावो,
होसी विरज पुरम रो उद्धार. . ॥ ५ ॥

卐

तप की महिमा

(तर्ज : हिन्द भूमि के हम सन्तान)

देखो रे शासन की शान, तपस्या के व्रत का उत्थान,
वडे-वडे तप करते उनकी, जय वोलो गुणवान,
जय वोलो गुणवान, जय वोलो गुणवान ॥ टेर ॥

अगनी से कंचन दमके, ज्यू तप से आत्मा चमके,
जले वासना महा काली, मिटे विकार मुड मन के,
पूर्व पाप तप नाश करे फिर, भाग्य वने वलवान,
भाग्य वने वलवान, भाग्य वने वलवान ॥ १ ॥

पर बल काम नहीं आता, बडा शूरमा झुक जाता,
आत्म बली तप कर पाता, झूजे खुद से सो दाता,
धन्नाजी के पथ पर चलते, तपस्वि चतुर सुजान,
तपस्वि चतुर सुजान, तपस्वि चतुर सुजान ॥ २ ॥

काया मंडी जीवन की, करो खरीदी निज मन की,
चिन्ता आगे चेतन की, लेना वस्तु बहुगुण की,
भोग जहर है तप चिन्तामणि, इस पर देना ध्यान,
इस पर देना ध्यान, इस पर देना ध्यान ॥ ३ ॥

नमो-नमो ये तप धारी, आगम मे महिमा भारी,
तुम हित ये शोभा सारी, सींचि प्रभु की फुलवारी,
प्यारे मीठे जिन भक्तों को, तपस्वि सदा महान,
तपस्वि सदा महान, तपस्वि सदा महान ॥ ४ ॥

नवकार मन्त्र का स्तवन
(तर्ज : होंठों को छूलो तुम)

है सार भरा प्याला, अमिरस का पान करो'
नवकार का ले शरणा, भव-भव के पाप हरो ॥ टेर ॥
जपलो अरिहन्ताणं, रटलो श्री सिद्धाणं ।
भजलो आयरियाण, जपलो उवज्झायाण ।
नमो लोए सव्व साहूण, नैय्या भव से पार करो ।
(नवकार . . . .)

धरलो रे मन मे ध्यान, यही मत्र है एक महान।
सदा करलो इसका पान, मिल जायेगा मोक्ष महान।
अति आनन्दकारी है, शुद्ध भाव से सुमिरण करो।
(नवकार ....)

विपदा और दुविधा में, इसे जपलो बारम्बार,
महामन्त्र की महिमा अपार, सदा होवे मगलाचार,
संग "बालिका मण्डल" गा, शुद्ध मन से गान करो,
(नवकार ....)

पर्युषण का स्तवन
(तर्ज : दिल के अरमां)

सबसे न्यारा ये पर्युषण आ गया–२ ....
मन तेरा धोने का अवसर आ गया, सबसे .... ।। टेर ।।

पावन पर्व आठ दिनों का आ गया–२ ....
धर्म का सदेश लेकर आ गया–२ .... मन तेरा .. ।। १ ।।

काया नश्वर है तेरी क्यो भूल गया–२ ....
त्याग तप करने का अवसर आ गया–२.. मन तेरा ।।२।।

लाख चौरासी जीव खमालो प्रेम से–२ ..
आत्मिक आनद "भारती" वो ही पा गया–२ ..
मन तेरा .... ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल के अरमां....)

मन की आशा पूरी करने करो दया—२ ....
हे प्रभु ! चरणो की शरणे आ गया ! मन की.... ॥ टेर ॥
जिन्दगी भर दास बनकर रहूँ तेरा—२ ....
ध्याने को दरपे तुम्हारे आ गया — २ ....
हे प्रभु .... ॥ १ ॥

जाए कलिमल—पाप आतम हो पावन—२ ....
भव बधन ये मेट दो मैं आ गया — २ ....
हे प्रभु .... ॥ २ ॥

मन से तो प्रभुजी फेरूँ, माला सदा—२ ....
पार कर दो नाव मेरी मैं आ गया—२ ....
हे प्रभु .... ॥ ३ ॥

अन्तर मन में आन विराजो हे प्रभु—२ ....
" शान्ति मण्डल " गीत गाने आ गया—२ ....
हे प्रभु .... ॥ ४ ॥

(तर्ज : कहीं दीप जले कहीं दिल....)

मेरी नाव पडी मझधार, चले नैया डग—मग पुरवैया....
भव से लगा दो पार, मेरी नाव पडी .... ॥ टेर ॥

प्रभु वीर तुझे मेरा प्रणाम है, मेरे मन मे वसा तेरा नाम है,
मेरे दिल की है ये पुकार, चले नैया डग-मग पुरवैया ॥१॥

मोह-लोभ-लुटेरों का जाल है, ये दुनिया तो एक जजाल है,
संसार है ये असार . . . . ॥ २ ॥

दुश्मन अष्ठ कर्म ये जानके, आया शरणे तुझे पहचान के,
कर दो मेरा उद्धार . . . . ॥ ३ ॥

मेरे जिन्दगानी प्रभु तेरे हाथ है, प्रभु तूहो मेरा एक नाथ है,
अव तो तेरा आधार . . . . ॥ ४ ॥

मै दुर्वल और वडा दीन हूँ, पर चरणो मे प्रभु तेरे लीन हूँ,
चाहूँ मेहर तेरी . . . . ॥ ५ ॥

श्री कृष्णजी नी सज्झाया

नगरी द्वारिकामां नेम जिनेश्वर, विचरतां तिहां आव्या ।
कृष्ण नरेश्वर वधाई मुनी ने,
जीत निशान वजाव्या हो प्रभुजी,
नही जाऊ नरक नी गेह,
नही जाऊ, नही जाऊ, नही जाऊ प्रभुजी, (नही जाऊ ॥ १ ॥

अठारा सहस्र साधुजी ने विधि सु, वाद्या अधिक हरखे ।
पछे नेमीश्वर केरा रे वांधव,
ऊभा मुखडा निरखे ओ प्रभुजी ॥ २ ॥

नेमी कहे तुम भार निवारो, ॠण तणा दुःख रैय्या।
कृष्ण कहे मैं फरी-फरी वन्दु,
हर्ष धरी मन है ये ओ प्रभुजी ॥ ३ ॥

नेमि कहे ये टाल्या न टलसे, सौ वाते एक वात।
कृष्ण कहे मारा बाल ब्रह्मचारी,
नेमजिनेश्वर भ्रात ओ प्रभुजी ॥ ४ ॥

मोटा राजा नी चाकरी करता, रंक सेवक वहु रलसे।
सुर-तरू सरीखा अफल जासे त्यारे,
विष वेलडी किम फलसे ओ प्रभुजी ॥ ५ ॥

पेटज आव्यो रे भोरग वेटे, पुत्र कुपुत्रज जायो,
भलो भुडो पण यादव कुलनो,
तुम बाधव कहवायो ओ प्रभुजी ॥ ६ ॥

छप्पन करोड यादवां रो साहिबो, कृष्णजी नरके जासे,
नेम जिनेश्वर केरा रे बाधव,
जग मे अपजस थासे ओ प्रभुजी ॥ ७ ॥

शुद्ध समकित नी परीक्षा करी ने, बोल्या केवल ज्ञानी,
नेम जिनेश्वर दियो रे दिलासो,
खरो रुपैयो जाणो ओ प्रभुजी ॥ ८ ॥

नेमि कहे तुम चिन्ता ना करजो, तुम पदवी हम सरखी,
आवती चौवीसीमा होसो तीर्थंकर,
हरी पोते मन हरखी ओ प्रभुजी ॥ ९ ॥

यादव कुल उजवाल्या नेमीश्वर, समुद्र विजय कुल दीवो,
इन्द्र कहे शिवादेवीना नन्दन,
क्रोड दीवाली जीओ ओ प्रभुजी ।। १० ।।

श्री आदेश्वर भगवान का स्तवन

(तर्ज : पनडी मूंडे बोल)

बोल-बोल आदेश्वर वाला, काई थारी मरजी रे ।
म्हामु मूण्डे बोल ।। टेर ।।

माता मरुदेवी वाट जोवता, इतने आई वधाई रे ।
आज रिखभजी उतर्या बाग मे, मुन हरषाई रे ।। १ ।।

नहाय धोयने गज असवारी, करी मरुदेवी माता रे ।
जाय बाग में नन्दन निरख्या, पायी साता रे ।। २ ।।

राज्य छोडने निकल्यो रिखभा, आ लीला अद्भूती रे ।
चामर छत्र ने और सिहासन, मोहनी मूर्ती रे ।। ३ ।।

दिन भर बैठी वाट जोवती, कद मारो ऋषभो आसी रे ।
कहती भरत ने आदिनाथ की, खबरा लावे रे ।। ४ ।।

वार तिवार भोजन भाणे, ताता केई आना रे ।
थारी याद मे भोजन न भाता, ठंडा हो जाना रे ।। ५ ।।

किसा देश मे गयो रे वालेश्वर, तुझ बिन दनिना सूनी रे,
वात कहो दिल खोल लान्जो, क्यू बनिया मुनि रे ।। ६ ।।

रय्या मजा मे है सुख–साता, खूब किया दिल चाया रे,
अब तो बोल आदेश्वर म्हामु, कल्पे काया रे ।। ७ ।।

खैर हुई सो हो गई बाला, बात भली नही कीनी रे,
गया पीछे कागद नही दोनों, म्हारी खबर न लीनी रे ।।८।।

ओलम्भा मे देऊ कठा लग, पाछो क्यों नही बोले रे,
दुःख जननी को देख आदेश्वर, हिवडे तोले रे ।। ९ ।।

अनित्य भावना भायी माता, नित आतम ने तारी रे,
केवल पामी मोक्ष सिधाया, ज्याने वन्दना हमारी रे ।।१०

मुक्ति का दरवाजा खोल्या, मोरादेवी माता रे,
काल असख्या रह्या उघाडा, जम्बु जग गया जाता रे ।।१

साल बोहत्तर तीर्थ ओसिया, 'गयवर' प्रभु गुण गाया रे,
मूरति मोहन प्रथम जिनंद की, प्रणमु पाया रे ।। ११

भीलनी

(तर्ज : आ बावोसा री लाडली)

दोहा– नैना सुरमो सारियो, माथे तिलक लगाय ।
शिव शकर बैठे कैलास में, भीलनी छलने जाय ।

卐

आ रिम–झिम करती भीलणी, कटीने चाली रे ।
भोले बैठे कैलास मे, शिव शकर बैठे कैलास मे
वटी ने चाली रे ।। टेर ।।

भोले वैठे जमा के गोले, वैठे थे हरी ध्यान मे,
रिम-झिम, रिम-झिम, पायल की झणकार पडी थी कान मे,
रूप देखकर दग भयो, सुद–वुध खो डाली रे ॥ १ ॥

कहे सदा शिव सुनो भीलणी, आवोनी पास हमारे,
इस तन-धन की बनो मालकिन, बन गयो दास तुम्हारे,
कोई वात से डर मत थारो, मै रखवालो रे . . . . ॥ २ ॥

कहे भीलणी सुनो सदा शिव, भवर भील मारा घर मे,
वाने मार थे माने ले जाओ, हसी होवे घर–घर मे,
वेठा हरी का भजन करे, शिव दे दे ताली रे . . . . ॥ ३ ॥

कहे सदा शिव सुनो भीलणी, तू न डर थारा मन मे,
जटा मुकुट मे थाने छिपाऊ, मालुम पड़सी कीने,
कोई वात से डर मत थारो, मै रखवाली रे . . . . ॥ ४ ॥

थाका तो घर मे गौर पार्वती, जटा मे गंगा वेवे,
अपना हक वे छोड सदा शिव, म्हाने क्या रेवण देवे,
नित की होत लडाई सदा शिव, दे दे ताली रे . . . ॥ ५ ॥

गौरा पार्वती ने पीयर भेजू, सुणो भीलणी राणी,
गगा तो थारी करे चाकरी, तू घर की पटराणी,
तीन लोक की थने बनाय दू, मै पटरानी रे . . . . ॥ ६ ॥

वैल चढू तो डरूँ सदाशिव, सिह देख भव लागे,
पाली तो मै कदियन चालू, साची कहूँ थाने आगे,
बोले शिवजी आवो वैठो, पीठ हमारी रे . . . . ॥ ७ ॥

इतनो सब कुछ देख भीलणी, माया जो अपनी हटाई,
सामे ऊभी हसे गोरजा, शंकर गये शरमाई,
मोची बनकर माने छळीयो, अब थाकी वारी रे . . . ॥ ८ ॥

भीलणी बनकर शंकर छलियो, भोला नाच नचायो,
हे जगदबे तेरी माया का, पार कोई नही पायो,
कहे "माधव सिह" शिव शक्ति, तू म्हारी रखवाली रे ॥९॥

मीरा का स्तवन
(तर्ज : सारी–सारी रात)

आवो मन मोहन मीरा, मेडतनि बुलावे ।
मीरा बुलावे ने, दासी बुलावे . . . . आवो ॥ टेर ॥

बाबोसा मायड म्हाने लाड लडावे,
राम जाने राणा संग क्यों परणायो,
प्रभजी सु प्रीति लागी, राणो दाय न आवे रे ॥ १ ॥

तुलसा की माला फेरूँ, सेवा शालिग्राम की,
जप–तप–छोडो मीरा, धुनि घनश्याम की,
बगवा उतारीं मीरा, राणो शरमावे रे . . . . ॥ २ ॥

पत्थर को कांई पूजे, यू कहे राणो,
ठाकुर ने जिमावो जदी, साची प्रीति जानू,
कुल खपावे कुल ने दाग लगावे रे . . . . ॥ ३ ॥

दूध कठोरो भरी, मीरा वाई लायी,
पिवो मारा भोला ठाकुर, भक्तो की दवाई,
दासी उदासी मीरा, आंसू ढलकावे रे ..... ॥ ४ ॥

मीरा की पुकार सुनी, मोटो धनी आयो,
दूध कठोरो भरियो सारो घटकायो,
मीरा की प्रतिज्ञा राखी, राणो शरमावे रे... ॥ ५ ॥

अमर सुहागन भागन, राठोड्या की जाई,
पीर सासरिया ने त्यागो मीरा वाई,
मीरा की ओ लडियों को मधुसिहजी गावे रे.. ॥ ६ ॥

आचार्य श्री जी की स्तुति

(तर्ज : वीर प्रभु ने महावीर प्रभु ने)

आचार्य श्री ने, आचार्य श्री ने, कैसा है प्राक्रम दिखाया,
सुनो रे भाई ॥ टेर ॥

ग्राम–नगर–पुर–विचरन करते, कुन्नूर शहर पधारे ॥ १ ॥
वाल ब्रह्मचारी, घोर तपस्वी, उग्र विहार करके आये ॥२॥
भाग्योदय है हम सभी का, दर्शन कर सुख पाये ॥ ३ ॥
शिष्य मण्डल है सग आपके, सरल स्वभावी आज्ञाकारी
॥ ४ ॥

शिष्य मण्डल मे शशि जिम शोभो, ज्ञान मे सूर्य समान ॥ ५ ॥

यथा नाम तथा गुण आपके, महा यशस्वी, कीर्ति धारी ॥ ६ ॥

स्वागत करते है, मुनि मण्डल का,
शीश झुकाकर वारम्वार ॥ ७ ॥

तपस्या का स्तवन

(तर्ज : सौ साल पहले हमें तुमसे प्यार था)

अनादि से दुनिया मे, तप ही महान था,
आज भी है, और कल भी रहेगा ॥ टेर ॥

तप ऐसी शक्ति है, प्रभा हो प्रभा मुख पे निखर जाती है,
यह काम है शूरो का, हिम्मत कायर की बिखर जाती,
श्रमणो का जीवन तो तप पे कुरवान था, २ ॥ १ ॥

मन वश मे हो तप से, सदा ही सदा विषय हार जाता है,
लब्धि हाजर तप से, अगर सग क्षमा भाव आता है,
मुक्ति को जाने का तप एक यान था, २ ॥ २ ॥

सब धर्मो मे महिमा, कदापि कोई तप विन धर्म न दूजा,
अज्ञानी भी तप से, दिव्य सुख पावे जग दुख भूला,
प्रभु के तो भक्तों का तपस्या मे ध्यान था ॥ ३ ॥

धन्य हो धन्य तपस्वी, सदा ही सदा तप मे उन्नती पावे,
गुण गाण करो प्यारे, तपस्या हमे सरल हो जाये,
गुरणी सा का सूत्र गुण मे ध्यान था ।। ४ ।।

卐

गुरु-गुणगान

(तर्ज : जरा सामने तो आवो छलिए)

दान दाता गुरणीसा शीतल कँवरजी,
जिन धर्म के ये शृंगार है,
भूले भटके पथिक इन्सान का,
कर देते जीवन का सुधार है ।। टेर ।।

व्याख्यान सभा में जिन आगम का,
निर्मल झरना बहता है,
काम-क्रोध-मद-लोभ को काटो,
यही दुर्गति का कन्ता है,
जिसे विषय-कषाय का बुखार है,
उसका होता यहा उपचार है ।। १ ।।

सत्य-अहिसा दया धरम है, तप शरण जो गहता है,
ब्रह्मचर्य की चादर ओढो, शिव सुन्दर वो वरता है'
गीता भागवत का यही सार है
मानव करता तू क्यो इनकार है ।। २ ।।

लक्ष चौरासी भव-भव रुलते,
अति दुर्लभ नर-तन धरता हैं,
चूक न अवसर पुण्य कमा ले, खोने से ना पा सकता हैं,
नर-तन का तेरा अवतार है,
प्रभु सुमिरण से वेडा पार है ॥ ३ ॥

प्रवचन में नित्य प्रति आकर, मधुर वचन जो सुन पाता,
कुछ न कुछ तो ज्ञान ग्रहण कर, जीवन सफल वना जाता
चेतन की करता वह संभाल है,
गुरणीसा का वडा उपकार है ॥ ४ ॥

सहस्त्र दोय तेईस मे गुरणीसा,
रायचूर मे चौमासा ठाया था,
जैनी व जैनेतर हरषे, करुणा कर तुमसा पाया था,
गुण भूषित गुण भण्डार है,
"अभिनन्दन" वन्दन करती हजार है ॥ ५ ॥

भाई-बहन का संवाद

((तर्ज : रात भर का है महिमां अंधेरा)

भाई - सदमा दिल पर लगा आज भारी,
सर पर गम की चली है कटारी।
दुनिया तुझको नही क्यो सुहाई ?
दीक्षा लेने की क्यों मन मे आई?

बोलो-बोलो हे मोहन वाला बाई ।
पूछता तुझसे है तेरा भाई ॥ १ ॥

बहन – दुनिया फानी है में हूँ अनाथी,
दुःख में अपना नही कोई साथी ।
रोग जो इक लगा है अनादि,
आज इसकी दवा चाहूं भाई ।
दारु इसका है सयम बताया,
शफा देगा गुरुणी का साया ॥ २ ॥

भाई – कॅवर सेन पिता उपकारी,
मिश्री बाई जो माता तुम्हारी ।
हाजिर नन्दीश्वर-चन्द्र दोनो भाई,
दुःख बताओ करेगे दवाई ।
मानो-मानो न कष्ट उठाओ,
सुन्दर दुनिया के मौज उठावो ॥ ३ ॥

बहन – ऐनक मोह की अब तो उतारा,
दीखते भाई सब ससारी ।
रोगी काया नही ये हमारी,
कष्ट देती है कर्म बिमारी ।
भैया अब तो है सयम कमाना,
जीवन अपना सफल है बनाना ॥ ४ ॥

भाई – राजसी एक महल मै बना दू,
गहने-कपडे कहो जो सिला दू ।

नौकर–चाकर कहो जो बुला दूं,
इच्छा गर हो तो कालेज बिठा दू।
व्यर्थ जाए न दुर्लभ जवानी,
कर लो शादी बनो घर की रानी ।। ५ ।।

बहन -- सुख स्वर्गो मे देखे है चोखे,
भोग बन के चक्रवर्ती भोगे।
भौतिक सुख मे अनन्त दुःख होते,
काटे है फूलों के सग होते।
अब तो सयम की लेकर सवारी,
मोक्ष नगर की करनी तैयारी ।। ६ ।।

भाई – नगे पाव से कैसे चलोगी,
सर्दी गर्मी को कैसे सहोगी।
भूखी प्यासी भी अक्सर रहोगी,
लोच बालो की कैसी करोगी ?
धार खाडे की है जिन फकीरी,
बहन ! तू ने तो देखी अमीरी ।। ७ ।।

बहन – बन के तिर्यच नगे रहे है,
डडे इस तन पे लाखों पडे है।
नरकों मे दु:ख अनन्त रहे है,
टुकडे–हो–हो के फिर से जुडे है।
ज्ञान दुःख को है जड मिटाता,
सूर्य अधकार को है भगाता ।। ८ ।।

भाई – राह तेरी बडी है भयानक,

गिरते इसमे है योद्धा अचानक ।

आई ज्यों ही जरा सी गिरावट,

आ दवाती गला है हलाकट ।

राह तेरी बडी है कंटीली,

बहन ! तू तो मगर है अकेली ॥ ९ ॥

बहन – मोहन देवी सती तत्त्वज्ञाता,

केशर देवी को नत यह माथा,

कौशल्या देवी जी है व्याख्याता,

विमल सरोज का संग है भाता ।

रौशनी की स्तम्भ पाचो ज्ञानी,

होने देगी कदापि न हानि ॥ १० ॥

भाई – जीती तुम आज हम सव है हारे,

दृढ इरादे पे जाएं वलिहारे ।

नौका तेरी लगे हं किनारे,

शुभ मनोरथ सफल हो तुम्हारे ।

जिन धर्म की 'चमन' जय वुलाओ,

ऐसी ललनाओ को सिर झुकाओ ॥ ११ ॥

(तर्ज : रेशमी सलवार)

तेरा कैसा हो कल्याण ? करनी काली है।
नही होगा भुगतान, हुण्डी जाली है ॥ टेर ॥

तू तन का काला धव्वा, धोता ले फौरन पानी,
तेरे मन पर कितने काले, धव्वों की पडी निशानी,
क्यों न निहाली है ? .... ॥ १ ॥

तेरा विगड रहा हैं इंजिन, गाडी किस तरह चलेगी,
दीपक में तेल खतम है, वत्ती किस तरह जलेगी,
बुझने वाली है .... ॥ २ ॥

तेरे अन्दर जान नही है, कैसे फिर देह चलेगी,
तेरी नैया फूट रही है, कैसे फिर पार लगेगी,
डूबने वाली है .... ॥ ३ ॥

जाली हुण्डी को जला दे, इस मन को शुद्ध बनाले,
धन ज्ञानामृत है हाजिर, क्यों मरता प्यास बुझाले,
सुगुरु गुणशाली है .... ॥ ४ ॥

सन्मति युग निर्माता

(तर्ज : जन-गण-मन अधिनायक)

शिवपुर पथ परिचायक जय हे,
सन्मति युग निर्माता ॥ टेर ॥

गंगा कल-कल स्वर में गागी, तव गुण गौरव गाथा।
सुर-नर-किन्नर तव पद युग मे, नित-नत करते माथा।
सव तेरे गुण गाते, सादर शीश झुकाते, हे सद्बुद्धि प्रदाता,
दुःख हारक, सुख दायक, जय हे, सन्मति युग निर्माता,
जय हे, जय हे, जय हे, जय-जय-जय-जय हे,
सन्मति युग निर्माता ॥ १ ॥

मंगल कारक, दया प्रचारक, खग-पशु उपकारी।
त्रिभुवन तारक, कर्म विदारक, सव जग तव आभारी।
जव तक रवि शशि तारे, तव तक गीत तुम्हारे,
विश्व रहेगा गाथा।
चिर सुख शान्ति विदायव जय हे,
जन्मति युग निर्माता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय-जय-जय-जय हे,
सन्मति युग निर्माता ॥ २ ॥

भातृ-भावना भुला परस्पर, लडते थे जो प्राणी।
उनके उर में प्रेम बसाती, तेरी मीठी वाणी।
सव में करुणा जागे, हिसा जग से भागे,
पाये मव सुख साता, हे दुर्जय दुःख दायक जय हे,
सन्मति युग निर्माता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय-जय जय-जय हे,
सन्मति युग निर्माता ॥ ३ ॥

(तर्ज : मेरे लिए जहान में....)

माता मेरी तू ही वता, शादी रचा के क्या करूँ ?
रहना नही सदा यहाँ, घरवा वसा के क्या करूँ ।। टेर ।।

भोली-भाली किशोरियां. सपनों के महल सज रही,
आशाएँ उनकी तोड कर, उनको रुला के क्या करूँ ॥ १ ॥

एक दिन भी मां मुझे नहीं, दुनियां के खेल खेलना,
सेहरा बधा के क्या करूँ, कगना वंधा के क्या करूँ ॥ २ ॥

मिट्टी के इस शरीर पर, श्रृंगार करके क्या करूँ,
कपडे पहन के क्या करूँ, भूषण सजा के क्या करूँ ॥ ३ ॥

जो टलने वाला रूप है, पिछले पहर की धूप है,
मुरझाने वाला फूल है, उस पर लुभा के क्या करूँ ॥ ४ ॥

दुनियां के झूठे ऐश में, दुनियां के झूठे प्यार में,
फस कर अमूल्य रत्न-सा, नर-तन गवां के क्या करूँ ॥५॥

केवल जहां प्रभु वसे, मेरी वह नगरी द्वार है,
रैन वसेरा है यहां, प्रभु को भुला के क्या करूँ ॥ ६ ॥

तपस्या नी मटकी

(तर्ज :

हे-हे-हे मारी तपस्या नी मटकी ।
हो-हो-हो मारी माखन नी मटकी ॥ टेर ॥

ले लो भैया–ले लो बहना, तपस्या नी मटकी,
हे ज्ञानी जना लेई जासे, तमे रया लटकी ॥ १ ॥

स्थानक ने द्वार हमें, व्याख्यान सुनवा गया था,
व्याख्यान में तपस्या ना, गुण वहुला गया था ॥ २ ॥

हे फूली वाई लेई लीदी, तपस्या नी मटकी,
फूलीवाई लेई गया, इन्दरा वाई रया लटकी ॥३॥

स्थानक ने द्वार हमे, प्रार्थना करवा गया था,
प्रार्थना मा तपस्या ना, गुण वहुला गया ॥ ४ ॥

पिस्तावाई लेई लीदी, तपस्या नी मटकी,
पिस्तावाई लेई गया, निर्मलाबाई रयाल्टकी ॥ ५ ॥

स्थानक ने द्वार हमे, चौपाई सुनवा गया था,
चौपाई मां तपस्या ना, गुण वहुला गया ॥ ६ ॥

ललितावाई लेई लीदी, तपस्या नी मटकी,
ललितावाई लेय गया, रतनाबाई रयाल्टकी ॥ ७ ॥

स्थानक ने द्वार हमे, पचखाण लेवा गया था,
पचखाण मे लीदी वेनो, अठाई पन्द्रह नी मटकी ॥ ८ ॥

मटकी लेईने तपसण, रिम–झिम चाली,
माही भरया तपस्या ना, माणक अनमोल ॥ ९ ॥

आगा रहो, आगा रहो, हुल जासी मटकी,
कर्मना वधन तूटया, खाली थई मटकी ॥ १० ॥

(तर्ज : मेरे लिए जहान में....)

माता मेरी तू ही वता, शादी रचा के क्या करूँ ?
रहना नही सदा यहाँ, घरवा बसा के क्या करूँ ।। टेर ।।

भोली-भाली किशोरियां. सपनों के महल सज रही,
आशाएँ उनकी तोड कर, उनको रुला के क्या करूँ ।। १ ।।

एक दिन भी मां मुझे नही, दुनियां के खेल खेलना,
सेहरा बधा के क्या करूँ, कंगना बधा के क्या करूँ ।। २ ।।

मिट्टी के इस शरीर पर, श्रृंगार करके क्या करूँ,
कपडे पहन के क्या करूँ, भूषण सजा के क्या करूँ ।। ३ ।।

जो टलने वाला रूप है, पिछले पहर की धूप है,
मुरझाने वाला फूल है, उस पर लुभा के क्या करूँ ।। ४ ।।

दुनियां के झूठे ऐश में, दुनियां के झूठे प्यार मे,
फस कर अमूल्य रत्न-सा, नर-तन गवां के क्या करूँ ।।५।।

केवल जहां प्रभु वसे, मेरी वह नगरी द्वार है,
रैन बसेरा है यहां, प्रभु को भुला के क्या करूँ ।। ६ ।।

तपस्या नी मटकीं

(तर्ज :

हे-हे-हे मारी तपस्या नी मटकी ।
हो-हो-हो मारी माखन नी मटकी ।। टेर ।।

ले लो भैया–ले लो बहना, तपस्या नी मटकी,
हे ज्ञानी जना लेई जासे, तमे रया लटकी ॥ १ ॥

स्थानक ने द्वार हमें, व्याख्यान सुनवा गया था,
व्याख्यान में तपस्या ना, गुण बहुला गया था ॥ २ ॥

हे फूली बाई लेई लीदी, तपस्या नी मटकी,
फूलीबाई लेई गया, इन्दरा बाई रया लटकी ॥३॥

स्थानक ने द्वार हमें, प्रार्थना करवा गया था,
प्रार्थना मां तपस्या ना, गुण बहुला गया ॥ ४ ॥

पिस्ताबाई लेई लीदी, तपस्या नी मटकी,
पिस्ताबाई लेई गया, निर्मलाबाई रयालटकी ॥ ५ ॥

स्थानक ने द्वार हमें, चौपाई सुनवा गया था,
चौपाई मां तपस्या ना, गुण बहुला गया ॥ ६ ॥

ललिताबाई लेई लीदी, तपस्या नी मटकी,
ललिताबाई लेय गया, रतनाबाई रयालटकी ॥ ७ ॥

स्थानक ने द्वार हमें, पचखाण लेवां गया था,
पचखाण मे लीदी बेनों, अठाई पन्द्रह नी मटकी ॥ ८ ॥

मटकी लेईने तपसण, रिम–झिम चाली,
माही भरया तपस्या ना, माखण अनमोल ॥ ९ ॥

आगा रहो, आगा रहो, ढुल जासी मटकी,
कर्मना बंधन तूटया, खाली थई मटकी ॥ १० ॥

मटकी लेइने तपसन, रिम–झिम चाले,
माखण तपस्वी खाय गया, तमे रया लटकी ॥११॥

बिनजारो

(तर्ज :

सुन्दर काया, छोड चलयो बिनजारो ।
बिनजारो, धूतारो, कामण गारो, इण देहडली
ने छोड चलयो बिनजारो ॥ टेर ॥

इण रे काया में प्रभुजी, नौ सो नाडियां ।
जिनरो स्वभाव न्यारो–न्यारो ॥ १ ॥

इण रे काया में प्रभुजी, सात समुदर ।
जिनरो है न्यारो–न्यारो ॥ २ ॥
बल गयो तेल ने बुझ गई बत्तियां,

कोई मिन्दर थयो रे अधेरो ॥ ३ ॥
पिस गया खंभा ने, डिग गयो मन्दिर,
कांई मिट्टि में मिल गयो गारो ॥ ४ ॥

विनन्ती

(तर्ज :

लागी कब से लगन, म्हाने दे दो दर्शन ।
गुरुणीसा मारा, धन्य-धन्य है जीवन तुम्हार ।। टेर ।।

ओघा हाथ में लेकर खडे हैं, अपनी काया से लडते रहे हैं,
पंच महाव्रत धार, किया धरम प्रचार, गुरणीसा मारा
।। धन्य.... ।। १ ।।

अज्ञानी ने तो ज्ञान सुनावे, सूती आत्माने तो जगावे ।
करे नौ लख जाप, देवे मंत्र नवकार, गुरणीसा मारा ।।२।।

छोटी-छोटी बातां में समझावे,
तप त्याग की महिमा बताते,
लेवे सबदिल में धार, देवे त्याग पचखाण,
गुरणीसा मारा ।। ३ ।।

विरंजिपुरम रा संघ आज आया, दर्शन करके आनंद पाया
समय-अनुसार, दीजो सेवा का लाभ,
गुरणीसा मारा ।। ४ ।।

मारी विनन्ती सुणजो गुरणीसा,
मारा विरजिपुरम पधारो मारासा,
छोटा बाल-गोपाल, लीजो माने संभाल,
गुरणीसा मारा ।। ५ ।।

आदेश्वर भगवान का स्तवन

(तर्ज : यशोमती मैया से बोले नंदलाल)

गलियों में घूम रहे, आदेश्वर प्यारे ऽ ऽ
जनता न समझे, मौन इशारे . . . . ॥ टेर ॥

बारह मास भए प्रभु, मौन पाले ऽ ऽ २,
घर–घर जाए किन्तु, भिक्षा ना ले,
कर्म खपाने प्रभु ओ ऽऽऽ, कर्म खपाने प्रभु
अभिग्रह धारे....प्रभु थे हमारे,...गलियों मे ॥ १ ॥

रूठ गये क्यों सन्यासी लोग कहे सारे ऽ ऽ २,
मूल्यवान वस्तु लाकर प्रभुजी पे वारे।
अकिचन श्रमण वे तो ऽऽऽ अकिंचन श्रमण वे तो
सभी से है न्यारे . . . . प्रभु थे हमारे . . . . .
(गलियों में . . . . ॥ २ ॥)

कुमार श्रेयासजी ने, स्वपन पाया ऽ ऽ २,
कल्पवृक्ष खुद ही चलके उन घर आया।
चिंतित देव देवी ओ ऽ ऽ ऽ चिंतित देव देवी,
दृश्य वो निहारे . . . . प्रभु थे हमारे . . . .
(गलियों मे . . . .॥ ३ ॥)

घट–शत–अष्ठ ले के, कृषि एक आया ऽ ऽ २,
इक्षु रस से पूरण है ये, भाव समझाया।
देख के कुमार बोले ओ ऽ ऽ ऽ, देख के कुमार बोले

प्रभु ये स्वीकारे . . . . प्रभु थे हमारे . . . .
(गलियों मे . . . . ॥ ४ ॥)

प्रासुक रस का प्रभु ने, पारणा किया ऽ ऽ २
बूंद भी गिरे न नीचे, ध्यान
अहो दान, अहो दान ओ ऽ ऽ ऽ अहो दानं अहो दानं,
देवता पुकारे . . . . . . प्रभु थे हमारे . . . .
(गलियो मे . . . . ॥ ५ ॥)

दिन था तृतीया का और धार थी अक्षय ऽ ऽ २,
आज तक, मनाएँ हम भी उसी दिन की जय–जय
'उज्जवल' तप 'प्रीति' ओ ऽ ऽ ऽ उज्जवल तप प्रीति
पार ही . . . . . . प्रभु थे हमारे . . . . . .
(गलियों मे . . . . ॥ ६ ॥)

卐
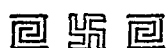
बलभद्रजी का स्तवन

(तर्ज :

मन मोयो रे तुगियापुर नगर सुहावनो रे ॥ टेर ॥
इण नगरी मे बाजा बाजिया रे ।
इण नगरी मे आया साध रे ॥ १ ॥

मास खमण मुनिवर पारणो रे ।
आया है बलभद्र मुनिराय रे ॥ २ ॥

इण नगरी में लेसा गोचरी रे ।
इण नगरी मे लेसां अहार रे ।। ३ ।।

कुवा रे काटे कामण साचरी रे ।
लारे रोवतडो नेनो वाल रे ।। ४ ।।

रूपे स्वरूपे मुनिवर फुटरा रे ।
दीसे छे इन्द्र तणो उनिहार रे ।। ५ ।।

चूकलया रे वदले वालक फासियो रे ।
दीनो छे कुवा मे उतार रे ।। ६ ।।

धिक–धक होय जो मारा रूप ने रे ।
होती इण बालुडा री घात रे ।। ७ ।।

इण नगरी मे नही लेसां गोचरी रे ।
इण नगरी मे नही लेसां आहार रे ।। ८ ।।

वन मे तो मुनिवर पाछा संचर्या रे,
बैठा छे तरूवर केरी छाँव रे ।। ९ ।।

वन मे तो भावे मृगलो भावना रे ।
आयो छे मुनिवर केरे पास रे ।। १० ।।

वन मे तो फाडे खाती लाकडा रे ।
खातण लावे उनने भात रे....।। ११ ।।

दोष बयालीस मुनिवर टालने रे ।
लीनो छे सुझतो आहार रे . . . . ।। १२ ।।

वन में तो बाज्यो वैरी वायरो रे ।
टूटी छे चम्पा केरी डाल रे . . . . ।। १३ ।।

खाती–खातण ने मुनिवर मृगलो रे ।
पहुँच्या है पचम देवलोक रे . . . , ।। १४ ।।

卐

८ तपस्या की स्तवन

मै काई करूँजी, म्हासु तपस्या नही होवे,
मै काई करूँजी . . . .   ।। टेर ।।

अठाई करण री मन मे आवे ।
वास करूँ तो म्हारो जीव घबरावे ।
सासु बोले जी पट–पट सुनकर ।
गट–गट मै तो चाय पिऊं जी ।
मै कांई करूँ जी, म्हासु तपस्या नही होवे
मै काई करूँजी . . . .   ।। १ ।।

आडा–दोडा म्हारा बाईसा बोले ।
दिन भर भाभी खावती रेवे ।
धरम करम में मारी चित्त जावे ।
मारो जीव तरसे, तरस.तरस म्हासुं तपस्या नही होवे,
मै काई करूँजी . . . .   ।। २ ।।

फूली वाई मास खमण पचखे,
गाव जीमण और जुलूस कढावे,
ओढना ऊपर ओढना मोलावे
साड्या ऊपर साड्या मोलावे ।
म्हारो जीव तरसे, तरस–तरस म्हासु तपस्या
नही होवे, मै काई करूँजी . . . . ॥ ३ ॥

सायबजी केवे तपस्या करले ।
हूस मौज थारी घणी कढाऊं ।
फोटु ऊपर फोटु खिचाऊं ।
म्हारो जीव तरसे, तरस-तरस म्हासु तपस्या नही होवे,
मै काई करूँजी . . . . ॥ ४ ॥

परम पूज्य म्हारा शीतल कँवरजी ।
छन्द सुनावे अभिनन्दन कँवरजी ।
मै तप करूँ जी, तपस्या ऊपर जरूर पधारो,
सभी जणा, मै तप करूँजी, म्हासुं तपस्या
नही होवे, मै कांई करूँजी ॥ ५ ॥

बाईसा घर का कचकडा रा प्याला ।
भुवासा घर की इस्टील री बाटकियां ।
चांदी रा प्याला री लेन दिरावे ।
म्हारा सुसराजी, मै कांई करूँजी,
म्हासु तपस्या नही होवे, मै कांई करूँजी . . . . ॥ ६ ॥

भुवा–भाणजा–काका–भतीजा,
बहन–बहनोई–मामा – मामी,
मासा–मासी–सखी–सहेल्या–
तपस्या ऊपर जरूर पधारो सभी जना,
म्हासु तपस्या नही होवे, मैं काई करूँजी ॥७॥

भुवा भावाँ रो कोड करावे ।
गाव जीमण री मिरवणी कढावे ।
साड्या ऊपर साड्या मोलावे ।
म्हारा जीव हरखे, हरख - हरख
म्हासु तपस्या नही होवे, मैं काई करूँजी ॥ ८ ॥

बालूडो

(तर्ज :

पाता पानी सांचरो ओ, मुनिश्वर बेरणेक जी ।
ओघा बेराऊ, पातरा ओ, मुनिश्वर मुमतियांक जी ॥ १ ॥

ओघा नही लेऊ पातरा ओ, श्रावकजी मुमतियां क जी ।
थारा वालूडा मे चित्त गयोकजी,
थारा नानडिया में चित्त गयोकजी ॥ २ ॥

सिरो वेराऊं, लापसी ओ, मुनिश्वर खाजा हैक जी ।
सीरो नही लेऊ, लापसी ओ, श्रावकजी खाजा नहीकजी ।

थारा बालूडा में चित्त गयोकजी,

थारा नानडिया मे चित्त गयोकजी ॥ ३ ॥

लाडू वेराऊँ, दोयटा ओ, मुनिश्वर घेवरियाकजी,
लाडू नही लेऊॅ, दोयटा ओ, श्रावकजी घेवर नही क जी,
थारा बालूडा मे चित्त गयोकजी,

थारा नानडिया में चित्त गयोकजी ॥ ४ ॥

दूध बेराऊ, दहिडो ओ, मुनिश्वर माखणियाकजी,
दूध नही लेऊ, दहिडो ओ, श्रावकजी माखण नही क जी,
थारा बालूडा में चित्त गयोकजी,

थारा नानडिया मे चित्त गयोकजी ॥ ५ ॥

ओ लो मुनिश्बर वालूडो ओ, मुनिश्वर कदेईक जी,
थे कदिमत आइजो मारा सेरमेकजी,

थे कदि मत आइजो मारा वारणेकजी ॥ ६ ॥

माता पानी लेने आविया ओ, पिया मारा बालूडोक जी,
ओ कटेयन दीखे खेलतोकजी,

उरा कटेयन वाजे झाझरियाक जी ॥ ७ ॥

विलापात थे काई करो ए, गोरी थारा बालूडोक जी,
ओ दादो सा रे रमण गयोकजी,

ओ दादी सा रे खेलन गयोकजी ॥ ८ ॥

दौडी–दौडी मे साचरि ओ, सुसराजी मारो वालूडोक जी,
सासुजी मारा बालूडोक जी, ओ कटेयन दीखे खेलतोकजी,

उरा कटेयन वाजे झांझरियाक जी . . . . ॥ ९ ॥

विलापात थे कांई करो ए, बावड थारो बालूडोक जी,
ओ बावोसा रे रमण गयोक जी,
ओ बडी मा रे खेलन गयोकजी ॥ १० ॥

दौडी-दौडी मैं सांचरी ओ, जेठोसा मारो वालूडोक जी,
भाभी सा मारो बालूडोकजी, ओ कटेयन दीखे खेलतोकजी,
उरा कटेयन वाजे झाझरियाकजी ॥ ११ ॥

विलापात थे काई करो ए, बावड थारो बालूडोक जी,
ओ काको सा रे रमण गयोक जी,
ओ काकी सा रे खेलन गयोक जी ॥ १२ ॥

दौडी-दौडी मे साचरी ओ, देवर सा मारो वालूडोक जी,
देवराणी मारो बालूडोक जी, ओ कटेयन दीखे खेलतोकजी
उरा कटेयन बाजे झाझरियाक जी . . . . ॥ १३ ॥

विलापात थे काई करो ए, भावज थारो बालूडोकजी,
भाभी सा थारो बालूडोकजी,
ओ भुरो सा रे रमण गयोक जी,
ओ भुवा सा रे खेलन गयोकजी . . . . ॥ १४ ॥

दौडी-दौडी मे साचरी ओ, ननदोई सा मारो वालूडोकजी
वाईसा मारो बालूडोक जी, ओ कटेयन दीखे खेलतोकजी.
उरा कटेयण बाजे झांझरिक जी ॥ १५ ॥

विलापात थे काई करो ए, शलायलीजी थारो वालूडोकजी
भावज थारो वालूडोकजी,
ओ नानो सा रे रमण गयोकजी,
ओ नानी सा रे खेलन गथोक जी .... ॥ १६ ॥

दौडी–दौडी मै साचरी ओ, वाबो सा मारो वालूडोकजी,
माताजी मारो वालूडोकजी, ओ कटेयन दीसे खेलतोकजी,
उरा कटेयन वाझे झांझरियाकझी ... ॥ १७ ॥

विलापात थे कांई करो ए, दीवड थारो वालूडोकजी,
ओ मामो सा रे रमण गयोकजी,
ओ मामी सा रे खेलन गयोकजी ॥ १८ ॥

दौडी–दौडी मै सांचरी ओ, वीरा–मारो बालूडोकजी,
भुजैसा मारो वालूडोकजी, ओ कटेयन दीसे खेलतोकजी,
उरा कटेयन बाझे झाझरियाक जी ॥ १९ ॥

विलापात थे काई करो ए, बेनड थारो वालूडोक जी,
बाईसा थारो वालूडोकजी, ओ मासो सा रे रमण गयोकजी
ओ मासी सा रे खेलन गयोकजी ॥ २० ॥

दौडी–दौडी मै साचरी ओ, बेहनोइसा मारो बालूडोकजी,
बेनड मारो वालूडोकजी, ओ कटेयन दीसे खेलतोकजी,
उरा कटेयन बाझे झाझरियाकजी ॥ २१ ॥

विलापात थे कांई करो ए, सालीजी थारो वालूडोकजी,
वेनड थारो वालूडोकझी, ओ पाडोसन रे ममण गयोकजी,
ओ पडोसन रे खेलन गयोकजी ॥ २२ ॥

दौडी–दौडी मे सांचरी ओ, पाडोसन मारो बालूडोकजी,
ओ कटेयण दीसे खेलतोकजी,
उए कटेयण बाजे झाझरियांकजी ॥२३॥

विलापात थे काई करो ए पाडीसन थारो बालूडोकजी,
ओ मेला मांये रम रयोकजी
ओ मेलां मांये खेल रयोकजी ॥२४॥

दौडी–दौडी मे सांचरी ओ, पियाजी मारो बालूडोकजी,
ओ कटेयण दीसे खेलतोकजी,
उए कटेयण बाजे झाझरियांकजी ॥२५॥

विलापात थे कांई करे ए, गोरीजी थारो बालूडोकजी,
ओ साधा ने बेराबियोकजी,
ओ मुनीश्वर ने बेराबियोकजी ॥२६॥

रतन कचोल्यां जीमतो ओ, पिया मारो बालूडोकजी,
ओ पातरिये किम जीमसीकजी ॥२७॥

मखमल–मलमल–पेरतो ओ, पिया मारो बालूडोकजी,
ओ खादी कीकर पेरसीक जी ॥२८॥

उजला कपडा पेरतो ओ, पिया मारो बालूडोकजी,
ओ मेला कीकर पेरसीकजी ॥२९॥

हिगुलु ढोल्यो पोढतो ओ, पिया मारो बालूडोकजी,
ओ धरती कीकर पोढसीकजी ॥३०॥

मोटर-गाडी-घूमतो ओ, पिया मारो वालूडोकजी,
ओ पेदल कीकर चालसीकजी,
ओ पेंडो कीकर करसीकजी ।।३१।।

卐

(तर्ज : यदि भला किसी का कर न सको तो)

जीवन को मैंने सौप दिया, भगवान तुम्हारे हाथों मे ।
उत्थान–पतन अव मेरा है, सरकार तुम्हारे हाथों में ।।टेर।।
हम तुमको कभी नही भजते हे,
तुम हमको कभी नही तजते हो ।
इसी लिए दयालु ओ प्रभुवर, करुणा-सिन्धु कहलाते हो ।
अपकार हमारे हाथों में, उपकार तुम्हारे हाथों में।। जीवन ।।
।। १ ।।

हम मे तुममें है भेद यही, हम नर है, तुम नारायण हो ।
हम पश्चिम मे,तुम पूरब मे हम पामर है, तुम परमातम हो।
हम है ससार के हाथो मे, ससार तुम्हारे हाथो मे।।जीवन।।
।। २ ।।

मेरे सब गुण दोष समर्पित हो, किरतार तुम्हारे हाथों मे।
अर्पण कर दूँ दुनियाँ भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथो में।
मेरी जीत तुम्हारे हाथो मे, मेरी हार तुम्हारे हाथों मे।।जीवन।।
।। ३ ।।

जीवन नैया को तोड दिया, ये आंधो और तूफानों ने।
अव नैया मेरी डुब चली, पतवार तुम्हारे हाथो मे
मेरी लाज तुम्हारे हाथों मै द्दलाज तुम्हारे हाथों में।।जीवन।।
।।४।।

卐

।। गजमुखमाल ।।

(देशी- ख्याल)

वरजा नही रेवे, दीक्षा लेसी ओ गजसुख-
माल जी ।।टेर।।

दोय लाख रा ओधा- पात्रा, एक लाख और नाई।
किसन महाराजा आज्ञा देवे, भण्डारी के ताई हों ।।१।।
नहाय - धोयने शीघ्र कंवरजी, बैठा शिविका मांय।
मध्य वाजारा चली सवारी, नन्दन वन माय जी ।।२।।
मात - तान और भ्रात साथ सव, होते अधिक उदास।
जवर प्रेम का पास जगत मे, आये प्रभु के पास जी ।।३।।
हाथ जोड ने केवे देव की, सुनो नेम भगवान।
लीजे कालजा री कोर हमारी, ये नन्दन गुणवानजी ।।४।।
रोती - रोती कहे देव की, मने रोवाणी जाया।
दूसरी माता ने मती रोवायजे, सफल करो निज कायजी।।५।।
देकर शिक्षा देवकी मता, अयी आप घर द्वार।
गुरु प्रसादे चैन मुनी कहे, धन्य - गजसुखमाल जी ।।६।।

(तर्ज : पर्वतो के पेडो पर)

रायचुर पधारो दयाल, निवेदन हमारा है
आवाजे है आत्मा की भक्तिने पुकारा है ।।टेर।।
अब तक तरसाया, बहुत परीक्षा ली
अब मत देर करो, धैर्य का किनारा है ।।रान।।
भूले नही पल भर भी, रूक जब ईधर किया
पथ मे बिछी है पलके, इतजार तुम्हारा है...।।२।।
जन - जन तरस रहे, चरण हो नगरी में
उमगे है घट - घट की, स्वीकृती ही चारा है।।३।।
भाषा प्रभू मुखकी, सुनना गुरू मुख से,
तरना भव दुख से, भक्तों ने विचारा है ।।४।।
भद्र हृदय गुरू का, हो न कठोर सको,
आप ही दया करदो, बोध भी तुम्हारा है ।।५।।
प्यारा है गुरू दर्शन, प्यारा है पद वन्दन
प्यारा है गुण चितन,मनोरथ भी प्यारा है ।।६।।

(तर्ज : तू मेरे प्यार का फूल है··· धूल का फूल)

अहो सघ सर्ल की आत्मा, गुरू महात्मा, समकित-
गुण भरदो. आये है बडी दूर से, मिथ्या तम हरदो।।टेर।।
दिल मे हमारे बहु, चाह जगी थी, बहु चाह जगी थी
तीर्थ चरण पर, लगन लगी थी, बहु लगन लगी थी ······

आज फली शूभ कामना, मन भावना, इस पुण्य क्षेत्र में,
सफल हुवा दिन आज का, जीवन की डगर मे .... अहो ....

समता की मुखडे पे, ज्योति भरी है मुनी, ज्योति भरी है
ममता माया तो तुम ही से डरी है तुम ही डरी है,
झरना हो मुनि तुम ज्ञान का, जिन शान का, मेरे पाप धूलोदो।
पिला के जल ज्ञान का, अज्ञान भुलादो ...... अहो ..

सौभागी वही जो नित, दर्शन पाता नित, दर्शन पाता
प्रवचन पुष्पों से, हृदय सजाता नित, हृदय सजाता
नमन किया है मुनि, चरण में, आये शरण में, रायचूर निवासी
मिलेजी नित वन्दना, उसके अभिलाषी .... अहो

(तर्ज:- मुझको अपने गले लगालो ये मेरे)

हमको आगम ज्ञान सुनाने, आवोगे कब ज्ञानी,
तरसत है जन रायचुर के, वर्षो से इन्तजार है ।।टेर।।

जव चौमासा आता है तो, स्थानक में तो जाते है।
इन्द्र विना की इन्द्र सभा हो, ऐसी झांकी पाते हैं।।
सूखा बगीचा माली विना यूं, मन मारे रह जाते हैं।
चातक का ज्यूं लक्ष गगन मे, घन कव वरसन आते है
घन कव वरसन आते है
वादल वन प्रवचन वरसाने, आओगे कव ज्ञानी,
तरसत है जन रायचूर के .... ।। १ ।।

करूणा के सागर कहलाते, निर्दय नही हो सकते हो।
भक्त - वत्सल कहलाने वाले, भक्तों की सुधि रखते हो
भक्त भद्र सिहासन पर भी हरजम, ज्ञान विवेक से जगते
हो। पचम आरे आ गये लेकिन, पूर्व काल से लगते हो
पूर्व काल से लगते हो .....
चरण कमल के चिन्ह वनाने, आवोगे कव ज्ञानी ...
तरसत है जन रायचुर के, ...॥ २ ॥

वीर प्रभु के मुख को भाषा, सूत्रागम मे मिलती है।
सुनते - सुनाते दिल मे बीठाते, व्यथि करम की टलती है
यह अभिलाषा रायचूर के, श्रोता के मन पलती है।
युग - युग से आहवान हमारा, इच्छा कव तक फलती है
इच्छा कव तक फलती है।
प्यारा जिनमत प्रेम जगाने, आवोगे कब ज्ञानी।
तरसत है जन रायचुर के '......॥ ३ ॥

(तर्ज : पर्वतों के पेडों पर....)

रायचुर के स्थानक मै, महात्मा का डेरा है।
ज्ञानियों का जमघट है, ज्ञान का वसेरा है ॥टेर॥

गदरी - गहरी - वाणी में, आगम ज्ञान झरे।
भवीजन पान करे, आस्था का घेरा है ॥१॥

चेतन पथ मे जुडे, समकित एक कडी।
प्रारम्भ सुख की घडी, शास्वता सवेरा है ॥ २ ॥

वह पल स्पर्श जिया, समकिति बहरों का,
तो ही भव सार्थक है, अन्यथा अधेरा है॥ ३ ॥

सरिता सतसग की, तट पहुचा प्यासा,
फिर भी प्रमाद किया चौरासी का फेरा है ॥ ४ ॥

प्यारा हो जग का, फल मीठा उसका,
बुरा न कर किसी का, यही मार्ग तेरा है ॥ ५ ॥

जैन का जहाज

(तर्ज : ले के पहला पहला प्यार)

बैठो - बैठो भैया आज, आया जैन का जहाज,
ड्राइवर इसके है पूज्य गुरुवर ॥ टेर ॥

टिकिट कलेक्टर इसके इन्द्र मुनिजी
इन्क्वारी करनी है तो कंवर मुनिजी,
सेवंत मुनि कहते साफ, टिकिट ले लो भैया आज ।
ड्राइवर इसके है पूज्य गुरुवर ॥ १ ॥

तप और संयम का सिक्का चलेगा ।
नोट और डालर से टिकट न मिलेगा

ये है जिनवर का जहाज, इसमें गुरूवर का है
साज। ड्राइवर इसके है पूज्य गुरूवर ॥२॥

सम्पत मुनिजी करते देरी न लगाओ।
प्रेम मुनिजी कहते रिजर्व कराओ।
रणजीत मुनिजी कहते साफ, टिकिट होगा नही, माफ,
ड्राइवर इसके हैं पूज्य गुरुवर ॥३॥

हवा और तूफान इसके आठ करम है।
इनसे बचानेवाला दयामय धरम है।
कर लो नियम व्रत धार, जिसके होगा बेडा पार,
ड्राइवर इसके है पूज्य गुरुवर ॥४॥

फिर मत कहना भैया, जहाज चलेगा।
मोक्ष नगर मे जाकर आखिर रुकेगा।
चुके तो फिर जानो आप, गुरुवर कहते सबको
साफ, ड्राईवर इके है पूज्य गुरुवर ॥५॥

अब के जहाज यहाँ पर आया।
महासतियो का भी बाग लगाया।
महेन्द्र मुनि भी है साथ, करो धर्म ध्यान की बात,
ड्राईवर इसके है पूज्य गुरुवर ॥६॥

卐
卐卐

चेतन पथ में चुडे. समकित एक कडी।
प्रारम्भ सुख की घडी, शास्वता सवेरा है ॥ २ ॥

वह पल स्पर्श जिया, समकिति वहारों का,
तो ही भव सार्थक है, अन्कथा अधेरा है ॥ ३ ॥

सरिता सतसंग की, तर पहुचा प्यासा
फिर भी प्रमाद किया चौरासी का फेरा है ॥ ४ ॥

प्यारा हो जग का, फल मीठा उसका।
बुरा न कर किसी का' यही मार्ग तेरा है ॥ ५ ॥

जैन का जहाज

(तर्ज : ले के पहला पहला प्यार)

बैठो - बैठो भैया आज, आया चैन का जहाज,
ड्राइवर इसके है पूज्य गुरूवर ॥ टेर ॥

टिकिट कलेक्टर इसके इन्द्र मुनिजी
इन्क्वारी करनी है तो कंवर मुनिजी,
सेवंत मुनि कहते साफ, टिकिट ले लो भैया आज।
ड्राइवर इसके है पूज्य गुरूवर ॥ १ ॥

तप और संयम का सिक्का चलेगा।
नोट और डालर से टिकट न मिलेगा

ये है जिनवर का जहाज, इसमें गुरूवर का है
साज । ड्राइवर इसके है पूज्य गुरूवर॥३॥

सम्पत मुनिजी कहते देरी न लगाओ ।
प्रेम मुनि कहते रिजर्व कराओ ।
रणजीत मुनिजी कहते साफ, टिकिट होगा नही, माफ,
ड्रइवर इसके है पूज्य गूरुवर ॥३॥

हवा और तूफान इसके आठ करम है ।
इनसे बचानेवाला दयानय धरम है ।
कर लो नियम व्रत धार, जिसके होगा बेडा पार,
ड्राइवर इसके है पूज्य गुरुवर ॥४॥

फिर मत कहना भैया' दहाज चलेगा ।
मोक्ष नगर मे जाकर काखिर रुकेगा ।
चूके तो फिर जानी आप, गुरुवर कहते लवको
साफ । ड्राईव्रर इके है पूज्य गुरुवर ॥५॥

अब के जहाज यह व्यापार आया ।
महासतियो का भी वाग लगाया ।
महेन्द्र मुयि भी है साथ, करो धर्म ध्यान की बात,
ड्रईव्रर इसके है पुज्य गॅरुवर ॥६॥

卐

दौडी–दौडी में सांचरी ओ, पाडोसन मारो बालूडोकजी,
ओ कटेयण दीसे खेलतोकजी,
उए कटेयण वाजे झांझरियांकजी ॥२३॥

विलापात थे कांई करो ए पाडीसन थारो बालूडोकजी,
ओ मेलां मांये रम रयोकजी
ओ मेलां मांये खेल रयोकजी ॥२४॥

दौडी–दौडी में सांचरी ओ, पियाजी मारो बालूडोकजी,
ओ कटेयण दीसे खेलतोकजी,
उए कटेयण वाजे झांझरियांकजी ॥२५॥

विलापात थे कांई करे ए, गोरीजी थारो बालूडोकजी,
ओ साधा ने वेराबियोकजी,
ओ मुनीश्वर ने वेराबियोकजी ॥२६॥

रतन कचोल्यां जीमतो ओ, पिया मारो बालूडोकजी,
ओ पातरिये किम जीमसीकजी ॥२७॥

मखमल–मलमल–पेरतो ओ, पिया मारो बालूडोकजी,
ओ खादी कीकर पेरसीक जी ॥२८॥

उजला कपडा पेरतो ओ, पिया मारो बालूडोकजी,
ओ मेला कीकर पेरसीकजी ॥२९॥

हिगुलु ढोल्यो पोढतो ओ, पिया मारो बालूडोकजी,
ओ धरती कीकर पोढसीकजी ॥३०॥

मोटर-गाडी-घूमतो ओ, पिया मारो बालूडोकजी,
ओ पेदल कीकर चालसीकजी,
ओ पेंडो कीकर करसीकजी ।।३१।।

卐

(तर्ज : यदि भला किसी का कर न सको तो)

जीवन को मैंने सौप दिया, भगवान तुम्हारे हाथों मे ।
उत्थान–पतन अव मेरा है, सरकार तुम्हारे हाथों में ।।टेर।।
हम तुमको कभी नही भजते है,
तुम हमको कभी नहीं तजते हो ।
इसी लिए दयालु ओ प्रभुवर, करुणा-सिन्धु कहलाते हो ।
अपकार हमारे हाथों मे, उपकार तुम्हारे हाथों में।। जीवन ।।
।। १ ।।

हम मे तुममें है भेद यही, हम नर है, तुम नारायण हो ।
हम पश्चिम मे,तुम पूरब में हम पामर है, तुम परमातम हो।
हम है ससार के हाथो मे, ससार तुम्हारे हाथो मे।।जीवन।।
।। २ ।।

मेरे सब गुण दोष समर्पित हो, किरतार तुम्हारे हाथों में।
अर्पण कर दूँ दुनियाँ भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।
मेरी जीत तुम्हारे हाथों मे, मेरी हार तुम्हारे हाथों मे।।जीवन।।
।। ३ ।।

कपिला दासी मे जाणीए, राजग्रही नगरी माय रे,
भारी कर्मी अभव्य छे, दान कदि न देबाय रे ।। ४ ।।

उदायन नृप मुनिवरू, तेनौ घात करनार रे,
महा निर्दय क्रूर पापीयो, अभवि ते निरधार रे ।। ५ ।।

गजसुखमाल मुनि तणो, सोमिल सुसरो जाण रे
सिर अगारा नाखिया, अभवि पापी जान रे ।। ६ ।।

अगार मर्दन आचार्यजी, उत्तम पांच सौ चेला रे ।
शिष्य मुगितगामी रूडा, गुरू अभव्य मन मेला रे ।। ७ ।।

खंदकाचार्य नामे भला, जेना पाचसौ शिष्य रे
पालक पापी ये पीलिया, घाणीमा धरी रीसरे ।। ८ ।।

जैन धर्म द्वेषी घणो, नमुची नामे प्रधान रे ।
विष्णु कुमार मुनो इनने हणियो, अभवि अष्ठम जान रे ।। ९ ।।

अभवि आठ ये जाणीये, शास्त्र मे जेनो अधिकार रे,
विनय मुनि भावे वदे, गुरु कृपा उर धार रे ।। १० ।।

(तर्ज : चल उडजा रे पंछी ...)

अब जाते है गुरूजी की फिर होगा दर्शन पाना ।। टेर ।।
चौमासा मे मेघ वने थे, वचना मृत वरसाया ।
धर्म वृक्ष जो सूख रहा था, सीचन कर नरसाया ।

ज्ञान तपस्या फल फूलो से, सबका मन हर्षाया।
आज चले तुम छोड के गुरूवर, थानक हुआ वीराना ।। १ ।।

कहाँ है अब वे प्रवचन की झडियां, दर्शन को कहां जाये
गलत रूडिया कौन निकाले, मंगलिक कहां पे पाये।
हुआ अधीर नगर यह सारा, धैर्य कहा से लाये
सुख साता मे रहो सदा, पुनः याद हमारी लाना ।। २ ।।

भुले कैसे वे तप महोत्सव, दर्शन जन के मेले।
कौन बोध दे जिन पथ का अब, कौन वदना झेले।
सेवा की रही चाह अधुरी, यह दुःख मन को ठेले।
हमे भूल नही जाना, फिर सेवा का लाभ दिलाना ।। ३ ।।

पहले शान्ति सरोवर मे नहाया करो जी पहले शान्ति ।।टेर।।

शाति जैसा जाप न कोई,
चाहे माला पे माला फेराया करो जी पहले शान्ति ···।।१।।
शान्ति जैसा तप न कोई,
चाहे बेले पे तेला चढाया करो जी पहले शान्ति ···।।२।।
शान्ति जैसा दान न कोई,
चाहे बोरे पे बोरा लुटाया करो जी पहले शान्ति ···।।३।।
शान्ति जैसा ज्ञान न कोई,
चाहे पोथी पे पोथी रटाया करो जी पहले शान्ति ···।।४।।

जीवन नैया को तोड दिया, ये आंधो और तूफानों ने।
अब नैया मेरी डुब चली, पतवार तुम्हारे हाथो में
मेरी लाज तुम्हारे हाथों मै इलाज तुम्हारे हाथों मे॥जीवन॥
॥४॥

卐

॥ गजसुखमाल ॥

(देशी- ख्याल)

वरजा नही रेवे, दीक्षा लेसी ओ गजसुख-
माल जी ॥टेर॥

दोय लाख रा ओधा- पात्रा, एक लाख और नाई।
किसन महाराजा आज्ञा देवे, भण्डारी के ताई हो ॥१॥
नहाय - धोयने शीघ्र कंवरजी, बैठा शिविका मांय।
मध्य वाजारा चली सवारी, नन्दन वन माय जी ॥२॥
मात - तात और भ्रात साथ सब, होते अधिक उदास।
जबर प्रेम का पास जगत मे, आये प्रभु के पास जी ॥३॥
हाथ जोड ने केवे देव की, सुनो नेम भगवान।
लीजे कालजा री कोर हमारी, ये नन्दन गुणवानजी ॥४॥
रोती - रोती कहे देव की, मने रोवाणी जाया।
दूसरी माता ने मती रोवायजे, सफल करो निज कायजी॥५॥
देकर शिक्षा देवकी मता, अयी आप घर द्वार।
गुरु प्रसादे चैन मुनी कहे, धन्य - गजसुखमाल जी ॥६॥

करूणा के सागर कहलाते, निर्दय नही हो सकते हो।
भक्त - वत्सल कहलाने वाले, भक्तों की सुधि रखते हो
भक्त भद्र सिहासन पर भी हरजम, ज्ञान विवेक से जगते
हो। पचम आरे आ गये लेकिन, पूर्व काल से लगते हो
पूर्व काल से लगते हो .....
चरण कमल के चिन्ह वनाने, आवोगे कव ज्ञानी ...
तरसत है जन रायचुर के, ...॥ २ ॥

वीर प्रभु के मुख की भाषा, सुत्रागम मे मिलती है।
सुनते - सुनाते दिल में बीठाते, व्यथि करम की टलती है
यह अभिलाषा रायचूर के, श्रोता के मन पलती है।
युग - युग से आहवान हमारा, इच्छा कव तक फलती है
इच्छा कव तक फलती है।
प्यारा जिनमत प्रेम जगाने, आवोगे कव ज्ञानी।
तरसत है जन रायचुर के '.......॥ ३ ॥

(तर्ज : पर्वतों के पेडों पर....)

रायचुर के स्थानक मे, महात्मा का डेरा है।
ज्ञानियों का जमघट है, ज्ञान का बसेरा है ।।टेर॥

गदरी - गहरी - वाणी में, आगम ज्ञान झरे।
भवीजन पान करे, आस्था का घेरा है ॥१॥

चेतन पथ मे चुडे. समकित एक कडी ।
प्रारम्भ सुख की घड़ी, शास्वता सवेरा है ॥ २ ॥

वह पल स्पर्श जिया, समकिति वहारो का,
तो ही भव सार्थक है, अन्कथा अधेरा है ॥ ३ ॥

सरिता सतसग की, तर पहुचा प्यासा
फिर भी प्रमाद किया चौरासी का फेरा है ॥ ४ ॥

प्यारा हो जग का, फल मीठा उसका ।
बुरा न कर किसी का' यही मार्ग तेरा है ॥ ५ ॥

जैन का जहाज

(तर्ज : ले के पहला पहला प्यार)

बैठो - बैठो भैया आज, आया चैन का जहाज,
ड्राइवर इसके है पूज्य गुरुवर ॥ टेर ॥

टिकिट कलेक्टर इसके इन्द्र मुनिजी
इन्क्वारी करनी है तो कंवर मुनिजी,
मेवत मुनि कहते साफ, टिकिट ले लो भैया आज।
ड्राइवर इसके है पूज्य गुरुवर ॥ १ ॥

तप और संयम का सिक्का चलेगा ।
नोट और डालर से टिकट न मिलेगा

ये है जिनवर का जहाज, इसमें गुरूवर का है
साज। ड्राइवर इसके है पूज्य गुरूवर॥३॥

सम्पत मुनिजी कहते देरी न लगाओ।
प्रेम मुनि कहते रिजर्व कराओ।
रणजीत मुनिजी कहते साफ, टिकिट होगा नही, माफ,
ड्इवर इसके है पूज्य गूरुवर॥३॥

हवा और तूफान इसके आठ करम है।
इनसे बचानेवाला दयानय धरम है।
कर लो नियम व्रत धार, जिसके होगा बेडा पार,
ड्राइवर इसके है पूज्य गुरुवर॥४॥

फिर मत कहना भैया' दहाज चलेगा।
मोक्ष नगर मे जाकर काखिर रुकेगा।
चूके तो फिर जानी आप, गुरुवर कहते लवको
साफ। ड्राईवर इके है पूज्य गुरुवर॥५॥

अब के जहाज यह व्यापार आया।
महासतियों का भी बाग लगाया।
महेन्द्र मुयि भी है साथ, करो धर्म ध्यान की बात,
ड्रईवर इसके है पुज्य गॅरुवर॥६॥

卐

लाड प्यार तजकर माता रो, वहन भाणजी सज्ज जनां रो,
वन गया वैरागी सुखदाई मारा प्यारा गुरणीसा ।। २ ।।

साध्वी जीवन की पाकर शिक्षा,
सायर गुरणी पासे लेकर दीक्षा,
थारी प्रगट हुई पुण्याई मारा प्यारा गुरणीसा ।। ३ ।।

कष्ठ अनंता सहन करके, सयम पथ पर आगे वढ़के,
कर रहे जन-जन की भलाई, मारा प्यारा गुरणीसा ।।४।।

थे उजवाल्यो शहर वेगलोर, उजवाल्यो कुल माय वापारो
महिमा मुलकां-मुलकां छाई, मारा प्यारा गुरणीसा ।।५।।

धन्य-धन्य है चिन्तन थारो, धन्य-धन्य है साहस थारो,
थारी धन्य है दृढताई, मारा प्यारा गुरणीसा ।। ६ ।।

शिष्य साथ मे सेवाभावी, संतोषी और सरल स्वभावी,
अभिनन्दन वारम्वार, मारा प्यारा गुरणीसा ।। ७ ।।

वहुत दिनो मे थी अभिलाषा, आज हुई है पूरणआशा,
हुआ स्वप्न साकार, मारा प्यारा गुरणीसा ।। ८ ।।

है मगल शुभ भावना हमारी, खिलती रहे जीवन फुलवारी
पावो गरिमा सदा सवाई, मारा प्यारा गुरणीसा ।। ९ ।।

(तर्ज :- ये मेरे वतन के लोगों)

जिन धर्म के प्यारे लोगो, यह सुनलो अमर कहानी
हम भूल गये है जिनको, जरा याद करो कुर्बानी ।।टेर।।

वो सेठ सुदर्शन जिनको, रानी ने कलंक चढाया।
सूली पर चढकर उसने, महामंत्र का ध्यान लगाया।
सूली का बना सिंहासन, सब लोग हुए सिरनामी ॥१॥

बारह वर्ष सती अंजना को, प्रीतम से हुई जुदाई।
इक पल प्रीतम को पाया, तूफान की आंधी आयी
घर छोड जंगल में भटकी, है आज ओ अमर कहानी ॥२॥

विजय सेठ ओर विजय सेठानी, नई उमर थी नई जवानी,
ब्रह्मचर्य नियम दोनों का, कैसे बीते जिन्दगानी।
क्या प्रेम पति पत्नि का, देवों ने महिमा बखानी ॥३॥

राजा ने बलि चढाने, ब्राह्मण का लाल खरीदा।
वो अमरकंवर नन्हा सा, जल्लाद ने खाजरे खींचा
नवकार का ध्यान लगाते, वो धरती थर-थर कांपी ॥४॥

सत्यवादी हरिश्चंद राजा, इक पल में बने भिखारी,
मरघट मे बिक गया राजा, और बिक गई तारा रानी,
वो अटल रहे धर्म पर, फिर हो गई सब आसानी ॥५॥

इक राजा की दो बेटी, सुर-सुन्दर मैना प्यारी।
मैना पे क्रोध हो राजा, कुष्टी संग करदी शादी।
पति संग किया तप भारी, हुई निर्मल काया सुहानी ॥६॥

बाहुबल थे भरत के भाई, आपस मे की लडाई।
बाहुबल ने जीत लिया था, पर लाज भाई की आई।
तज वैभव बन गये योगी, वो वीर ये स्वाभिमानी ॥७॥

भारत मां तेरी धरती, है आज यह कितनी प्यारी।
महापुरुष हुए है जितने, है वन्दना सबकी हमारी
लक्ष्मी हरदम गुण, युवक मंडल सिरनामी ॥८॥

卐